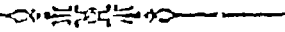


श्रीरामचन्द्रोविजयते तमाम् ।



प्रिय प्रेमी पाठक ! यह लीजिये, आज "श्रीरामचन्द्र भूषण" आपकी भेट करता हूँ । "हाथके कड़नको कहा भारसी" आप स्वयं सुविज्ञ है, इसके प्रत्येक रत्नकी बहुमूल्यता अवश्यही अनुमान करलेंगे । निवेदन केवल इतनाही मात्र है कि यदि किसीकारणवश स्वकण्ठमें विभूषित करनेका अवकाश न पाइये तो मन मन्दिरहीमे स्थान दान देकर मुझे कृतार्थ कीजियेगा ।

श्रीरामचंद्रभूषणकी विषयानुक्रमणिका ।



संख्या	विषया	पृष्ठाका	संख्या	विषया	पृष्ठाका
१	मंगलाचरण	१	१	तद्रूप रूपक अधिकोक्ति	१८
२	अलङ्कारस्वरूपवर्णन	३	२	तद्रूप रूपक हीनोक्ति	१९
३	अर्धालङ्कार तथा पूर्णापमालङ्कार वर्णन	११	३	तद्रूप रूपक समोक्ति	१७
४	तत्कोपमालङ्कारवर्णन	१५	४	अभेद रूपक अधिकोक्ति	१९
५	पूर्णापमा माला अलङ्कारवर्णन	२६	५	अभेद रूपक हीनोक्ति	१९
६	धर्मभिन्न मालोपमालङ्कारवर्णन	११	६	अभेद रूपक समोक्ति	१९
७	एक धर्ममालोपमालङ्कारवर्णन	७	७	अपर रूपक वर्णन	१८
८	अनेक धर्ममालोपमालङ्कार वर्णन	११	८	निरङ्ग रूपक वर्णन	१९
९	धर्म लुप्तोपमालङ्कार वर्णन	८	९	परम पारित रूपक वर्णन	१९
१-वाचक लुप्त		११	१४	परिणामालङ्कार वर्णन	१९
२-उपमेय लुप्त		११	१	समस्त विषयक रूपक	१९
३-उपमान लुप्त		११	१५	समस्त विषयक परिणामालङ्कार वर्णन	२०
४-धर्मवाचक लोप		९	१६	उल्लेखालङ्कार वर्णन	१९
५-उपमान उपमेय लुप्त		९		द्वितीय उल्लेख वर्णन	२१
६-उपमेय धर्म लोप		११	१७	सुमिरन भ्रम सन्देहालङ्कार वर्णन	२२
७-वाचक उपमेय लुप्त		१०	१८	भ्रमालङ्कार वर्णन	१९
८-उपमान धर्म लोप		११	१९	सन्देहालङ्कार वर्णन	२३
९-उपमान वाचक धर्मलुप्त		११	२०	शुद्धापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२५
१०-उपमेय वाचक धर्मलोप		११	२१	हेतु अपन्हुति अलङ्कार वर्णन	१९
११-वाचक उपमान उपमेयलोप		११	२२	परजस्तापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२६
१२-उपमान उपमेय धर्मलोप		११	२३	भ्रांत्यापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२७
१३-चारोंको लोप पूर्ण लुप्त		११	२४	छेकापन्हुति अलङ्कार वर्णन	१९
१४-उपमाके भेद वर्णन		११	२५	कैतवापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२८
१० अनन्वयालङ्कार वर्णन		११	२६	उत्प्रेक्षालङ्कार वर्णन	२९
११ उपमानोपमेय अलङ्कार वर्णन		१२		१-उक्तविषयावस्तोत्प्रेक्षा वर्णन	१९
१२ प्रतीप अलङ्कार वर्णन		१३		२-अनुक्तविषयावस्तोत्प्रेक्षा वर्णन	३१
द्वितीय प्रतीप		१४	२७	हेतोत्प्रेक्षा अलङ्कार वर्णन	३२
तृतीय प्रतीप		१५		१-सिद्धि विषयाहेतोत्प्रेक्षा	१९
चतुर्थ प्रतीप		११		२-असिद्धिविषयाहेतोत्प्रेक्षा	३३
पञ्चम प्रतीप		११		३-फलोत्प्रेक्षा	३४
१३ रूपक अलङ्कार वर्णन		११		४-असिद्धि विषया फलोत्प्रेक्षा	३५

संख्या	विषय	पृष्ठांक	संख्या	विषय	पृष्ठांक
२८	गम्भीरेश्वरानुहार वर्णन	३९	४७	परिकराङ्कुर अङ्ककार वर्णन	५६
२९	इषकप्रतिशयोक्ति अङ्कानुहार वर्णन	३७	४८	इमेवाङ्ककार वर्णन	
३	सापह्नादि शब्दादि अङ्कानुहार वर्णन	३८	१-अभिन्न पद वर्णन		
३१	मेघकाति शयोक्ति अङ्कानुहार वर्णन		२-मिन्नपद वर्णन	५५	
३२	सम्बन्धातिशयोक्ति अङ्कानुहार वर्णन	४	३-भौवमाधुर्य मजाह गुण सख मिठ इत्येव		
३३	अङ्कमातिशयोक्ति अङ्कानुहार वर्णन	४१	४-भोग मुण संकमित इमेव		
३४	अपकातिशयोक्ति अङ्कानुहार वर्णन	४२	५-माधुर्य मुण संकमित इमेव	५३	
३५	अल्पन्धातिशयोक्ति अङ्कानुहार वर्णन		६-पदार मुण संकमित इमेव		
३६	गुण्ययोगता अङ्कानुहार वर्णन	४३	४९	अपस्तुति प्रशंसा अङ्कानुहार वर्णन	५७
	द्वितीय वर्णन	४४	१-कारक मुण कारक कथन		
	तृतीय वर्णन		२-कारक मुण कारक कथन	५८	
	चतुर्थमेव वर्णन	४५	३-सामान्य मुण विशेष कथन		
३७	द्वीपकाङ्कानुहार वर्णन		४-विशेष मुण सामान्य कथन		
३८	द्वीपकाङ्कानुहार वर्णन		५-गुण्य प्रस्तावने गुण्य कथन	५९	
	१-प्रथम पदादि		५	प्रस्तुत अङ्कुर अङ्कानुहार वर्णन	
	२-अर्थादिति	४६	५१	वर्णाशोक्ति अङ्कानुहार वर्णन	६
	३-तृतीय पदार्थादिति		१-वन रचना		
३९	प्रतिवस्तुपमाङ्कानुहार वर्णन	४७	२-वर्णशोक्ति	६१	
४	दृष्टान्ताङ्कानुहार वर्णन	४७	५२	किन्वा व्याजस्तुति अङ्कानुहार वर्णन	
४१	निदर्शन अङ्कानुहार वर्णन	४८	१-स्तुति व्याज किन्वा वधन	६२	
	१-द्वितीय वर्णन		२-स्तुति व्याज स्तुति	६३	
	२-वर्णने अत्यर्थको वर्ण		३-किन्वा व्याज किन्वा		
	३-अत्यर्थमे वर्णनेको एक वर्ण		५३	आश्लेषानुहार वर्णन	७
	४-सह अर्थ असह अर्थ निदर्शना सह अर्थ	४९	१-प्रथम विशेषांश		
	५-असह अर्थ		२-द्वितीय वर्णन केर	६४	
४२	अतिरेकानुहार वर्णन		५४	विरोधान्ताङ्क अङ्ककार वर्णन	६१
	१-अधिक	५	१ विभावना अङ्कानुहार वर्णन		
	२-अल्प		२-द्वितीय विभावना	६६	
	३-सामान्यतिरेक		३-तृतीय विभावना	६७	
४३	सशोक्ति अङ्कानुहार वर्णन		४-चतुर्थ विभावना		
४४	निशोक्ति अङ्कानुहार वर्णन	५१	५-पंचम विभावना	६८	
	द्वितीय वि	५२	६-षष्ठ विभावना		
४५	समाशोक्ति अङ्कानुहार वर्णन	५३	५६	विशेषशोक्ति अङ्ककार वर्णन	६९
४६	परिकर अङ्कानुहार वर्णन		५७	असम्भवाङ्ककार वर्णन	७

संख्या	विषया	पृष्ठांका	संख्या	विषया	पृष्ठांका
११	रत्नावली अक्षकार वर्णन	१४	११८	अनुक्ति अक्षकार वर्णन	१२
१७	तद्गुणालंकार वर्णन	१	११९	निसक्ति अक्षकार वर्णन	
१८	अपूर्व अक्षकार द्विधावर्णन द्वितीय वर्णन	१५	१२	वृत्तिव्याजद्वार वर्णन	१२१
१९	अतद्गुण अक्षकार वर्णन	२३	१२१	विधि अक्षकार वर्णन	१२२
१	अनुगुण अक्षकार वर्णन		१२३	हेतु अक्षकार वर्णन	१२३
२	मिक्षिप अक्षद्वार वर्णन	१७		२-द्वितीय हेतु वर्णन	१४
२	सामान्य अक्षद्वार वर्णन		१२३	शब्दात्मद्वार वर्णन	१२५
३	व्यतीति अक्षकार वर्णन	१८		१-लेखारहितानुपाद्य वर्णन	
४	विशेष अक्षकार वर्णन			२-आदिबद्ध आनुचि लक्षानुपाद्य वर्णन	
५	गडोत्तर अक्षकार वर्णन	१९		३-अन्तवर्धोदिति लक्षानुपाद्य वर्णन	१२६
६	विशेष अक्षकार वर्णन २-द्वितीय वर्णन	२१		४-द्वितीयानुपाद्य वर्णन	
७	सुशमाक्षकार वर्णन			५-द्वितीयानुपाद्य आदि वर्णन अन्त की अक्षकार आदि	१२
८	सिद्धि अक्षकार वर्णन	२११		६-आदि वर्णन एकको अनेक / आदि	१२
९	अप्योक्ति अक्षकार वर्णन	२२२		७-अन्तवर्ध अक्षकार अने आदि	१२३
११	गुणोक्ति अक्षकार वर्णन	२२३		८-वृत्ति भेद वर्णन द्वार वर्णन	१२४
११	विशेष अक्षकार वर्णन			९-व्यवहारिक वर्णन	१२
१२	वृत्ति अक्षकार वर्णन	२२४		१०-पर्यायवृत्ति वर्णन	१२५
१२	लक्षोक्ति अक्षकार वर्णन	२२५		११-असृष्ट ध्वनि	१२६
१२	वर्णोक्ति अक्षकार वर्णन १-आसृष्ट			१२-शोभनार्थवृत्ति वर्णन	१२७
१२	स्वभावोक्ति अक्षकार वर्णन				
१२	साविक अक्षकार वर्णन	२२८			
१२	व्यवहार अक्षकार वर्णन				

हापत्रकमणिका ।



॥ श्रीगणेशायनमः ॥



॥ अथ रामचन्द्र भूषण लिख्यते ॥

॥ मङ्गलाचरण ॥

॥ वरवै ॥

श्रीगुरु गणपति शारद गौरीनाथ ।

भरत लषन रिपुसूदन सियवर साथ ॥१॥

॥ कवित्त ॥

बेलि फलिगई कौशिला के कामना की कल, फैल्यो भाग
नाग नर सूरज सुमन को । लछिराम जाग्यो दशरथ को अ-
खषड ओज, मण्डित भुवन दल्यो दावा दुसमन को ॥ राम-
चन्द्र, भरत, लषन, शत्रुहन चारु, ब्रह्म अवतार भार भूतल
दमन को । गाज्यो रघुवंश अवतंश अमरेश राज्यो, औधअंश
ढेर में सुमेर त्रिभुवन को ॥२॥

जोग बल जागे भाग नाग नर देवन के, सन्तन सरोज

को समोर समुद्वै भयो । लछिराम राम अवतार के अतङ्गही
 में, असुर अरातिन अमान अमुद्वै भयो ॥ भासमान अवध
 अमन्द उदयाचल पै, परम प्रताप की प्रभा को प्रमुद्वै भयो ।
 चौदहो भुवन अवतंश राजवंश मणि, ब्रह्मराशि कौशिला
 उदर सौं उवै भयो ॥३॥

शङ्ख सुधा शशि धेनु रभा कल्पतरु मणि, मालाकार म
 हिमा नखन के धरन में । अंकुश गजेन्द्र वाजि कमला कमल
 धनु, खल वण्ड कुलिश गरल आचरन में ॥ लछिराम जन
 धन लाली अनुराग मद, धेष ध्वज वैद्यराज आनंद भरन में ।
 शोभा सिन्धु मधि रच्यो मनमथ मानो चारु, चौदहो रतन
 रामचन्द्र के धरन में ॥४॥

कौशल कलश महाराज राम रघुवीर, महारानी मेथिली
 सनेह समुद्वै रहैं । लछिराम शारद महेश धरवानी बेस, चा
 न्यो वेद धिरद वितान क्रमुद्वै रहैं ॥ मणि-मञ्च गज-रथ पा
 लकी अरिन्द मौलि, रतन सिंहासन प्रकाश प्रमुद्वै रहैं ।
 चान्यो फल चौदहो रतन स्यौ सविष्णु धन, चान्यो युग चा
 न्यो धरणाम्बुज उवै रहैं ॥५॥

शारद सभाग अनुराग में रतन धारें, परम प्रकाशमान
 भान अश ओज की । चैन भार तरल तरंगें परिमल सङ्क,
 नैन रामचन्द्र चारु चञ्चरीक चोज की ॥ लछिराम नखन म
 हावर प्रभाली लसैं, लाली तरवान राशि चान्यो-फल मोज
 की । भूपन विशाल भाल चौदहो भुवन रज, मङ्गलीक मेथि
 ली के धरण सरोज की ॥६॥ ।

॥ दोहा ॥

मांगत वर करजोरि युग, सीस नमित लछिराम ।
रामचन्द्र भूषण रुचिर, ग्रन्थ वनै सुखधाम ॥७॥
श्री सीतावर चरित मय, अलङ्कार शुभ रीत ।
वरने पण्डित कवि यथा, वा पथ परखि पुनीत ॥८॥

॥ अथ अलङ्कारस्वरूप वर्णन—दोहा ॥

वचन छन्द वर व्यङ्ग मैं, विलग चमक परिमान ।
भूषण वत पद अर्थ मैं, अलङ्कार अनुमान ॥९॥
युगल भांति परमान तिहि, प्रथमर्थालङ्कार ।
शब्दा फिरि दूजो कहत, मन प्राचीन विचार ॥१०॥

॥ अथ अर्थालङ्कार तथा पूर्णोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सम समता वाचक धरम, उपमेयऽरु उपमान ।
चान्यो जहँ पद अर्थ मैं, तहँ पूरन उपमान ॥११॥

॥ यथा—छप्पै ॥

गुरु वशिष्ठ तप राशि, विदित रतनाकर से वर ।
महाराज दशरथ, भुवन रवि से प्रताप कर ॥
ज्ञान्यो फल से कुँवर, चारु सुर नर मन मोहँ ।
कौशिल्या केकई सुमित्रा, छवि लों सोहँ ॥
लछिराम सुधा सरि सीस रजु, वन प्रमोद तट लहि लहर ।
अमरेश-पुरी लों जगमगै, अवध नगर आनन्द वर ॥१२॥

॥ कुण्डलिया ॥

सजल श्याम-घन से लसत, सिंहासन श्रीराम ।
शुभग सची लों मैथिली, अङ्ग नाम अधिगम ॥

अङ्ग वाम अभिराम, लपन सुरतरु से फूले ।
 भरत शत्रुहन सुमत, भ्रमर से विहरत भूले ॥
 धरने कवि लछिराम, गुह्यरत मन्दर से गज ।
 जयति कौशलाधीश, नवल गौरी घर से सज ॥१३॥

॥ कविच ॥

सुरभि समीर मुकुलित वन घागन में, छीर सर सरिता
 समोज समुद्वे वयो । लछिराम रङ्ग राग नगर धगर धर, नाग
 नर वेषन प्रकाश प्रमुद्वे वयो ॥ गणपति गौरि शम्भु शारद
 असीसें वेव, इन्द्रहू तें असुर अतङ्ग अमुद्वे गयो । कौशल क
 लस रामचन्द्र धाल-सूरज लो, ब्रह्मराशि कौशिला उदर
 सो उद्वे भयो ॥१४॥

॥ पुनः ॥

काछनी कमर लसे छोरें पटुका की पीरे फहरें ब्रसन हीरे
 लाल गुन गथ के । लछिराम ललित हरीरे धनु-धान कर,
 लोचन विशाल भाल भाग समरथ के ॥ रामचन्द्र भरत ल
 पन रिपुसुवन पै, वै रहे अपार ओज आनँद अकथ के । क
 रत विहार सङ्ग तीर सरयू पै चारों-फल से कुमार महाराज
 वशरथ के ॥१५॥

॥ पुनः ॥

कीरति अमन्द चारु चन्द चञ्चिका सी फौली, धरयो दान
 धुनों वेषराज दरसन सो । युगुल जसीले भुजदण्ड पै अखण्ड
 साने, ममर प्रचण्ड ध्योम खम्भ तरपत सो ॥ लछिराम नाग
 नर सागर मगन पीरें, राजहँस बंस मिसिरी के सरयत सो ।

दूषण दुखद सुर सङ्गमी समाजें राम, रघुवंश भूषण सुमेर
परवत सों ॥१६॥

॥ पुनः ॥

सौरभित सीरे जागैं युगुल जसीले कर, मेंहदी चलित
अरविन्द अरुनारे से । लछिराम चिन्तामणि आरसी से ओज
दार, वदन समौज देवि रूप लों सँवारे से ॥ पांवड़े सुमन
परिपूरन प्रकाशमान, ढारे सकुचनि गौन गज मतवारे से ।
मण्डित महावर चरन मैथिली के मंजु, मानिक महल खिलैं
थलज हूजारे से ॥१७॥

॥ पुनः ॥

शुभग सुरङ्ग नैन विरद वहाली सङ्ग, विकसत मौज में
सरोज मानसर से । वदन विशाल भाल परम प्रकाश ओज,
वगरि विराजैं लछिराम विजु वर से ॥ भुज फरकीले आंगु-
रीन में नवल नख, आवदार मंजु मुक्ताहल के लर से ।
राव रामचन्द्र के युगल कर दान बारि, वरसत बारहो महीने
जलधर से ॥१८॥

॥ अथ तवकोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

अर्थ सदृश में जहँ परै, समता सम उपमान ।

जहँ तहँ मिलि तवकोपमा, अलङ्कार परमान ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शरद कलाधर सों वदन विशाल जैसो, विहँसनि तैसी
चारु चन्द्रिका उमङ्ग की । युगल जसीले जिमि अरविन्द से
हैं नैन, लखनि तिरीछी तिमि आनँद प्रसङ्ग की ॥ लछिराम
रामचन्द्र भुज फरकीले जैसे, तैसी वसीकरन सगुन मौज रङ्ग

की । सिरमोर मङ्गलीक अवधपुरी है जैसी, तैसी धार तरल तरंगें रामगङ्ग की ॥२०॥

॥ पुनः ॥

लखन कुमार जैसो दाहिने लसत तैसो, वाम भाग शत्रु हन सुखमा समाजै है । भूपन भुअन जैसो सामुहे भरत पी छे, तैसोई सुमन्त गुणधीरता जहाजै है ॥ लछिराम जैसे वा जि घरही कुरङ्ग तैसी, वांक घरछेती रघुवर्षिन वराजै है । विरव अखंड राम रघुवीर जैसो तैसो, वीर अमनेक महावीर सों विराजै है ॥२१॥

॥ अथ पूर्णोपमायासा वचन—दोहा ॥

जहँ अगनित उपमेय को, विरचि एक उपमान ।
अलङ्कार मालोपमा, वर्णनीय परमान ॥२२॥

॥ पया कवित्त ॥

चन्द्रिका सी दीपति घवन की विराजै घर, विहँसनि वेस चन्द्रिका लौं विलसति है । भाल ख्योर चन्दन चमक चारु चन्द्रिका सी, चन्द्रिका सी हीरा मोती कलैंगी घसति है ॥ चन्द्रिकी सी कर में नवल नख माला जोति, लछिराम चन्द्रिका का कृपान हुलसति है । राव रामचन्द्र वीर चान्यो जुग रावरे की, चान्यो विसि चन्द्रिका सी वीरति लसति है ॥२३॥

॥ अथ धर्मभिन्नमालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय एक धर्म पर, कल्पित बहु उपमान ।
धर्मभिन्न मालोपमा, प्राचीनन मत जान ॥२४॥

॥ पया कवित्त ॥

आवकर फलफि फवीलो कार चन्द्रिका सो, उद्यत अमल

हिमालय के हजारा सों । लछिराम बिलसत भूपर झलक भ-
न्यो, छलकत हीरा गज गौहर के थारा सों ॥ सौरभित सीरो
मलयज सों मजेजदार, सातौ दीप दीपति में थरकत पारा
सों । चौदहो भुअन रामचन्द्र को सुजस फैल्यो, मङ्गलीक न-
वल धवल गङ्गधारा सों ॥२५॥

॥ अथ एकधर्ममालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ उपमान अनेक रत्नि, एक धर्म की रीति ।

एक धर्म मालोपमा, बरनै सुकवि सप्रीति ॥२६॥

॥ यथा कवित्त ॥

जेठ भान कर से कपिल कोप लर से हैं, माला सों द-
वानल त्यों गजब गहर से । काल बिकरारे से कुमार दामिनी
से देव, दारुन कला से प्रलै सिन्धु की लहर से ॥ लछिराम
जालिम जँजीरे जमजाल से ये, कालदण्ड ख्याल से कमालिया
कहर से । कालिका कृपान मुण्डमाली के त्रिशूल से हैं, राम
चन्द्र बान फनमाली के जहर से ॥२७॥

॥ अथ अनेकधर्म मालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जवहिँ बहुत-उपमेय को, सम सुबहुत उपमान ।

सम अनेक मालोपमा, नव प्राचीन प्रमान ॥२६॥

॥ यथा सबैया ॥

भाल पै हीरन की कलँगी, लरकै नषतावली के लर से
हैं । आनन ओज कलाधर से, लछिराम हँसै छटा श्री बरसे
हैं ॥ बाँहें मृणाल सी कञ्जन से कर, मौज उमाहैं हरा हरसे हैं ।
सातऊ दीप में श्रीरघुवीर, प्रकाश प्रताप दिवाकर से हैं ॥२७॥

॥ अथ पद्मनुत्पापमाखण्डार पणन—दोहा ॥

वर्णनीय घाचक धरम, अरु उपमान सुवेस ।

इनहि घटाये तीनि लौं, लुत्तोपमा सुवेस ॥२८॥

॥ अथ पद्मनुत्तोपमा,—यथा सर्वथा ॥

वाहिं भुजङ्ग सी पल्लव से कर, आगुरी पै नख हीरक हार
से । लौं लछिराम घटान से रङ्ग, प्रभा विहँसे मुक्ताहल
धार से ॥ ये भ्रमरावली लौं जुलफै, जुग भौहिं कमान सी
आनन मार से । घाल मयङ्ग लौं भाल थली, रघुनाथ के लो
चन खल्ल कुमार से ॥२९॥

॥ अथ बाधकल्लस,—यथा सर्वथा ॥

मृदु माधुरी हांसन ही मनमें, मुक्तालर को धरसावत
हैं । अति ओज प्रभाकर की महिमा, मिथिलापुर में धर
सावत हैं ॥ लछिराम सुरूप मनोहर राज-कुमारन को तर
सावत हैं । रघुनाथ कलाधर आनन की, परमा रस में सर
सावत हैं ॥३०॥

॥ अथ उपमेय सुप्त,—यथा सर्वथा ॥

सांघरे गोरे घटा छटा से, विहरै मिथिलेश की वाग
थली में । दोने धरे अरयिन्दन पै, अवलोकि गहे तरु की अ
वली में ॥ लौं लछिराम सुरेस कुमार से, आनन की रुचि
भांति भली में । ब्रह्म की राजसिरी सी बुहून के, चन्दन
ख्यौर है भाल थली में ॥३१॥

॥ अथ उपमान सुप्त,—यथा सर्वथा ॥

आनन पै चढ़ी ऐसी प्रभा, बड़ी लालिमा सी वृग बङ्ग

सँवारे । त्यों फरकीले भुजा बलवन्त, उदार से हाथ लसै'
गजरारे ॥ धूम गोराई व स्यामता की, लछिराम लखै' मिथि-
लेस जो हारे । लक्खन राम से राज समाज में, राजत कौन
महीप के बारे ॥३२॥

॥ अथ धर्मवाचक लोप,—यथा सवैया ॥

लोचन बान हैं भौं हैं कमान, कलाधर आनन भूषन तारे ।
भाल मसाल मरालिया गौन, मिले बिहँसै मुक्ताहल थारे ॥
मङ्गल मूरति मंजु मनीन के, माल गरें लछिराम हजारे । ल-
क्खन राम सुरेस कुमार, सुरेस कुमार स्वयम्बर वारे ॥३३॥

॥ अथ उपमान उपमेय लुप्त—यथा दोहा ॥

बाल बेषधर ख्याल से, बिलसत वर बनमाल ।
जनक स्वयम्बर जगत से, दरसत राज मराल ॥३४॥

॥ सवैया ॥

कान की छोरन मंजु मरोरन, लालिमा में भरे लोचन
बाढ़े । चन्दन ख्योर पै खेद के बुन्द, चढ़ीं चल भौं हैं गरूर
में गाढ़े ॥ बाहें बली फरकें लछिराम, सही रघुवीर यों बीरता
माढ़े । श्री मिथिलेस मुनीस के सौं हैं, सरासन शम्भु को
हेरत ठाढ़े ॥३५॥

॥ अथ उपमेय धर्म लोप,—यथा सवैया ॥

त्यौर तिरीछी किये मुनि सङ्ग में, हेरत शम्भु सरासन
मार से । त्यों लछिराम दुहूँ कर बान, कमान लौं भौं हैं सु-
ब्रह्मवतार से ॥ सामुहे श्री मिथिलापति के, अभिराम सही

रस धीर सिंगार से । नीलम चम्पक हार से कौन, स्वयम्बर
में मृगराज कुमार से ॥३६॥

॥ अथ पाचक उपमेय स्तम्भ—यथा वरवै ॥

सरद कलाधर विहरत मङ्गल साज ।
धीधिन अवध विराजत नृप सिरताज ॥३७॥

॥ अथ उपमान धर्मलोप,—यथा वरवै ॥

रघुवर सों को त्रिभुवन भुज बलवन्त ।
धनु सो भयो कहा कर गिरजा कन्त ॥३८॥

॥ अथ उपमानपाचक धर्मस्तम्भ—यथा वरवै ॥

राजमहल रघुनन्दन चन्दन स्थोर ।
भरत लपन रिपुसूदन लोचन कोर ॥३९॥

॥ अथ उपमेयपाचक धर्मलोप—यथा वरवै ॥

चपल स्याम धन चपला सरजू तीर ।
मुकुत माल मय धारिज अमर जैजीर ॥४०॥

॥ अथ पाचक उपमान उपमेय लोप—यथा वरवै ॥

दान धारि सों सींचत त्रिभुवन हेरि ।
असुर सेन हनि राखत धरमहि फेरि ॥४१॥

॥ अथ उपमान उपमेय धर्म लोप—यथा वरवै ॥

आप समान सुरेसहि समुझि सकोप ।
रावन मन में राखत आकर ओप ॥४२॥

॥ अथ धारों को लोप पूर्ण स्तम्भ—यथा वरवै ॥

अङ्गद सो कहि तारा धिरव सँभार ।
मम सोहाग हरसोहि तिनहि निहार ॥४३॥

॥ अथ उपमा के भेद वर्णन—दोहा ॥

शब्द सुनत में होय जब, वाचक ज्ञान सुबेस ।
तहँ श्रोती उपमा कहत, नागर कवि गन देत ॥४४॥
अरथ निरूपण में जहां, समुझि परै सुख साज ।
तहँ उपमा गनि आरथी, जे कविन्द सिरताज ॥४५॥

॥ अथ अनन्वया लङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहां होय उपमेय को, उपमेयै उपमान ।
अलङ्कार वरने तहां, अनन्वया सुखदान ॥४६॥

॥ यथा सवैया ॥

वारिज वीरबधूटी प्रभाकर, मन्द परै रजनी परमाली ।
ज्वालामुखी बड़वानल की, लछिराम त्यों धूम धुजी सिख-
राली ॥ छार करै खल बंशन को, अवतंश हितून पै अंश
गुलाली । श्री रघुनाथ प्रताप लों भूपर, श्री रघुनाथ प्रताप
की लाली ॥४७॥

॥ कवित्त ॥

राम सम राम मैथिली लों मैथिली की प्रभा, लषन सो
लषन सहायक हमेस को । लछिराम ललित भरत शत्रुहन
सम, ललित भरत शत्रुहन है सुबेस को ॥ कैकई सी कैकई
सुमित्रा लों सुमित्रा देवि, दानी रघुवंश बरदानियां महेस
को । कामधेनु कौशिला सी कौशिला कलपतरु, कौशल सों
कौशल नगर कौशलेश को ॥४८॥

सुघर सुकण्ठ सों सहायक सुकण्ठ भूप, अङ्गद सों अ-
ङ्गद अमोल अनुमानो में । सेवक सबल हनूमान सों अभङ्ग
जङ्ग, हनूमान सेवक सबल सनमानो में ॥ लछिराम कनक

भवन सो कनक भौन, रामगङ्ग सम रामगङ्ग मोज मानो में ।
त्रिभुवन मौलि राव रामचन्द्र मैथिदी लों, राव रामचन्द्र मै
थिदी को परमानो में ॥४९॥

॥ सषैया ॥

मांझ स्वयम्घर में मिथिलेस के, राम सी राम की ला
लिमा छाई । रूप की राशि प्रकाशिका लों, विजैमाल गरे
पहिरावन आई ॥ यों लछिराम लसी कर कल्ल में, भारती के
मन को भरमाई । मैथिदी सी तिहूदोकन में, मिली मैथिली
की शुभ सुन्दरताई ॥५०॥

॥ पुनः ॥

सूरज से षढे ओज अमन्द, मलीन परे नृप मण्डल ता
रे । श्री मिथिलेस के आनन पै, षढे औरई ओज अनरद
पसारे ॥ को वरने लछिराम समा, जयमाल जवै गरे मङ्गल
ढारे । राम से राम सिया सी सिया, स्तिरमौर थिरञ्चि बि
चारि सँवारे ॥५१॥

॥ अप उपमानोपमेय मलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ उपमा उपमेय को, परसपरी व्यवहार ।

तहँ उपमा उपमेय कहि, भूपन आनँव हार ॥५२॥

॥ यथा कवित्त ॥

भरत लपन शत्रुहन मोर मण्डली लों, मोर—धृन्व भाग
भरतावि के समा सो है । लछिराम भर मघादान रघुर्बशिन
सो, दान रघुर्बशिन को भरनि मघा सो है ॥ मालाकार की
जुरी लों मैथिली विलास वर, मैथिली विलास कीजुरी की

अरमासी है । राम रघुवीर श्याम घन परमा सो भयो, श्याम
घन राम रघुवीर परमा सो है ॥५३॥

॥ पुनः ॥

गोरे अङ्ग रङ्ग चारु चम्पक बरन वारे, हरष हलोरैं मौज
मन्द विहँसन की । ख्योर कासमीरी पीरी पाग ल्यों युगल
भाल, कोरैं लाल कलङ्गी मरोरैं जुलफन की ॥ लछिराम तेज
तरुनापन हरनि अंस, वदन दुहूँ पै परमाली श्री लहन की ।
तिरछौरैं भौरैं शत्रुहन सी लषन लसै, लषन सी भौरैं तिर-
छौरैं शत्रुहन की ॥५४॥

॥ सर्वथा ॥

श्री अमरावती लौं मिथिला, मिथिला सम श्री अमरा-
वती मोहँ । सागर छीर खयम्बर सो, ल्यों खयम्बर सागर
छीर बनो है ॥ सारद मैथिली सी लछिराम, सुमैथिली सा-
रद लों गुन जोहँ । लक्खन राम कलाधर से, सु कलाधर
लक्खन राम से सोहँ ॥५५॥

॥ अथ प्रतीप अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय को होय जब, सब सुरूप उपमान ।
बरनत प्रथम प्रतीप तहँ, पण्डित सुमति निधान ॥५६॥

॥ यथा कवित्त ॥

नवल नकीब से अलापचारी कोकिल ल्यों, चारन से च-
ञ्चरोक आनँद अतूले हैं । सेनप सुवीर से विहङ्ग विहसीले
सोर, लछिराम सर से सुमन सजमूले हैं ॥ विरद बितान
रघुबंशिन से बाग बन, भाग भरे दल से बिलास अनुकूले

हैं । रावरे प्रताप से महीप रामचन्द्र चारु, किंशुक अनार क
चनाग कछ फूले हैं ॥५७॥

॥ सर्वथा ॥

पायन से गुललाला जपा दल, पङ्क धधूक प्रभा बियरे
हैं । हाथ से पल्लव नौल रसाल के, लाल प्रभाव प्रकाश करे
हैं ॥ लोचन की महिमा सी त्रिबेनी, लखे लछिराम त्रिताप
हरे हैं । मैथिली आनन से अरविन्द, कलाधर आरसी जा
नि परे हैं ॥५८॥

॥ अथ द्वितीय प्रतीप-दोहा ॥

जसहिं होय उपमान सो, धर्णनीय अपमान ।

तहँ दूसरो प्रतीप कहि, नव प्राचीन प्रमान ॥५९॥

॥ यथा कश्चि ॥

कातिल रुकै न चाटे चरषी रुचिर श्वल, खल भल धार
ति खलक जोम लाली को । लछिराम धार में असुर मुण्ड
माल दे वै, धरवान पावै मुण्डमाली महाकाली सो ॥ ज्वाली
जङ्ग जोहर जषान जहरीली षाड़ि, प्रथल अतङ्ग प्रलयानल
प्रनाली को । सङ्ग सान राधरी शृपान राध रामचन्द्र, हेरे क्यों
न पन्नगी हजार फल वाली को ॥६०॥

॥ सर्वथा ॥

धारनचन्द्र सो स्याम घटा, अरुझानी रहै सिपराली प
हार है । स्यों लछिराम प्रताप सों रावरे, सूरज धारहो को अ
वतार है ॥ औध सो श्री रघुनाथ नरेश, धन्यो अमरावती म
ङ्गलचार है । कीरति कैसे गरूर करे धरा, या पिधि पावन
गङ्ग की धार है ॥६१॥

॥ अथ तृतीय प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय सों होय जब, अन आदर उपमान ।

तहँ तीसरो प्रतीप है, पण्डित राव प्रमान ॥६२॥

॥ यथा सर्वथा ॥

भाल बिसाल पै राजसिरी जगै, लोचन में लसै लालिमां
नीकी । आनन ओज पै ल्यों अभिराम, कहा कलाचन्द कलि-
न्द अनी की ॥ हेरि स्वयम्बर में लछिराम, थकी मति राजन
की अवली की । श्री रघुवीर सिधा छवि सामुहैं, स्याम घटा
विजुरी परै फीकी ॥६३॥

॥ अथ चतुर्थ प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

सर वर में उपमेय के, जब न तुलै उपमान ।

चौथो भेद प्रतीप तहँ, वरनत बुध सुखदान ॥६४॥

॥ यथा कवित्त ॥

दाहक असुर कर परसत सीरो सुर, रैनिदिन विरद ब-
रावरै निहारो में । सुहृद सरोज सांझ सम्पुटित होत याके,
वन जन फूले त्रिभुवन के अखारो में ॥ समता तुलै न हेरे
भरमत अम्बर में, राहु की डरन थरकत जुग चारो में । पा-
वन प्रभाकर प्रताप रामचन्द्र सौहैं, कैसे कला बारहो विभा-
कर विचारो में ॥६५॥

॥ अथ पञ्चम प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय के सामुहैं, व्यर्थ मान उपमान ।

पञ्चम भेद प्रतीप को, तहँ विरचत गुनमान ॥६६॥

॥ यथा कवित्त ॥

मण्डन भुवन फरकीले भुजगपड बल, वजर गुमान म-

घषान के दलत है । जुगल जसीले फर मौज के उमङ्गन में,
कलपलता के दीह दल को मलत हैं ॥ साहिबी सरम राज
नीति के धरम सौहैं, शङ्कर सुमेरहू के रङ्ग घदलत हैं । गज
मुकताहल सुजस रामचन्द्र आगे, अपर महीप जस ओरे लौ
गलत हैं ॥६७॥

॥ अथ रूपक मलहार षणन—दोहा ॥

जहैं अभाव वाचक धरम, विपयी विषय विलास ।
करि एकै गुन थापिये, रूपक भूपन रास ॥६८॥
करि सुरूप एकै कहूं, कहूं न भेद गुन हीन ।
अधिक होत सम त्रियिधि ये, धरनत मत प्राचीन ॥६९॥

॥ अथ रूपक अधिकोक्ति—यथा कविच ॥

वसत मलीन घर घामी में बिसासी यह, मखमली म्यान
सो लहर बाज लाली तैं । लछिराम जङ्ग धूमधाम की लपट
यामैं, वह वधिआति परसन मुख हाली तैं ॥ वह काटि भागै
यह कातिल रुके न राष रामचन्द्र कर घर पावैं मुण्डमाली
तैं । जोहर ज्वलित भरी कहर कृपान घङ्ग, अधिक बहाली
फनमालिनी फनाली तैं ॥७०॥

॥ अथ रूपक हीनोक्ति—यथा सधिया ॥

चञ्चल चारु घुने स्रव रङ्ग में, होत लका कर लेत लगाम
के । बाग मरोर में मोर धजी, कल घोलत आनँद में गुन
प्राप्त के ॥ बाकुरे घोते कुरङ्गन पै, लछिराम मही महिमा
अभिराम के । सागर फाँदिये को फाँदये, पर—हीन परिन्द
महीपति राम के ॥७१॥

॥ अथ तद्रूप रूपक समोक्ति—यथा कवित्त ॥

रदन बलाकृष्टिबिज्जु भूखन चमक भाल, पँचरँगी बेवै रङ्ग
धनु सरसत हैं । ककुभ कलोलैं भिरे मन्दर फिरत फूले, फैलि
सङ्गवारेन के अङ्ग परसत हैं ॥ लछिराम गरजैं कुमार अन्ध-
कार कैसे, कजरारे असुर जँवासे झरसत हैं । सावन फुहारे
गंड मंडित भसुण्ड मग, रामचन्द्र गज मतवारे वरसत हैं ॥७२॥

॥ अथ अभेद रूपक अधिकोक्ति—यथा कवित्त ॥

गरजि ककुभ कुञ्जरीन सों कुलेलैं करै, छोड़त फुहारे फैलि
सुण्डन हजारा को । विरचै सु लछिराम चहलै अजब गैल,
बदन चमक बिज्जु आनँद अपारा को ॥ कारे लाल पीरे हरे
भूषन जवाहिर के, रङ्ग साज राम देवराज के अखारा को ।
बारिद बगर बर वारन झमक झूमै, वरसत बारहौ महीने
वारिधारा को ॥७३॥

॥ अथ अभेद रूपक हीनोक्ति—यथा सबैया ॥

पावन सीतल बारि सुबेस, किये धरा धौल सबै लहरी है ।
मानस मंजु मुनीसन के, भरै आनँद आले प्रभा फहरी है ॥
ध्यानहु तैं अघओघ हरै, लछिराम तिहूपुर में ठहरी है । की-
रति गङ्ग तरङ्गनि राम, करार के नाहर हू छहरी है ॥७४॥

॥ अथ अभेद रूपक समोक्ति—यथा सबैया ॥

साखैं भुजा फरकीली बहार में, पल्लव हैं करत्यो अरुनारे ।
ये सुमनावली हैं नख बृन्द, मलिन्द सुरूप त्रिलोक निहारे ॥
मेटै ललाट कुअङ्ग विरञ्चि, सदा रस एक समोज सँवारे ।
कामना आठऊ जाम फलै, कलपद्रुम राम नरेस हमारे ॥७५॥

॥ अथ अपर रूपक वर्णन—दोहा ॥

भौरौ रूपक चतुर विभिः धरने बुध मति मान ।

प्रथम निरक्षर वूसरो, परस्परित परमान ॥७६॥

पुत्रि प्रमान कहि तीसरो, ग्रन्थन मन सरसाय ।

फिर समस्त विषयक दिये, चौथे भेव लखाय ॥७७॥

॥ अथ निरक्षर रूपक वर्णन—यथा सर्वथा ॥

भालपे मोतिन की कलेंगी मनि, मानिक माल गरे मन
भावे । भौहें कमान ल्यों लोचन दान, विलोकनि खंजर हू तें
सभावे ॥ पानि सरोज मृणाल भुजा, लछिराम समा सुम सा
गर पावे । राम घटा अंग द्वीपति में, मुसकानि छटा निरखे
धनिआवे ॥७८॥

॥ अथ परम्परित रूपक वर्णन—यथा दोहा ॥

सुर समाज सीतल करेन, मलयज मलय समीर ।

बैरी धन दाहक प्रबल, धदवानल रघुवीर ॥७९॥

॥ अथ परिणामा रुझार वर्णन—दोहा ॥

करे क्रिया उपमान रेखि, वर्णनीय को रूप ।

अलङ्कार परिणाम तहें, धरनेत कधि कुल भूप ॥८०॥

॥ यथा कथित ॥

स्वाम धन धरन धिराजत धसन पीरे, सिंरपेच हीरेलाल
हिलत सँवारे हैं । लछिराम जुगल जसीले, परकीले भुज,
वाल ब्रह्म वेद धर धिरद धरारै हैं ॥ तरकसी कन्ध काक
पक्ष की लटक, नैन त्वपल त्तिरीछे खल्लरीट सों निहारै हैं ।
ताडुका सुधाहु सीस कसिके कमान; रामचन्द्र परकमल अ
चूक धान मारै हैं ॥८१॥

॥ पुनः ॥

सोहिं मुनि मंडली महान वेद मंत्रन सों, मङ्गलीक मष
धूम मन सरसावै हैं । मंडन भुअन दसरथ के सराही भाग,
सुन्दरी सुमन की सुमन वरसावै हैं ॥ लछिराम रामचन्द्र लखन
सुरूप हेरि, विहंसि किरातिनै कुतूहल मंचावै हैं । पुलकि
पसीजे गजरारे हाथ पल्लव सों, गुञ्ज गज मोतिन के हार
पहिरावै हैं ॥८२॥

॥ अथ समस्त विषयक रूपक वर्णन—दोहा ॥

विषय जवहि आरोपिये, सकल वस्तु के साथ ।

लखि समस्त विषयक तबहि, अलङ्कार सुभ गाथ ॥८३॥

॥ यथा कवित्त ॥

झमके मतङ्ग झख राज सङ्ग परिहरि, रथें वाजि माला
मीन सुखमा सरीर की । मन्दर पनाके वारि वांवर विराट
फैले, आंचै ओज बैरिन पै बाढ़व के भीर की ॥ लछिराम
रोछ ब्याल बरबस बोलै खुले, वोहित हरोल थाहैं लखन के
धीर की । आनंद अभङ्ग राजें तरल तरङ्ग सङ्ग, सागर गँ-
भीर सेना राम रघुवीर की ॥८४॥

॥ पुनः ॥

गुञ्जरत कुञ्जर कुलेल में गरज घोर, रदन वलाक फुही
फहर बिसेस को । लछिराम सातौ दीप सीरी सुभ नीति
पौन, विरद अभङ्ग मही महक प्रवेस को ॥ श्याम घन राम-
चन्द्र मैथिली अचल बिज्जु, लपन भरत शत्रुहन मोर बेस
को । बारहौ महीने वर वरसैं रतन वारि, दरवार वारिद
बगर कौशलेश को ॥८५॥

॥ अथ अपर रूपक वर्णन—दोहा ॥

औरो रूपक चतुर विधि, चरने बुध मति मान ।

प्रयत्न निरखान दूसरो, परस्परित परमान ॥७६॥

पुनि प्रमान कहि तीसरो, एन्थन मन सरसाय ।

फिर समस्त विषयक दिये, चौथे भेद लखाय ॥७७॥

॥ अथ निरङ्क रूपक वर्णन—यथा सख्या ॥

भालपे मोतिन की कलेंगी मनि, मानिक माल गरे मन भावे । भोहि कमान ह्यो लोचन बान, धिलोकनि खजर हू ते सभावे ॥ पानि सरोज मृणाल भुजा, लछिराम सभा सुम सा गर पावे । राम घटा अंग द्वीपति में, मुसकानि छटा निरखे धनिआवे ॥७८॥

॥ अथ परस्परित रूपक वर्णन—यथा दोहा ॥

सुर समाज सीतल करेन, मलयज मलय समीर ।

बैरी धन दाहक प्रबल, चढ़वानल रघुवीर ॥७९॥

॥ अथ परिणाम लङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करे क्रिया उपमान रधि, वर्णनीय को रूप ।

अलङ्कार परिणाम सहें, धरनत कधि कुल भूप ॥८०॥

॥ यथा वर्णित ॥

स्याम धन धरन विगजत घसन पीरे, सिरपेघ हीरेलाल हिलत सँवारें हैं । लछिराम जुगल जसोल फरकीले भुज, घाल द्रतम घेप धर विग्द घगारें हैं ॥ सरकसी कन्ध काक पक्ष की लटक, नैन नपल तिरिछे खलगीट तो निहारें हैं । ताहुया मुयाहु सोत कसिके कमान, रामचन्द्र परकमल अ नूक धान मारें हैं ॥८१॥

सिरताज राज महाराज राम रघुबीर, दानी दीनबन्धु वीर
कौशल नगर को ॥९०॥

॥ पुनः ॥

श्यामघन सोहैं मुनि मंडली मयूरन को, पुरुष पुरातन
प्रमान वेद वर को । मौज में सरासन सिरोमनि महेश जा-
न्यो, ठान्यो देव वृन्द या प्रकास जोति वर को ॥ लछिराम
राजवंस कामद कलस गन्यो, जन बन दानियां सुमेर सब
थर को । मिथिला सुरेस प्राननाथ मैथिली ल्यो, मान्यो मि-
थिलेस बाल ब्रह्म रूप रघुवर को ॥९१॥

भूषित भुजङ्ग परमानत महेश मंजु, सीमा कञ्च नाल गन-
पति गौरि भाषै हैं । वर गजराज के बिचारै खल सुण्ड जन, बह्नी
भवसागर तरन अभिलाषै हैं ॥ लछिराम जुगल जसीले परमा-
नै खम्भ, असुर अभैरै कालदंड रुख राषै हैं । रावरे प्रचंड भुज
दंडन को रामचन्द्र, त्रिभुवन मानत कल्प तरु साषै हैं ॥९२॥

॥ अथ द्वितीय उल्लेख वर्णन—दोहा ॥

बहु गुन मंडित वरनिये, बहु विधि एक सुरूप ।

तहँ दूजो उल्लेख कहि, पंडित कवि रस रूप ॥९३॥

॥ यथा कवित्त ॥

मन्दर महीपन में सुन्दर सुमेर वर, देवन में ब्रह्मरूप-
रासि के अतन हौ । राजहंस नीति में अनीति के कराल,
काल दान सनमान बेलि राखत जतन हौ ॥ जङ्ग जैत जुगल
जसीले फरकीले भुज, वारन उबारन चिरद वरतन हौ । कलश
प्रभाकर सुवंस राव, रामचन्द्र गुन रतनाकर के चौदहो
रतन हौ ॥९४॥

॥ पुनः ॥

मुखर गँभीर चान्यो धीर को विलास बर, सङ्गमी स
विज्जु मैथिली है जोति सत्ता की। अङ्गवादि भूषण सभासव
मयूर मंजु, सन्त मुनि मण्डली समीर छेम छत्ता की ॥ ल-
छिराम, असुर जवासे झरसत जङ्ग, अलबेली, आनि बान्ति
जलधर मत्ता की । दान धारि मौजै तिरछोहैं इन्द्र धनुषारु,
मोहैं चढ़ी रामचन्द्र कौशल चकत्ता की ॥८६॥

॥ अथ सपत्न विषयक परिणामाङ्कार बणन—बोहा ॥

अहैं समस्त विषयक विषे, मिलि परिणाम प्रकास-।

सकल विषय परिणाम तहैं, बरनत सुमति विलास ॥८७॥

॥ यथा सर्वथा ॥

धीर लौ स्वच्छ सरीर छटा मलें, मंहित-माल विसाल ध-
न्यो भरे । लौ लछिराम अवेव औ देवन को, मन बेखिबे को
हहन्यो हरे ॥ सङ्गमी गंग-तरङ्गित धीरता, सोहैं समीप मनो-
रय यौ फरे । सागर श्री रघुनन्दन के, कर-कल सौ, मानिक
मोती झन्यो करे ॥८८॥

॥ अथ वस्त्रेस्त्राङ्कारु वर्णन—बोहा ॥

अत्रहैं एक को वणिबे, बहुत समुझि बहुरोति ।

मलङ्कार उल्लेख तहैं, भापत सुकवि सप्रीति ॥८९॥

॥ यथा क्वचित् ॥

योहित-विसाल भवसागर भयङ्कर पै, अधम उधारन
यकैती के रगर को । लछिराम शारव मतेस धरदानी-ब्रह्म,
जैस धार उवाली अङ्ग रावन झगर को ॥ तिरजीबे चान्यो जुग
चौदहो भुवन पति, भान षंश धिरव वितान के धगर को ।

॥ अथ शुद्धापन्हृति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

तदाकार आरोपिये, पूरव धर्म्य दुराय ।

शुद्धा पन्हृति तहँ कहैं, अलङ्कार कविराय ॥१०६॥

॥ यथा सर्वथा ॥

सम्भु सरासन तोन्यो सही, दिवि लों जगै जोति प्र-
कास पसान्यो । सातऊ दीपन में जस कै, लछिराम महीपन
को मद गाज्यो ॥ पून्यो मनोरथ मैथिली को, मिथिलापुर
में मन मोहनी डान्यो । राज कुमार नये रघुवीर, अनङ्ग
विजै कर रूप सँवान्यो ॥१०७॥

॥ पुनः ॥

मण्डित फेन लका से लगाम तैं, उपर भू थरकैं जथा
पारे । गौर गनै न गिरिन्दऊ को, लछिराम न मानै नदी नद
नारे ॥ बाज लों बैरी लवा पै परैं, लखि वारैं परी मुकताहल
थारे । राम नरेस के ये न तुरङ्ग, परिन्द हैं सूरज के रथ वारे ॥

॥ अथ हेतु अपन्हृति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वस्तु युक्ति बल सों दुरै, बरनै और प्रभाव ।

हेतु अपन्हृति समुझि मन, विरचत पंडित राव ॥१०९॥

॥ यथा कवित्त ॥

दीरघ दतारे भारे दिगपाल मंडल तैं, विरचत कीच मग
मद के पनारे हैं । झूमत झमकि झनकारत जँजीरैं जोर, ब-
न्दन बलित रंग सुर धनु टारे हैं ॥ गजराज राव रामचन्द्र
के सु लछिराम, गरजनि छोड़ैं सुण्डा दण्डनि फुहारे हैं । ब-
रसत बरहो महीने वारिधारा मेघ, मंगलीक मंडित मजेज
मतवारे हैं ॥११०॥

छटा है नखतावली की, रसराज ऊपर अजुबा अवतार की ।
 हीरालाल बलित ललित मोर संग कौधों, कल्लंगी कलित भाल
 भरत कुमार की ॥१०२॥

कौधों रूप रासि के प्रकास पै सुमंगलीक, बतते वसी
 करन मंत्र लहरेले को । रंग वार, कौधों अनुराग रामचन्द्रही
 को, जगमग्यो भाल पै, सुभारा व्याह-बेले, को ॥ लछिराम
 कौधों-रसवीर-के सिखर सोहैं, मेला रवि-चन्द्र की, मरीचिन
 झमेले को । मोर सों बलित, अलबेली, जुलफन, पर, सिरपेंच
 कौधों श्री लखन अलबेले, को ॥१०३॥

गोरे रंग ऊपर बिराजत अजब जामा, -सूरज सिंगार
 कौधों चम्पक, सुमन को । कंगन कलित, कर, परमप्रकास कौधों,
 लोहित कमल रच्यो रंग नौरतन को ॥ धीरे मुख मंडित य
 हाली अधरन लाली, कौधों सोम साँझ चिकस्त राते घन को ।
 रंगवार अजब तरङ्ग जोति, भालाकर, कौधों मनि मोर मंग
 लीक, शत्रुहन, की ॥१०४॥

घार में तिगिछी हूपला के उतरति पार, कौधों या फनाली
 पल्लगी की झला झल है । लछिराम कौधो प्रले घासर प्रनाली
 जोर, जौहर जमाली पाली काल करतल है ॥ रावन समर में
 महीप रामचन्द्र कर, कौधो या कृपान ज्वालामुखी की सकल
 है । असल कुमारी धडधानल प्रचेड कौधो, धारही कला के
 मारतंड की नकल है ॥१०५॥

॥ सषैया ॥

राज कुमारन की अवली में, विराजत यो नयो राज कु-
मार है । तेज तपोबल में लछिराम, नया विधि को रसरज
सिंगार है ॥ ध्वन तो वासर हू न अमन्द, दिवाकर तो रज
नी सुख सार है । मोहन मंत्र सँवारो भयो, मिथला मकर
ध्वज को अवतार है ॥१११॥

॥ भय परजस्ता पन्दुति असङ्गार वर्णन—दोहा ॥

और वीच आरोपिये, औरै गुन ठहराय ।
पर जस्ता पन्दुति कहैं, भूपन सब कविराय ॥११२॥

॥ यथा कवित्त ॥

धगर विलास धेन्व असुर तमालिन को, हायल करत
पलही के परखन में । कवि लछिराम धूम धाम कीन कौंधे,
कछू दारुन दिगन्तन प्रभाली हरपन में ॥ सुभट सिरोमनि
महीप रामचन्द्र यान, जुगुल प्रदोष वाली लाली लसै धन
में । रात्रो प्रताप गजरथ पै सवार वेस, धरसत विरद व
हाली त्रिभुवन में ॥११३॥

॥ पुन ॥

उन्नत भसुण्डे करि छोड़त फुहारे नीर, भारे कजरारे करै
मेल में निरत हैं । कवि लछिराम गोल गुल्लरत मोहैं मन,
मंहित कपोलन मलिन्द वे थिरत हैं ॥ तोरै लोह लगरै म
हीप राम चन्द्र वाले, गज मतवाले ये न फूलिके फिरत हैं ।
आले दिग पाल के कुमार सुरपति पाले, ख्याल भरे मन्वरै
मरोरि अभिर, त हैं ॥११४॥

॥ अथ भ्रांत्या पन्हति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

परको भ्रम छूटै जहां, काहू बचन प्रवीन ।
भ्रांत्या पन्हति कहत हैं, भूषन तहँ रस लीन ॥११५॥

॥ यथा कवित्त ॥

भभरो न मोर घन बीजुरी के मौजन में, सांवरो बरन
पीत बसन सरीर को । मङ्गलीक मुख पान कोकनद मानसर,
भांवरै भरत भौर भूले करि भीर को ॥ राजवंस मानो मि-
थिलेस के स्वयम्बर में, लछिराम धोखो चक्रवाकन गँभीर
को । सुरन अताप कर सूरज सताप यान, त्रिभुअन मंडित
प्रताप रघुवीर को ॥११६॥

॥ पुनः ॥

बन्दन बिसाल भाल भूषित गणेश धोखें, देवी देव दौरै
कत बर गुन गाथ के । राज बंस मानौ ये न दिग्गज कुमार
फैले, गुञ्जरत बगर सँवारे सुभ साथ के ॥ राजहंस भूले ये
न सावन घटा के घेर, लछिराम रंग ये न ढारे रङ्ग नाथ के ।
झरना झरत ये न मरकत मन्दर हैं, राजै मद मंडित मतङ्ग
रघुनाथ के ॥११७॥

॥ अथ छेका पन्हति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सङ्कित सत्य पदारथै, दुरवै ब्योत विचार ।
छेका पन्हति भूषनै, बरनत रस अवतार ॥११८॥

॥ यथा कवित्त ॥

झहरात बीजुरी लों जरद बसन छोरै, माधुरी हंसनि
मौज ओज धनु बर को । बलाक वृन्द हार हीरा मो-

तिन के, सजल धवन सङ्ग स्वेद के लहर को ॥ बाँहें बल
शङ्कर सरासनै जवासो कच्यो, लछिराम हेरत परसराम भर
को । विमति सों बूझ्यो राम स्याम घन कौसो, बोल्यो बरनत
चिरद विलास जलधर को ॥११९॥

॥ पुनः ॥

- सौरभित सुन्दर सिँगार त्रिभुवन सुर, सुन्दरी विहार
अङ्ग मङ्गलीक मत को । लछिराम तीनों ताप हरत हरप
मान, परम प्रकाश चारु चन्द्रिका के सत को ॥ गङ्ग लों पृ
नीत गज गौहर हरा लों आव, सुमति सों बूझ्यो भृगुनन्द
भाल रत को । सीरो सम हीरो कौन रामचन्द्र जस, राम व
रनत चिरद मलैज परवत को ॥१२०॥

॥ अथ कैतवा पन्हुति अलङ्कार बणन—दोहा ॥

ओरे मिस जहँ और को, धरनै धवन विलास ।
कैतव पन्हुति सिद्धि कहँ, अलङ्कार मुद भास ॥१२१॥

॥ यथा सभैया ॥

लालिमा श्री तरवान की तेज में, सारवा लों सुखमा की
निशेनी । नैपुर नील मनीन जड़े, जमुना जगे जौहर में सुख
वेनी ॥ यों लछिराम छटा नख नौल, तरङ्गिनी गङ्ग प्रभा
फल पेनी । मेधिली के चरनाम्बुज ब्याज, लसै मिथिला
मग मंजु त्रिवेनी ॥१२२॥

॥ यथा कथित ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक रदन मोती, जोड़े लाल अ
धर सुरङ्ग अनुमाने को । डोरे नैन मानिक फटिक मनि से

तताई' नीलम चुनीन पूतरीन परमाने को ॥ लछिराम ख्योर
कासमीर भाल पोखराज, रङ्ग मङ्गलीक मरकत वर माने को ।
रामचन्द्र वदन के व्याज मिथिला में खोल्यो, मदन जवा-
हिरी जवाहिर खजाने को ॥१२३॥

॥ पुनः ॥

अतुल अमोल भुज बल को न वारा पार, भूषण मनीन
के सभाग सरसत हैं । रेखित हथेली आव आंगुरी नखन
पर, पूतरी महीपन अतंकि परसत हैं ॥ कवि लछिराम दान
धारा भूम धाम हेरि, मङ्गलीक मेघ साहिबी को तरसत हैं ।
रामचन्द्र कर मिस कामद कल्प तरु, चान्यो फल बारहौ
महीने बरसत हैं ॥१२४॥

॥ अथ उत्प्रेक्षालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वस्तु हेत फल में जहां, सम्भावना सतर्क ।

उत्प्रेक्षा भूषण तहां, बरनत हैं मति अर्क ॥१२५॥

द्वै प्रकार गनि वस्तु में, प्रथम उक्त अनुमान ।

फिरि अनुक्त विषया कहत, उत्प्रेक्षा गुनमान ॥१२६॥

हेत फलहु में या विधै, जुगल रीति दरसाय ।

सिधि असिद्धि विषया सहित, उत्प्रेक्षा सरसाय ॥१२७॥

॥ अथ उक्त विषया वस्तोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

जोग वस्तु सम बरनि जहँ, ताहि उक्त परिमान ।

जहँ अजोग कल्पित सुतहँ, वस्तु अनुक्त बखान ॥१२८॥

॥ यथा सवैया ॥

शम्भु सरासनै तोन्यो सनाल सो, भाल विसाल प्रताप

सोहावै । त्यों लछिराम स्वयम्बर में, मिथिलेस अनन्द अमात
न छावै ॥ राम गरे जयमाल के वेत, सु मैथिली यों समता
सरसावै । मानौ रमा रतनाकर में, रतनावली श्री हरि को
पहिरावै ॥१२९॥

॥ पुन ॥

ख्याल में कछ के नाल सों तोच्यो, सरासन शङ्कर को
विकराल है । मैथिली के पहिरावत में, लछिराम सन्यो शुभ
आनैव जाल है ॥ मण्डित मौज स्वयम्बर में, लसै राम गरे
यों सरोज की माल है । मानौ कलाधर के हियरे, नखतावली
बेषित धारिव लाल है ॥१३०॥

॥ यथा कविव ॥

मनरथ सोंहैं मिथिलेस राजमण्डल में, आगमन जैसो
मुनि सग ते जरत कों । नगर डगर नौल धिरव धितान धर,
धगर स्वयम्बर सुमेर परवत कों ॥ लछिराम रामचन्द्र लखन
सुभाष सील, सगुन सुरूप यों सराहिबो सुमत कों । अवन
धवन दूत धचन धिलास धीवें, राध दसरथ मानौ कन्द सर
धत कों ॥१३१॥

॥ पुनः ॥

मान्यो मान मौज धीप धीपन महीपन को, फह्यो नि
सात रघुधंस अमरेस को । छूट्यो सङ्ग मैथिली नगर मिधि
लेस दूट्यो राम कर कमल सरासन महेस को ॥ लछिराम
लछिमन धिरव धलित दूत, धचन धिदाच्यो तुम दूखव प्र
धेस कों । औध उदयाचल सिंहासन पे मानो, परभात पर
माकर धवन अवधेस के

॥ अथ अनुक्त विषयावस्तोत्प्रेक्षा—यथा कवित्त ॥

सोधि शुभ लगन महीप दसरथ बेस, अवध नगर संजे
सुभग बरात हैं । लछिराम गरजे नगारे धूमधाम सङ्ग, चतु-
रङ्ग चमू तैं असुर थहरात हैं ॥ बिसद हरीरे हीरे मानिक
जटित कारे, पीरे लाल रङ्ग यौं निसान फहरात हैं । दीने
मघवान मंजु मानौ गजरथ पर, पँचरङ्ग चौर आसमानी
लहरात हैं ॥१३३॥

॥ पुनः ॥

मङ्गलीक राव दंसरथ की बरात सजी, बैरी थहरात रघु-
बंसिन की भीर तैं । कवि लछिराम गंज गरजे निसान बान,
बिछले भिरत बाजि गवन समीर तैं ॥ मंडित सिखर भाल
मचले मतङ्ग झूमै, भौर मननात मद नदन गँभीर तैं । सुं-
डन फुहारे दै भसुण्डन उठावै मानौ, आवै कड़े दिग्गज कु-
मार कासमोर तैं ॥१३४॥

॥ सवैया ॥

मान गयो मघवान को भूलि, लखे दसरथ बरात छटा
है । फूल घने बरसैं मुद मै, रचैं देव बधूटी विमान अटा
है ॥ लाल अमारी मतङ्गन पै, लछिराम करै समतान कटा
है । आवत कज्जल मेरु मनौ, चढ़ी पच्छिमी नौल गुलाली
घटा है ॥१३५॥

॥ पुनः ॥

मोर लों मंजु नचैं धरनी पर, मण्डित फैन लगाम उमा
हैं । कान के बीच लसैं कौंसी, फिरैं त्यौर तिरीछी अलात

अदा हैं ॥ काम कबूतर लों लछिराम, छल्ले यों अटेरन की
परमा हैं । याजि थली रघुवसिन के, मनौ सूरज के रथे मू
मन चाहैं ॥१३६॥

॥ भय हेतल्लेसा अलङ्कार पणन—बोरा ॥

कथन जोग सम सम्भवित, सिद्धि विषय सो हेत ।
धरने कवि कोषिद सर्वे, गृह्यन धीच सचेत ॥१३७॥

॥ भय सिद्धि विषया हेतल्लेसा अलङ्कार पणन—यया कविष ॥

राज बंश भूपन कगर मिथिला के मच्यो, धूम धाम न
गर यितान यों गरव सों । झमके मतङ्ग झूमै गरजे नगारे
नौल, छपि रहे देव धरछेतन विरव सों ॥ विसद सुवेय
भेंठ्यो मिथिलेस लछिराम, राव दसरथ मिल्यो वसन जरव
सों । चन्द्रिका परस पान हेत में सुधाके मानौ, मघवान मि
लत सुधाकर शरव सों ॥१३८॥

॥ पुनः ॥

धोलत नकीव नौल फहरे निसान ऊंने, द्वारचार भीर
दुहुं दल भराभर सों । मङ्गलीक धाजे घजे गरजै मतङ्ग तैसे,
लछिराम रङ्ग रतनाकर लहर सों ॥ अङ्ग में भरत मिथिलेस
दसरथ अूको, ता समे धिलास रूप आनँद अमर-सों ।
मानौ रवि चन्द की मरीचिन मजेजै मिल्यो, सुरगुर-सोंहैं
उक्याचल सिपर सों ॥१३९॥

॥ सबैया ॥

सोर पन्यो मिथिलापुर में घजी, दुन्दुभी वीह विनोद घगा
रो । साख गौरी गनेस महेस, असीसत उन्नत हाथ पसारो ॥

रामको यौं दसरत्थ रहे, मुख चूमि गरे लपटाय निहारो । छी-
रधि मंजु सओज मनौ, भन्यो अङ्ग समौज कलाधर वारो ॥

॥ पुनः ॥

मौज मई मिथिलापुर में, चतुरङ्ग चमू सजि आई व-
रात है । त्यौं उछले में जवाहिर की, लरें टूटै तुरङ्गन के ल-
हरात है ॥ लखन राम को यौं दसरत्थ, लिये निज गोद न
मोद अमात है । ताप मिटाइबे के हित मानौ, पपीहरा स्वा-
ती के बुन्द अन्हात है ॥१४१॥

॥ अथ असिद्धि विषया हेतोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

असम्भवित अकथन जहां, सम तर्कना समेत ।
तहँ असिद्धि विषया कहैं, उत्प्रेक्षा सु निकेत ॥१४२॥

॥ यथा कवित्त ॥

द्वारचार वगर वरात कौसलेस जू की, मच्यो धूम धाम
मिथिलेस के सहर में । कलित प्रसेद मोर झालरें बलित
मुख, जुलफैं लसी त्यौं परिमल के नहर में ॥ चारु गजरथ
पै विराजे रामचन्द्र कछू बिहँसत लछिराम माधुरी गहर
में । मंडित मरीची मारतण्ड सङ्ग भोर खिले, कोकनद मानौ
छविसागर लहर में ॥१४२॥

॥ पुनः ॥

गरजै निसान वान फहरै पताके, देव बरसै सुमन त्यौं
बिमानन प्रसङ्ग तै । लछिराम हीरालाल थार मुकताहल के,
वारै मिथिलेस बेस आनँद अभङ्ग तै ॥ उतरे अमन्द राम-
चन्द्र

धेप रितुराजी सङ्ग धारिद धगर कळ्यो, रसराज मानो रत
नाकर तरङ्ग तै ॥१४३॥

॥ अय फलोत्पेसा वर्णन—दोहा ॥

कथन जोग व्यापार फल, सम सम्भवित प्रधान ।

सिद्धि विषय फल तहँ कहत, उतप्रेक्षाहि सुजान ॥१४४॥

॥ यथा कविच ॥

पाग अलवेली पै सभाग मणि मोर सोहै, कोरें मुक्ता
हल मिलित लाल हीरे में । लछिराम तैसी बेस बदन बहा
ली चढी, धङ्ग चख लाली चारु लखनि गँभीरे में ॥ मिथिलेस
आंगन रँगीलो रामचन्द्र रूप, पीरे लाल स्याम सेत मण्डप
हरीरे में । चन्द फल दीवे हेत विहारे अमन्द मानो, सङ्ग रङ्ग
धनु जलधर के जँजीरे में ॥१४५॥

॥ पुनः ॥

ध्याह धर धानक घसन भार भूपन तै, नखसिख जागे
जोति नवल निकाई में । लछिराम लोने भूमधाम के धिमा
नन तै, धरसे सुमन सुर सुन्दरी भलाई में ॥ रामचन्द्र भरत
लखन शत्रुहन छयि, छलकी परे हँ सौरभित सुधराई में
आगमन मानो मिथिलेस मन सीरे हेत, अङ्गमान चान्योफल
मनि अँगनाइ मे ॥१४६॥

॥ पुनः सर्षपा ॥

दूल्ह धेप विसाल धिनोद मे, चारिहू ओर सुगन्ध स
मीर हे । ये रही आंगन मे मिथिलेस के, आनन राम प्रभा
सु गँभीर हे ॥ सामुहँ लोग छके लछिराम, करी गिरा त्यो

उपमा तदवीर है । देखिवे इन्दु उदै को मनौ, उदयाचल मै
अमरावली भीर है ॥१४७॥

॥ पुनः ॥

श्री रघुनाथ के माथ भली, मनिमौर लसी कलंगी नव-
रङ्ग मै । त्यौं लछिराम दुहूँ कँधा पै, जुलफैँ मुकताहल हार
प्रसङ्ग मै ॥ ता सुखमा की बरावरी कौं, नचैँ भारती नौल
नटीलों उमङ्ग मै । मंजु मनोरथ पूजिवे मानौ, मिली जमुना
वर गङ्ग तरङ्ग मै ॥१४८॥

॥ अथ असिद्धि विषया फूलोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

असम्भवित सम जहँ रचै, तर्क सकल व्यापार ।
तहँ असिद्धि विषया कहत, फल उत्प्रेक्षा चार ॥१४९॥

॥ यथा कवित्त ॥

भूषण वसन रघुनाथ सिय सुन्दरी पै, मण्डित मनीन
लरकत लर हीरे को । कवि लछिराम गल-बांहीं मै सुब्याह
रिति, गोरो स्याम रङ्ग झलकत सुभ सीरे को ॥ मण्डली मु-
नीन की चहूँघां चकचौँधैँ चारु, वारत प्रकास रति मदन गँ-
भीरे को । बांध्यो हित रतन सनाल कञ्ज मानो विधि, मर-
कत मन्दर सुमेर के जँजीरे को ॥१५०॥

॥ पुनः ॥

मिथिलेस मण्डप अखण्ड ओज रासि कैसे, परम प्रकास
छायो बाहिरे महल के । लछिराम राम सिय भांवरैँ भरत
फैलैँ चारु चरनन तैँ तरंगैँ परिमल के ॥ बरसैँ विमानन
तैँ विबुध व

मानो रङ्ग थल फल सङ्गमी सकल चारि, चिकसै कमल सङ्गे
मोती झलाझल के ॥१५१॥

॥ पुनः सबैया ॥

राम को ब्रूलह बेप अनूप, धनी सिय सुन्दरी कोमलता
है । धारों गोराई पै धीजुरी को, सँवराई पै काली घटा कल
सा है ॥ मण्डप भीतर भावरै देत, सही लछिराम रची स
मता है । संग सबै फल के हुलसी, तुलसी में लसी मनो
हेम लता है ॥१५२॥

॥ पुन ॥

आगन में मिथिलेस के यों, रघुनन्वन मैथिली ओज
धिसाल है । भावरै देत प्रभा पद कछ की, फैली फिरै नख
जोतिन जाल है ॥ लाली लसै तल की लछिराम ल्यो, स्या
मता तै प्रतिविम्बित चाल है । संगमी दानि सबै फल की
मनो भूपर चारु त्रियेनी की माल है ॥१५३॥

॥ अथ गम्योत्प्रेक्षासङ्गपर वर्णन—दोहा ॥

धस्तु हेत फल कल्पना, जनो मनो पद हीन ।

गम्योत्प्रेक्षा कहत कोउ, ललित गुप्त परधीन ॥१५४॥

॥ यथा कविच ॥

ख्योर कासमीरी धीच तिलक मल्लेज मंजु, मनि मोर
कल्लंगी मरोर भाल थल में । कण्ठा कण्ठमाळ हीरे लाल गज
गौहर के, धदन धहाली लाली शान ओठ कल में ॥ मिथिलेस
भोन लछिराम सुर मुनि सोहं, दूटी परें धगर धधूटी प्रेम थल
में । जिते ख्व फेरत विभंसि राम, जिते, चन्द्र मारतण्ड
की मरीची झलाझल

॥ पुनः ॥

भूपन विसाल हीरा लाल मनि मोती माल, कङ्कन क-
लित कर मुद्रिका प्रभा की हैं । लछिराम राम अङ्ग स्याम घन
रङ्ग पर, जुलफें जँजीरेदार पुञ्ज परमा की हैं ॥ छोरें सेत पट
फहरीली मन्द गजगौन, सारद मरोरें मन मौजें समता की
हैं । मरकत मन्दर पै सङ्गमी रतनहार, नहरें तरङ्गदार गङ्ग
जमुना की हैं ॥१५३॥

॥ अय रूपकातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ वरनत उपमान के, वर्णनीय अवतार ।

अतिशयोक्ति रूपक तहां, प्राचीनन मत चार ॥१५७॥

॥ यथा कवित्त ॥

मिथिलानगर वसीकरन सुरूप जासु, विरद बितान छा-
यो नखत नरेस को । कबि लछिराम सिरमोर है स्वयम्बर में,
करिकै कल्प-तरु कुल कौसलेस को ॥ पान्यो सोर चौदहो
भुअन सिसुपन सूभो, राख्यो प्रन मैथिली समेत मिथिलेस
को । कमल सनाल में झमकि झकझोन्यो तोन्यो, देहधारी
मदन सरासन महेस को ॥१५८॥

॥ पुनः ॥

माधुरे मुखर में अतङ्ग त्रिभुअन छाय, बगराय विरद स्व-
बम्बर कगर में । पल्लवित साखैं सुरतरु फरकाय फन्द, मौजन
मचाय राजवंस के बगर में ॥ सींचे बल वारि सों प्रवेस कै
स्वदेस निमि, लछिराम नौल ब्रह्म तेज के रगर में । बीजू-
री बलित लै कुमार अमरेस तोन्यो, स्याम घन सम्भु धनु
मिथिलानगर में ॥१५९॥

॥ पुनः सबैया ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूषण भार बहार मै तारे ।
रूप भन्यो नख तै सिख लौ धनु धान लसै कर मै गज
रारे ॥ है घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी विधि साँच मै
बारे । श्री दसरथ के सामुहे मै, गजरथ पै चारि कलाभ
वारे ॥१६०॥

भूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्य क्यो ऊपर प्रेम ह
लारे । खलन कीर कपोत लसै, मुक्ता लर बास विलास
विधारे ॥ मण्डित कल सनाल कितै, लछिराम तिहूपुर के
चित चारे । कौसिला सामुहै हेम लता, धरु धारी सु ब्रह्म
किये गठि जारे ॥१६१॥

॥ भय साप रसातिशयोक्ति मलङ्कार वणन—दोहा ॥

मिलित अपन्हय होय जहँ, उच्छ्रेक्षा मै धीर ।

सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, धरने कवि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कविच ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक बहार सग, परखत कौंधे कर
सौरभ सदन है । लछिराम अधर घहाली तै धवन धर, वा-
हिम के दाने अमी अघली रदन है ॥ अनमोल गोल पुन्यो
चिन्तामणि धारसी लौ, अङ्ग हीन तुले फत धापुरो मदन है ।
तारे मंद अम्यर सराहँ सुर भूलि चारु, चन्द्रिका धलित रा
मचन्द्र को धदन है ॥१६३॥

॥ भय भेदकातिशयोक्ति मलङ्कार वणन—दोहा ॥

औरे शब्दन की जहाँ, उतकर्पता सुधेस ।

अतिशयोक्ति भेदक तहाँ, नूत सुकवि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा क्वचित् ॥

गुह्यरत मांते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ
सौरभ नेहर की । लछिराम तापर झमेले रघुवंशिन के, औरै
कला लखन बघेले अगहर की ॥ तीर भीर नाग नर देव के
विमानन तैं, औरै धूमधाम रामनङ्ग के लहर की । कल्पलता
मैथिली प्रमोद बन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के
सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान षान औरै, औरै अमनैकी ह-
नूमान बलवान की । द्विविधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ
औरै छटा अंगद विभीषन सभान की ॥ लछिराम रतन सिं-
हासन प्रमान औरै, षेड़ अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की ।
दान सनमान सान बिरद बितान औरै, औरै आनि बानि
कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफैं जँजीरेदार, हीरा लाल मोती
हार जौहर सँवारे में । करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम,
लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में ॥ मंगलीक वदन बिलास
लछिराम औरै, कलँगो मरोर मौर भाल सजवारे में । औरै
आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुवान राम
कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र वदन बिलोकि व्याह वानक में, मंगलीक औ-
रई उछाह सरसत हैं । दशरथ ~~के~~ लला समित्रा केकई के

॥ पुनः सर्वथा ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूषण भार बहार में तारे ।
रूप भन्यो नख तै सिख लों धनु घान लसै कर में गज
रारे ॥ है घन रङ्ग है स्वम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी-विधि सांच में
ढारे । श्री वसरत्य के सामुह्ये में, गजरत्य पै चारि कलापर
घारे ॥१६०॥

भूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्द अ्यों ऊपर प्रेम ह
लोरै । खल्लन कीर कपोत लसै, मुक्ता लर वास धिलास
धियोरै ॥ मण्डित कल्ल सनाल कितै, लछिराम तिहूपुर के
चित चोरै । कौसिला सामुह्ये हेम लता, धपु धारी सु ब्रह्म
किये गठि ओरै ॥१६१॥

॥ अथ सापन्द्वातिशयोक्ति भङ्गद्वार वर्णन—दोहा ॥

मिलित अपन्हव होय जहँ, उच्छ्रेक्षा में धीर ।

सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, धरनें कवि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कथित ॥

माधुरी हैंसनि हार हीरक बहार संग, परखत कौषि कर
सौरभ सदन है । लछिराम अधर बहाली तै बचन धर, वा-
ङ्गिम के दाने अमी अषली रबन है ॥ अनमोल गोल चुन्पो
चिन्तामणि आरसी लों, अङ्ग हीन तुलै कत थापुरो मदन है ।
तारे मंद अम्बर सराहै सुर भूलि चारु, चन्द्रिका धलित रा
मचन्द्र को वदन है ॥१६३॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति भङ्गद्वार वर्णन—दोहा ॥

ओरै शब्दन की जहाँ, उत्कर्षता सुवेस ।

अतिशयोक्ति भेदक तहाँ, मानत सुकवि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा कवित् ॥

गुञ्जरत माते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ
सौरभ नहर की । लछिराम तापर झमेले रघुवंशिन के, औरै
कला लखन बघेले अगहर की ॥ तीर भीर नाग नर देव के
विमानन तै, औरै धूमधाम रामरङ्ग के लहर की । कल्पलता
मेथिली प्रमोद बन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के
सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान पान औरै, औरै अमनैकी ह-
नूमान बलवान की । द्विविधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ
औरै छटा अंगद विभीषन सभान की ॥ लछिराम रतन सिं-
हासन प्रमान औरै, ऐंड अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की ।
दान सनमान सान बिरद बितान औरै, औरै आनि बानि
कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफें जँजीरेदार, हीरा लाल मोती
हार जौहर सँवारे में । करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम,
लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में ॥ मंगलीक बदन बिलास
लछिराम औरै, कलंगी मरोर मोर भाल सजवारे में । औरै
आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुवान राम
कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र बदन विलोकि ब्याह बानक में, मंगलीक औ-
रई उछाह सरसत हैं । दशरथ सौसिला सुमित्रा केकई के

॥ पुनः सर्वेषा ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूपन भार बहार मै तारे ।
रूप भन्यो नख तै सिख लौ धनु धान लसै कर मै गज
रारे ॥ है घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी विधि सांघ मै
बारे । श्री वसरत्य के सामुहे मै, गजरत्य पै चारि कलापर
धारे ॥१६०॥

भूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्द ज्यों ऊपर प्रेम ह
लोरै । खल्लन कीर कपोत लसै, मुक्ता लर वास विलास
धियोरै ॥ मण्डित कल सनाल कितै, लछिराम तिहुँपुर के
चित चोरै । कौसिला सामुहै हेम लता, धपु धारी सु ब्रह्म
किये गठि जोरै ॥१६१॥

॥ अथ सापन्ववातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

मिलित अपन्हव होय जहँ, उस्प्रेक्षा में धीर ।
सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, धरने कधि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कश्चित् ॥

माधुरी हँसनि द्वार हीरक बहार सग, परखत कौंधे कर
सौरभ सदन है । लछिराम अधर बहाली तै वचन धर, वा-
दिम के दाने अमी अवली रदन है ॥ अनमोल गोल चुन्यो
चिन्तामणि धारसी लौ, अङ्ग हीन तुलै कत धापुरो मदन है ।
तारे मंद अम्बर सराहँ सुर भूलि चारु, चन्द्रिका थलित रा
मचन्द्र को धदन है ॥१६३॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति भसङ्कार वर्णन—दोहा ॥

औरै शब्दन की जहाँ, उतकर्पता सुधेस ।
अतिशयोक्ति भेदक तहा, मानत सुकधि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा कवित् ॥

गुह्यरत माते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ
सौरभ नहर की । लछिराम तापर झमेले रघुवंशिन के, औरै
कला लखन बघेले अगहर की ॥ तीर भीर नाग नर देव के
विमानन तै, औरै धूमधाम राममङ्ग के लहर की । कल्पलता
मेथिली प्रमोद बन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के
सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान षान औरै, औरै अमनैकी ह-
नूमान बलवान की । द्विविधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ
औरै छटा अंगद विभीषन सभान की ॥ लछिराम रतन सिँ-
हासन प्रमान औरै, एंड अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की ।
दान सनमान सान विरद बितान औरै, औरै आनि बानि
कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफें जँजीरेदार, हीरा लाल मोती
हार जौहर सँवारे में । करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम,
लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में ॥ मंगलीक वदन विलास
लछिराम औरै, कलङ्गी मरोर मौर भाल सजवारे में । औरै
आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुवान राम
कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र वदन विलोकि व्याह बानक में, मंगलीक औ-
रई उछाह सरसत हैं । दशरथ कौसिला सुमित्रा केकई के

मन, लछिराम औरई प्रकास परसत हैं ॥ विबुध बधूटी झरें
औरई सुमनहार, औरई अदा सों अमरेस वरसत हैं । औरई
खजाने खुले अग्रध नगर घर, औरै भांति होरा लाल मोती
घरसत हैं ॥१६८॥

॥ अथ सम्यन्धातिशयोक्ति अलङ्कार षण्ण—दोहा ॥

जहैं अजोग मै जोग की, करै कल्पना धीर ।

सम्यन्धातिशयोक्ति तहैं, प्रथम कहत गम्भीर ॥१६९॥

॥ यथा कवित्त ॥

गुह्यरत कुह्यर कुलेल मै नगर घर, मानि घन मंडल
मयूर खटकत हैं । कोकिल कपोत कीर मन्दिर कलस चढ़े वे
ध गङ्ग नीर तें समीर भटकत हैं ॥ लछिराम उन्नत पथिले
फहरात नील कारे हरे पीरे लाल नग लटकत हैं । विबुध
बधूटी आनि हेरें आसमान छोड़ि, घगरे यिमान मै निसान
भटकत हैं ॥१७०॥

॥ पुनः ॥

खेलत कुमार लै कुमार गंजराजन के, करत कुलेल
गुह्यज कगर पै । कवि लछिगम नील धूमधामं के निसान
फहरात नौरंग समीर की लहर पै ॥ रामचन्द्र सुभग सिंहा
सन लसत जाग्यो, अजय अमन्द ओज धाहिरे नगर पै ।
परकाय चन्द्रिका सघन धीजुरी को चूमि, नचत मयूर माते
मन्दिर सिखर पै ॥१७१॥

॥ द्वितीय षण्ण—दोहा ॥

तजहिं जोग मै कल्पना, करि अजोग निरसङ्ग ।

सम्यन्धातिशयोक्ति तहैं, वृजी लखि सुभ अङ्ग ॥१७२॥

यथा सर्वैया ॥
 कानन कुञ्ज प्रमोद बितान भरे, फलफूल सुगन्ध विधानै ।
 वावली के अरविन्दन पै, मकरन्द मलिन्द सने सुभ गानै ॥
 ल्यौं लछिराम तरंगन तै, सरजू के कड़े सुर साजि बिमानै ।
 ओधपुरी महिमा यौं चितै, अमरावती को हम क्यों सनमानै ॥

॥ पुनः ॥

सान भरे भुजदण्ड अखण्ड, तिहूँ पुर मण्डन मान भरै
 को । आंगुरी वै अलकेस धनी, सनी मौजन में अनुमान
 अरै को ॥ यौं नखभा लछिराम लखै, नखतावली के परमानै
 धरै को । श्री रघुनाथ के हाथन सामुहै, कल्पलता सनमान
 करै को ॥१७१॥

॥ अथ अक्रमातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

कारन कारज सङ्ग जहँ, अक्रम बरन न होय ।

अक्रमातिशयउक्ति तहँ, भाषत हैं सबकोय ॥१७५॥

॥ यथा कवित्त ॥

बलवान विरद अखण्ड महीमण्डल पै, मण्डित महान
 फैल्यो तरनि के तेजे में । लछिराम राख्यो धूमधाम के समर
 बीच, भौहँ करि भङ्ग दल दारुन दरेजे में ॥ त्रिभुअन ता
 समै निहारि आचरज दाबै आंगुरी दसन बरबस नवरेजे में ।
 वान रघुवीर के लगत एकवार ही में, रोदे पै कमान कोरै
 असुर करेजे में ॥१७६॥

॥ पुनः ॥

चमू चतुरङ्गिनी चपल चढ़ी रावन की, सावन घटा लों
 सनी रोष रत्न रङ्ग तै । वानर विराट भालु वांकरे लखन

सङ्ग, घोर घन घोलें वेन वीरता प्रसङ्ग तैं ॥ लछिराम सौं हैं
मट भेरे गजरथ कटैं, क्रोधानल फेटे रामचन्द्र भौं हैं भङ्ग
तैं । समर झमेले में झमकि एकधार कटैं, म्यान तैं कृपान
प्राण अरिगन अङ्ग तैं ॥१७७॥

॥ अथ चपलातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुनतहिं नाम प्रसङ्ग के, सिद्धि काज अनयास ।

गनि चपलातिशयोक्ति तहैं अलङ्कार सबिलास ॥१७८॥

॥ यथा सवैया ॥

मण्डल राव मुनीसन के, जुवराजी कथा मुद में अकट्टे
हैं । स्यो लछिराम तिरहुपुर में, द्विज वेधन के मन मान बड़े
हैं ॥ तेई सवै पुर धीयिन में, अब केकई के घरवान पड़े हैं ।
कानन राम पयान सुने, वसरत्थ के प्राण विमान चड़े हैं ॥

॥ पुनः ॥

पञ्चवटी के, विहङ्ग उमङ्ग में, धोलत धानी सुधारस
घूटे । स्यो लछिराम अवेध ललाट तैं, आयु की रेख के अङ्ग
वे छूटे ॥ आसुरी हाथन तैं पल एक में, भाग सोहाग के
भाजन फूटे । आगम श्री रघुनाथ सुने, मुनि मण्डली के मन
बन्धन टूटे ॥१८०॥

॥ अथ अत्यन्तातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

क्रम पूरव पर को जहां, अति अनमिल विपरीति ।

अत्यन्तातिशयोक्ति सो, घरनैं बुध करि शीति ॥१८१॥

॥ यथा कवित्त ॥

अजब अखण्ड धाहैं धलित लतालों वसी, मण्डित धि
रद मारु मध्र भा मढ़ति है । परम निसङ्ग पान कीवे को

रुधिर चाह, लछिराम साहस अभङ्ग मैं बढ़ति है ॥ रन रङ्ग
बीच रावरी कृपान रामचन्द्र, बङ्ग बाढ़ि फन पै बहाली यों
बढ़ति है । प्राण पहिलेही हरै असुर सँघातिन के, पीछे पन्न-
गी लों म्यान बामी तैं कढ़ति है ॥१८२॥

॥ पुनः ॥

भान बंस भूषन सिरोमनि सुभट कीनो, लङ्क पै अतङ्क
भरी देवन अकस तैं । गजरथ वाजिन गरजि महाबीर मही
पटकै लपेटिकै लँगूर छोर कस तैं ॥ धूमधाम ऐसी रामचन्द्र
धीरता की मची, लछिराम रावन सरोष सरकस तैं । बैरी
मिलैं गरद भरोरत कमान गोसे, पीछे कढ़ैं बान तेजमान
तरकस तैं ॥१८३॥

॥ अथ तुल्य योगता अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

चतुर चतुरविधि कहत हैं, लुप्त योग्यता चार ।
बर्न्यन्य को जहँ धर्म एक, प्रथम कहत व्यापार ॥१८४॥

॥ यथा कवित्त ॥

रावन महीप चतुरङ्गिनी चमू लैं चढ्यो, ह्यै रह्यो अतङ्क
बङ्क रोदा ठनाठन मैं । लछिराम जोगिनी जमाति भूत सङ्क
नाचैं, शङ्कर उसाचिन अभङ्ग प्रेस धन मैं ॥ प्रवल प्रचण्ड
भुज दण्ड फरकन लागे, खड़क निकोरैं बान तरक से छन
मैं । लखन समत्थ वीर बानर विराट भालु, रघुवीर प्रफुलित
होत रन वन मैं ॥१८५॥

॥ पुनः सर्वैया ॥

सूकर स्यार कुरङ्ग मतङ्ग, मिलैं मुनि देवन की अवली
मैं । जोगी जती तपसी लछिराम, वरै परी किन्नरी भांति

सङ्ग, घोर घन धोलें बैन धीरता प्रसङ्ग तैं ॥ लछिराम सोई
मट मेरे गजरथ कटैं, क्रोधानल फेटे रामचन्द्र भोई मङ्ग
तैं । समर झमेले में झमकि एकवार कहैं, न्यान तैं हृपाल
प्राण अरिगन अङ्ग तैं ॥१७७॥

॥ भय षपलातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुनतहिं नाम प्रसङ्ग के, सिद्धि काज अनयास ।

गनि षपलातिशयोक्ति तहैं अलङ्कार सविलास ॥१७८॥

॥ यथा सवैया ॥

मण्डल राव मुनीसन के, जुवराजी कथा मुद में अकळे
हैं । त्यो लछिराम तिरुपुर में, द्विज वेधन के मन मान षडे
हैं ॥ तेई सवै पुर धीधिन में, अथ केकई के घरवान पड़े हैं ।
कानन राम पयान सुने, वसरथ के प्राण धिमान चड़े हैं ॥

॥ पुनः ॥

पञ्चवटी के विहङ्ग उमङ्ग में, धोलत धानी सुधारस
घूटे । त्यो लछिराम अवेध ललाट तैं, आयु की रेख के अङ्ग
वे छूटे ॥ आसुरो हाथन तैं पल एक में, भाग सोहाग के
भाजन फूटे । आगम श्री रघुनाथ सुने, मुनि मण्डली के मन्
धन्धन टूटे ॥१८०॥

॥ भय अत्यन्तातिशयोक्ति असङ्कार वर्णन—दोहा ॥

क्रम पूरव पर को जहा, अति अनमिल विपरीति ।

अत्यन्तातिशयोक्ति सो, वरनें धुध करि प्रीति ॥१८१॥

॥ यथा कवित्त ॥

अजव अस्वण्ड याहैं धलित लतालों वसी, मण्डित बि
रद मारू मङ्ग भा मङ्गति है । परम निसङ्ग पान कीये को

रुधिर चाह, लछिराम साहस अभङ्ग मैं बढ़ति है ॥ रन रङ्ग
 बीच रावरी कृपान रामचन्द्र, बङ्ग बाढ़ि फन पै बहाली यों
 बढ़ति है । प्रान पहिलेही हरै असुर सँघातिन के, पीछे पन्न-
 गी लों म्यान बामी तैं कढ़ति है ॥१८२॥

॥ पुनः ॥

भान बंस भूषण सिरोमनि सुभट कीनो, लङ्क पै अतङ्क
 भरी देवन अकस तैं । गजरथ बाजिन गरजि महाबीर मही
 पटकै लपेटिकै लँगूर छोर कस तैं ॥ धूमधाम ऐसी रामचन्द्र
 बीरता की मची, लछिराम रावन सरोष सरकस तैं । बैरी
 मिलैं गरद भरोरत कमान गोसे, पीछे कड़ै बान तेजमान
 तरकस तैं ॥१८३॥

॥ अथ तुल्य योगता अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

चतुर चतुरविधि कहत हैं, लुप्त योग्यता चार ।
 बर्न्यन्य को जहैं धर्म यक, प्रथम कहत व्यापार ॥१८४॥

॥ यथा कवित्त ॥

रावन महीप चतुरङ्गिनी चमू लै चढ्यो, ह्वै रह्यो अतङ्क
 बङ्क रोदा ठनाठन मैं । लछिराम जोगिनी जमाति भूत सङ्क
 नाचैं, शङ्कर उमाचिन अभङ्ग प्रेम धन मैं ॥ प्रवल प्रचण्ड
 भुज दण्ड फरकन लागे, खडक निकोरैं बान तरक से छन
 मैं । लखन समत्थ वीर बानर विराट भालु, रघुवीर प्रफुलित
 होत रन बन मैं ॥१८५॥

॥ पुनः सर्वैया ॥

सूकर स्यार कुरङ्ग मतङ्ग, मिलैं मुनि देवन की अवली
 मैं । जोगी जती तपसी लछिराम, वरें परी किन्नरी भांति

भली में ॥ श्री रघुनाथपुरी की प्रभा, सरजू के तरङ्ग तैं सँ
गली में । सिद्धि सुरापी असन्त औ सन्त, विमान घड़े लसै
व्योम थली में ॥१८६॥

॥ द्वितीय षण्ण—दोहा ॥

धर्म अवर्ण्य को जहाँ, एकै विधि ठहराय ।
तुल्य योग्यता दूसरी, धरनत सब कविराय ॥१८७॥

॥ यथा कवित्त ॥

अमल अमोल गोल कोमल कपोल पर, आरसी अमन्द
दल कमल ठगत हैं । लछिराम ल्पेचन सुरङ्ग मंगलीक मीन,
वारे खल्लरीट धन हरिन डगत हैं ॥ सौरभिन धवन समोज
विहँसत चारु, वचन विलास रामचन्द्र के जगत हैं । दाढ़िम
अमी के दाख माखन मधुर मधु, कन्द मिसिरी के फन्द फीके
से लगत हैं ॥१८८॥

॥ तृतीय षण्ण—दोहा ॥

जहँ अवर्ण्य अरु धर्ण्य को, धर्म एकई साज ।
तुल्य योग्यता तीसरी, धरनत कवि सिरताज ॥१८९॥

॥ यथा कवित्त ॥

नैन विकसीले मंग भूधन मरोर कोरें, भाल पै विसाल
ओज वै रङ्गो गहर में । फरकत जुगल जसीले भुज आठौ
आस, धदन सरोज यौ, बहली, सोज, लर में ॥ लछिराम आ-
नैद अभग रंग धीर सम, रात्र रामचन्द्र धीरताई की लहर
में । धिरद धहार संग बैरी हित अग पर, हार ओ सुरंग
साल वेत मुद धर मै ॥१९०॥

॥ अथ चतुर्थभेद वर्णन—दोहा ॥

करै वर्य्य समता सगुन, व्यापारादिक संग ।

तुल्य योग्यता चौथई, बरने प्रेम उमंग ॥१९१॥

॥ यथा सर्वैया ॥

मंगल रासि महेस हो तूं, अमरेस हो तूं सिगरे परमा-
ने । तीनहू लोकन मै अलकेस, धरे लछिराम तूं दान के
बाने ॥ पूरन ब्रह्म विरञ्चि तूहीं, गुन मै सुगनेस गिरा सन-
साने । छीर समुद्र गँभीर हो तूं, बलबीर हो तूं रघुबीर
सयाने ॥१९२॥

॥ अथ दीपकालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अवर्न्य अरु वर्य्य को, गुन करि एक प्रभाव ।

अलङ्कार दीपक तहां, भाषत पण्डित राव ॥१९३॥

॥ यथा कवित्त ॥

चिरद अखण्ड भुजदण्डन प्रचण्ड बल, मण्डन करन ल्यो
विलास विकसत हैं । अजब अतङ्क त्रिभुवन में असङ्क फैल्यो,
रन बन सामुहे उमङ्क उमसत हैं ॥ जैतवार सुखद सराहै
छिराम कैसे, वार में अचूक वार पार हुलसत हैं । मद सौं
मतङ्क जङ्क बाज मृगराज राम, रघुवंस भूषन प्रताप सौं ल-
सत हैं ॥१९४॥

॥ अथ दीपकावृत्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुकवि दीपकावृत्ति को, बरनत तीनि प्रकार ।

प्रथम सुआवृत्ति पद फिरे, पदावृत्ति निरधार ॥१९५॥

॥ प्रथम पदावृत्ति यथा—कवित्त ॥

गरजें नगारे लोल गरजें, चक्र वर, वीरनपै वांकुरे बहा-

ली घबलति हैं । लछिराम रथ घाजि नट के घटा से नथें,
 सूरज के रथ की प्रमाली प्रचलति हैं । रामचन्द्र सोई बरठे-
 ती रघुवसिन की, हेरि हेरि आसुरी सिखर मचलति हैं ।
 तव तव हलचल होत त्रिभुवन भारी, जब जय चमू कतु
 रङ्गिनी चलति हैं ॥१९६॥

॥ भय अर्थावृत्ति यथा—दोहा ॥

जबहिं अरथ की आश्रिते, फिरि फिरि पद में हेरि ।
 दीपक अरथा वृत्ति तहैं, धरनत बुधवर टेरि ॥१९७॥

॥ यथा कवित्त ॥

सातौ दीप अजब अतङ्क सरसाय धड़ो, धगर विराट
 वेप विरव धगारै तू । लछिराम सान में सुमन खिले डेवन
 के, असुर धितान पर गजब गुजारै तू । सिरमौर भीर भान
 वंस अथतंस राम, जय चमू चारु चतुरङ्गिनी सँवारै तू । धि
 कसै सितारे फलै कुमुद कलीन फोरि, वार पार अन्धकार
 मार अवतारै तू ॥१९८॥

॥ भय वृत्तीय पदार्थावृत्ति वर्णन—दोहा ॥

पद अरु अर्थ बुहन की, आवृत्ति फिरि फिरि होय ।
 कहत पदार्थावृत्ति तहैं, दीपक आवृत्ति जोय ॥१९९॥

॥ यथा कवित्त ॥

करिके कुलेल मनकारत जँजीरै जोर, उन्नत भसुण्ड नीर
 छोड़त फुहारै से । लछिराम राव रामचन्द्र के नगर घर, की
 यिन धगर धीच आनँव पसारै से । धारै मद बहत झरत
 झरना से सजे, घदन अमन्द महा मन्दर सँवारै से । गुम्हारत

झमकैँ मतंग मतवारे मंजु, गुञ्जरत झमकैँ मलिन्द मत-
वारे से ॥२००॥

॥ अथ प्रतिवस्तुपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जबहिँ दुहुन को वाक्य बल, कीजै एक समान ।

प्रतिवस्तुपमा भूषनै, तहँ बरनत मतिमान ॥२०१॥

॥ यथा सर्वथा ॥

सागर श्री मुकातहल सौं, महा मन्दर औषधी लौं
सुभ साजैँ । गङ्ग तरङ्ग लौं तीन्यों धरा, द्विजराज सौं वेदही
सोभ लौं राजैँ । धीर सौं वीर गँभीरता सौं, गुनी यों लछि-
राम सयान समाजैँ । ताप सौं देव दिनेस प्रकास, प्रताप
सौं राम नरेस बिराजैँ ॥२०२॥

॥ अथ दृष्टान्तालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

बरनि बिम्ब प्रतिबिम्ब सम, वाक्य धर्म जुग साज ।

अलङ्कार दृष्टान्त तहँ, परमानत कविराज ॥२०३॥

॥ यथा सर्वथा ॥

माधुरी हास बिलास भन्यो मुख, भाल पै चन्दन ख्योर
सुहावै । त्यों लछिराम खुले कर दान मैँ, कल्प लतान मैँ
मौज न आवै ॥ राम कलाधर की सुखभा लखे, आंखिन को
रुख और न भावै । छोड़ि तरङ्ग सुधासरि को, कोऊ पोखरी
मैँ जल पीवन धावै ॥२०४॥

—॥ पुनः ॥

साहसी सिंह सुन्यो बन मैँ तिमि, लक्खन वीरता जागैँ
विशाल है । कामकी सुन्दरता लछिराम त्यों, मोहिनी मैँ रिपु
दौन की चाल है ॥ सम्भु को दान सुरेस की साहिबी, राम

नरस मै त्यों कर ख्याल है । दीपति सान कलाधर को, लखे
कीरतिमान भरत्य भुआल है ॥२०५॥

॥ अथ निदर्शन अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करि एकैं आरोपिये, जुसम वाक्य जुग अर्थ ।

शब्दनि जो सो मानिये, निदरसना सामर्थ ॥२०६॥

॥ यथा सर्षया ॥

ओज पतङ्ग सरोज विलास, मतोज मै मोहनी रीति
पैसी है । स्वच्छता गङ्ग सुधाकर में, सुधा देवन मै तप रीति
जसी है ॥ मेघ मलैज में सीतलता, लछिराम छमा छवा
सरसी है । बाह बली रघुनाथ के हाथन, धीच सु धीरता आनि
वसी है ॥२०७॥

॥ द्वितीय वर्णन—दोहा ॥

यपि अवर्ण्य के धीच मै, वर्ण्य धर्म करि गौर ।

वर्ण्यहु धीच अवर्ण्य को, थापै तिमि सिरमौर ॥२०८॥

॥ अन्य में अवर्ण्य को धर्म यथा—सर्षया ॥

आनन ओज अमन्द प्रमान, कलाधर मै वही छाह परी
है । बङ्ग विलोचन की लछिराम, प्रकासक लालिमा, कल
करी है ॥ मौज महातम की महिमा, फल कल्प-लता परतीति
धरी है । गौर गैभीरता श्री रघुनाथ की, छीर समुद्र के धीच
भरी है ॥२०९॥

॥ अथ अवर्ण्य में वर्ण्य को एक धर्म, यथा—सर्षया ॥

मानस मंजु मै आनैव भाव, सदा रस एकई की अभि
लाखे । सांकरे में वने खम्भ धरा, अवलम्ब न ओर की
आवत आखे ॥ दूसरी यात गने न कडू, लछिराम प्रमानहि

के रस चाखें । लायक श्री रघुनाथ कृपानिधि, पैज पपीहरा
को मन राखें ॥२१०॥

॥ अथ सद अर्थ असद अर्थ निदर्शना सद अर्थ यथा—दोहा ॥

करै अवस्था सों निजै, भलो बुरो फलदान ।

सासद अर्थ निदर्शना, इमि असदर्थ प्रमान ॥२११॥

॥ सवैया ॥

सन्तनै सींचत हैं सुख चारि सों, जीव ऋषीन को त्यो
रखवारो । आनँद को भरें मोर मुनीन पै, भूमि कृषीन तें
ताप निकारो ॥ चाहिये साहिबी सों जम ऐसई, यों लछिराम
प्रमान हमारो । स्याम घंटा सिख देत यही, रघुनाथ को या
विधि रूप सँवारो ॥२१२॥

॥ अथ असद अर्थ यथा—दोहा ॥

असद जो निज व्यवहार करि, औरन पर धरि ज्ञान ।

तहँ असदर्थ निदर्शना, कविकुल करत प्रमान ॥२१३॥

॥ यथा सवैया ॥

धूरि धुरेटे चपेट परे महि, सङ्ग न कोऊ सहायक गोट
है । भैया सगो भयो बैरी समै लहि, बूडिगयो बल बाहँ उ-
दोत है ॥ और कहा कहिये लछिराम जू, सोई मिलै फल
जाकर चोत है । तारा कही मुख बालि निहारिकै, राम न
जाने को या फल होत है ॥२१४॥

॥ अथ व्यतिरेकालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अवर्ण्य अरु वर्ण्य को, कछु विशेष व्यवहार ।

अधिक न्यून सम भेद विधि तहँ व्यतिरेक विचार ॥२१५॥

॥ अधिक यथा—कविच ॥ १ ॥

सुहृद सरोजन पे बैसई विलास भर, कुमुद कुवाली
तिमि स्रस्पुदित डर सों । कोक मुनि मण्डल असोक अनु-
रागन में, भाग भरे भौर कवि कोयिद अमर सों ॥ लछिराम
राजें रजनीहू में प्रकासित सो, तुलिंगो विचार में बराबरी के
लर सों । मण्डन भुवन महाराज रामचन्द्र कछू, रावरो प्र-
ताप हे विशेष विनकर सों ॥२१६॥

॥ न्यून यथा—कविच ॥

सौरभित सीतल सुधारस घलित घर, कुमुद हिसून पे
सुरूप सों जगत है । लछिराम चहके चकोर जन जीवन पे,
जीवन लौं कर को प्रवाह उमगत है ॥ मङ्गलीक मण्डल म-
नोहर अमल अंस, असुर तमालिने करत धल गत है । मै-
थिली घदन सम कार चन्द पूनो कछू, वासर विलास पर-
उन्नो सो लगत है ॥२१७॥—

॥ अय सय व्यतरेक यथा—सर्वथा ॥

मैंहिं कमान छटा पटपीत पे, जोति जमा जगै जाहिर
नीरे । सङ्गमी सौरभ रासि सुधामई, भूपर फैलत रङ्ग हरी-
रे ॥ बांघत चोलि कथा लछिराम सों, मोर मुनीन के जोर
जैजीरे । स्याम घटा रघुनाथ सुरूप, करै सब के मन मौज
में सीरे ॥२१८॥

॥ अय सशोक्ति अमङ्गार बर्णन—श्लोका ॥

रस भेदित जहैं घरनिये, सय को एके साथ । -

भूपन सुभग सशोक्ति तहैं, परमानत गुन माय ॥२१९॥

॥ यथा सर्वैया ॥

आरत बैन सो दीन दुखी मिल्यो, साहसहू रच्यो सोक
समूरो । भेटत ही भरि अङ्क कलङ्क के, अङ्क मिटाय रच्यो
रन सूरु ॥ राजसिरी परमारथ स्वारथ, भाल विभीषन के
भन्यो रूरो । आनन सामुहे श्री रघुनाथ के, एकई वार म-
नोरथ पूरो ॥२२०॥

॥ अथ विनोक्ति धलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ प्रस्तुत कछु विन रहै, छीन प्रगट दरसाय ।
भूषन प्रथम विनोक्ति तहँ, वरनै बुध कविराय ॥२२१॥

॥ यथा कवित्त ॥

वीते कई वासर अपार वार आसरे में, सागर गँभीर
धीर धरम धिराजै है । लछिराम कोटिन प्रताप बड़वानल
सो, दारुन दरेरे दल दरप दराजै है ॥ कौशल कलस कम
नैत जङ्ग जैत सङ्ग, जामवन्त जदपि सुकण्ठ की समाजै है ।
बिनै बनचारी की नरेस मणि रामचन्द्र, रोष विन वीर पै न
वीरता विराजै है ॥२२२॥

॥ पुनः ॥

चांह बल विरद बिसाल बरिवण्ड वीर, मण्डन भुअन
बीरताई है अमर में । लछिराम ललित गणेश अमरेस ब्रह्म,
साली समसेर गज केहरी कमर में ॥ ज्वाली जङ्गवान घन
घोरिया कमान रोदे, जदपि न सोर ऐसो शम्भु के उमर
में । चौदह सहस्र खरदूषन समतथ सोहैं, सोहैं ते न राम रथ
बिस घा समर में ॥२२३॥

॥ संवैया ॥

कानन भोजे अमरावती यों, सुर भान लों सान सन्धो
लहरात है । पुञ्ज प्रताप प्रभा लछिराम, सु रातेदृपताकन ते
फहरात है ॥ राम सुरूप निधान को रूप, प्रकासक पञ्चवटी
न अमात है । लक्खन-मेथिली साथ जऊ, रिपुदौन भरत
विना न सोहान है ॥२२४॥

॥ पुनः ॥ - १ =

केसरी अङ्गद नील सुखेन, सुकंठ पै साहिधी यों झलकी
है । बाको धिभीपन रीछपती, नल लालिमां औरन में ल
लकी है ॥ राम सिरोमनि ह्यो लछिराम जू, धीरता लक्खन
की बल की है । सेनप सान भरे सिगरे, हनुमान विना न
प्रभा बल की है ॥२२५॥

॥ द्वितीय वि०—दोहा ॥

कण्ठुक हीन प्रस्तुत भये, जहँ प्रभाव सरसाय ।
है चिनोक्ति तहँ दूसरो, वरनत कवि समुदाय ॥२२६॥

॥ यथा कवित्त ॥

मेथिली विसाल ग्रहमरासि की कलस कल, ताप गरजन
भाल तिलक घनावेगो । आरत घचन अपराधहि छमा कराय,
लछिराम लछिमने धिनती सुनावेगो ॥ परम सुजान दशवदन
प्रतापवान, भासमान दूसरो विरद जग छावेगो । धरम धि
राज महाराज रामचन्द्र सोहि, परिहरे गरव प्रभा अनन्त
पावेगो ॥२२७॥

॥ संवैया ॥

धीन सभा सहिके अपमान, चिचारिके ही में गुमान छली

को । श्री रघुनाथ के सामुह्ये बैन, अनाथ सो बोल्यो लखाय
गती को ॥ भेंटतै अङ्ग कुअङ्ग मिटै, दियो भाल थली भलो
भाग सु टीको । छूटत ही दसकण्ठ को साथ, विभीषन राव
त्रिकूट मही को ॥२२८॥

॥ अथ समासोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

प्रस्तुत में अस्फुरित जहँ, अप्रस्तुत को भाव ।
अलङ्कार तहँ कहत हैं, समासोक्ति कविराव ॥२२९॥

॥ यथा कवित्त ॥

धनुष सो धनु बूँदें बान सों प्रकासमान, बीजुरी लों मा-
धुरी हँसनि भावसन में । बरन घटालों बकुलावली सु मोती
माल, मुखर सो बैन धारा दान सरसन में । लछिराम सीरे
त्रिभुवन जन गावैं जस, जालिम जवासा बैरी बन झरसन
में । झलकी परै हैं परमानद सो अभिराम, चारु चतुराई सु-
न्दराई स्याम घन में ॥२३०॥ *

॥ अथ परिकर अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहां विशेषण ठानिये, आशय सहित प्रवीन ।
अलङ्कार परिकर तहां, बरनत हैं रसलीन ॥२३१॥

॥ यथा कवित्त ॥

मङ्गलीक माला गरे हार गज मोतिन के, ख्योर भाल
मलय विसाल अवतारा को । आनन सुखूप सरवर हांस हीरा
हार, बचन अमीरस अमन्द सुभ सारा को ॥ अरविन्द नैन

* तिलक—यामे प्रकाश वर्णन कवि स्याम घन को करै है, रीति रहस्य
रामचन्द्र की अस्फुरति है । यही प्रस्तुति में अप्रस्तुति भई ॥

अङ्ग भूपन जवाहिर के, लछिराम जस हिमालय के पसारा
को । सीतल करेगे मेदि ताप मिभुवन राम, स्याम धन बल
धरसि दान धारा को ॥२३२॥

॥ अय परिकर अंकुर अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

साभिप्राय विशेष सो, परिकर अंकुर मानि ।

धरनत बुध अनुमान करि, ग्रन्थन को मत जानि ॥२३३॥

॥ यथा सवैया ॥

चन्द सो आनन भाल बिसाल में, चन्दन ख्योर सभाय
सिंगार में । माल गरे मुक्तावली के, अरविन्द बिलोचन
मौज के भार में ॥ रङ्ग सँवारि घटा सो लसे, लछिराम सबै
गुन सीरे विचार में । राम कृपानिधि वैहैं सही, फल घान्यो
कृपा करिकै यकवार में ॥२३४॥

॥ अय श्लेषालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

शब्द एकही में जहां, अर्थ बहुत सुख साज ।

अलङ्कार अश्लेष तहें, धरनत पण्डित राज ॥२३५॥

जुगल रीति सों प्रथमही, गनि अभिन्न पद धीर ।

फिरि पूजो गनि भिन्न पद, ग्रन्थन मत गम्भीर ॥२३६॥

॥ अभिन्न पद वर्णन—दोहा ॥

भेद भिन्न पद काढ़िये, पदसों पद परमानि ।

अरथ भिन्न करि शब्द के, उपमाश्लेषहि मानि ॥२३७॥

॥ यथा कविये ॥

परम प्रकास मान सौरभित स्वच्छ साज, पावन त्रिजग

* तिलक—या वीर विजयेपरी में अभिप्राय शीतलस्व गुणा को अपेक्षा है

सीरे गुन सरवस है । भूषण महेश द्विज देवन हरन ताप, सुभ
स्वत वरन प्रभाव एक रस है ॥ नागरी सिंगार चारु नागर
तरेस चाहै, लछिराम लोचन अनन्द आदरस है । तरल तरङ्ग
गङ्ग चन्द्रिका अभङ्ग मलै, मङ्गलीक राव रामचन्द्र को
सुजस है ॥२३८॥

सांवरे वरन सुकुमार श्री मुखर मंजु, बनक बिलास में
सुमन धनु सर के । परम प्रमोद बन सङ्ग बीजुरी स्त्री बाम,
औलि बक माल सुकताहल के लरके ॥ मन्दर धरन लछिराम
रस बरसत, खरके रहत रङ्ग मानस में हर के । मङ्गलीक
मोहन अमन्द अभिराम राजै, काम धन त्याम रामचन्द्र
जस वर के ॥२३९॥

॥ अथ भिन्न पद—यथा कवित्त ॥

मंडित पराग भाग सुखमा सँवारे स्वच्छे, सीरे त्रिभुवन
जन सङ्ग रस वर के । हरन प्रदोष मारतंड तैं महातम ल्यौ,
लछिराम राजै अवतंस भूमि थर के ॥ राजवंस देव द्विज
राजन परम प्रिय, कामद रतन हैं महान सरवर के । कमल
सुरङ्ग कै त्रिबेनी के तरङ्ग कैयौं, मङ्गलीक चरन महीप रघु-
वर के ॥२४०॥

॥ अथ ओज माधुर्य प्रसाद गुन संक्रमितश्लेष—यथा बोधा ॥

माधुर्योज प्रसाद में, गुन संक्रमित सुधीर ।

त्रिविधि धरमि अश्लेष पुनि, सुकधि सुनत गंभीर ॥२४१

॥ अथ ओज गुन संक्रमित श्लेष—यथा बोधा ॥

झलकै शब्द न वाच में, अर्थ सु बहु मग्भीर ।

ओज सङ्गुन संक्रमित सो, प्रथम श्लेष सुधीर ॥२४२॥

॥ कविच ॥

मन सवही के हेरें कछुक विलास हीमें, परस प्रकास
मान सुमन समीर के । जंग जैतवार मही मंडल अखंड ओष,
आव सो घलित जगे जौहर गँभीर के ॥ दिन मनि मित्र
निसावरन पे औरै सान, लछिराम आनँद घलित रस वीर
के । कोक नद धारे काम कैवर सँवारे कैधौं, करुना कलित
नेन राम रघुवीर के ॥२४३॥

॥ अय मापुय्यं गुन संक्रमित श्लेष यथा—शशा ॥

कछु प्रकाश गम्भीरता, कछुक शब्द के संगे ।
माधुरज गुन संक्रमित, या श्लेष नव रंग ॥२४४॥

॥ सपैया ॥

चन्द्रिका चन्दन चारु विलास, मिले नखतावली माल
समाजे । चौहँ चकोर भिरे मुनि मंडल, मडित रूप सुधा मई
साजे ॥ आनँद अस अमास न गात में, यौ लछिराम धनी
पर काजे । कामद राम कलाधर है, के कलाधर पञ्चवटी-में
धिराजे ॥२४५॥

॥ अय प्रसाद गुन संक्रमतिश्लेष यथा—शशा ॥

विविधि भांति सौ शब्द में, अर्थ प्रकाशक मानि ।
गुनि प्रसाद गुन संक्रमति, यौ अश्लेष घखानि ॥२४५॥

॥ कविच ॥

बेरी गज घर भाल फोरत करे न धार, सहज सिकारी ख
ल मृग मंडरी फो है । लछिराम राम सम्भु दल में छिंगार
फूदि, नाघस पहार नद नाद अम्यरी फो है ॥ अजय उमह

रनरङ्ग में मुरै न केहूं, बरन लँगूर को प्रभाव लहरीकोहै ।
बलवान् महावीर मण्डन भुवनवन, केसरीकुमार कै कुमार
केसरी को है ॥ २४६ ॥

॥ अथ अप्रस्तुतिप्रशंसालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

बरनत अप्रस्तुति जहां, प्रस्तुति भा अनयास ।

अप्रस्तुति परशंस तहैं, भूषण परम प्रकास ॥ २४७ ॥

कारजमुख कारन कतहूं, बरनत समुझि सुयान ।

कारनमुख कारज कतहूं, या प्रकार अनुमान ॥ २४८ ॥

कहि विशेष सामान्य मुख, कतहूं विचारत धीर,

कतहूं कहि सामान्य मुख, यौं विशेष गंभीर ॥ २४९ ॥

कतहूं तुल्य प्रस्तावमें, तुल्य कथन मुखसाज ।

अप्रस्तुति परशंस भनि, पञ्चभेद कविराज ॥ २५० ॥

जाहि चाह करि कवि रचै, प्रस्तुति तिहि परमानि ॥

अनचाहै जो अस्फुरै, अप्रस्तुति अनुमानि ॥ २५१ ॥

॥ अथ कारजमुख कारनकथन-यथा कवित्त ॥

नील नल नागर उजागर सुकण्ठ सौहैं, इतूमान अङ्गद
सुखेन रोष रुषतैं । लछिराम जामवन्त केसरी कुमुद सेना
वानर विराट भाल पैजन परुषतैं । रावणके सौहैं दूत बचन
अभूत बीर उतरत सेत बांधि दारुण दुरुषतैं । लखनि गंभीरताई
गरव त्यों वीरताई, बलकी परै है राम लखन धनुषतैं ॥ २५२ ॥

॥ तिलक ॥

यह जो समस्त वृत्तान्त वर्णन कियो सो कारण प्रस्तुत
है अरु सेनाके प्रभावते जो दूतके हृदय में भयानक भयो
ताको नेकहू ना कह्यो सोई कारण अप्रस्तुत है ॥

॥ अथ कारनमुख कारजकथन-यथा कवित्त ॥

फहरे निसान मारु बाजे त्यों वजत मञ्जु, ठाकिले मतङ्गन
की माला वितरति है । लछिराम हरष हरील हनुमान मुख,
अङ्गद बहाली अङ्गअङ्ग सुतरति है ॥ मुज फरकीले नलनील
बङ्ग विकसत, सुघर सुकण्ठ सोहैं धारु चितरति है ।
लखनि तिरीछी राम लखन चखन कोरे, सागरपे सेत वाँधि
सेना उतरति है ॥ २५३ ॥

॥ तिलक ॥

यह सेनाको उत्कर्ष आगमन वर्णन कियो सो कारण
अप्रस्तुत है ताते रावणकी रुचि संग्राम हेत बढायवो कारण
प्रस्तुत है ताको दूत ना प्रगट कियो ॥

॥ अथ सामान्यमुखविशेषकथन-यथा कवित्त ॥

हेरत ही परदोष दुखी, पर आनैदसों मुख है सतसङ्गमें ।
त्यों लछिराम विवेकै प्रभाव, सो ठाने सदा सतवार उमङ्ग में ॥
आने न कैसहू झूठ सुभाषन, भावत वीरता भाव उतङ्गमें ॥ ते
घनि हैं रघुवीरके सामुहैं, जे भट जूझत हैं रनरङ्गमें ॥ २५४ ॥

॥ तिलक ॥

सामान्य पदार्थ प्रथम वर्णन करि पश्चात् शूरनको विशेष-
पकारि उपदेश्यो ।

॥ अथ विशेषमुखसामान्यकथन-यथा सवैया ॥

वे उनके शिर साजें किरीट, सुही पगरी त्यों सँवारत हैं मने,
वे उनके धनुवान सँवारत, वे उनके मुख पान प्रभा सने ॥
और कहाँलों कहै लछिराम, सभी जग फेली विचार सबे ठने ।

साथमें लखन औ रघुनाथकी रीति प्रतीति निहा-
रतही बनै ॥ २५५ ॥

॥ तिलक ॥

यामें विशेष श्रीराम लक्ष्मणको दृष्टान्त देत हैं सामान्य
परस्पर जनावत है ॥

॥ अथ तुल्यप्रस्तावमें तुल्यको कथन-दोहा ॥

शैव सदा बडभागमें, पूजत गौरि महेश ।

राम रसिक सिय-रामके, गावत गुणगण बेस ॥ २५६ ॥

॥ अथप्रस्तुतअंकुरअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

दूजी प्रस्तुतिको जहां, प्रस्तुति बीच प्रभाव ॥

प्रस्तुत अङ्कुर मानिये, अलङ्कार कविराव ॥ २५७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

भरम गँवावै झरवेरि संग नीचन तें, कण्टकित बेल केत-
कीनपै गिरत है। परिहरि मालती सुमाधवी सभासदनि, अधम
अरूसनके अङ्ग अभिरत है ॥ लछिराम शोभा सरवर में
विलास हेरि, मूरख मलिन्द मन पलना थिरतहै । रामचन्द्र
चारु चरनाम्बुज विसारि देस, वन वन बेळिन बबूरे में
फिरतहै ॥ २५८ ॥

॥ पुनः ॥

भरम गँवाय लोक लाजके भरम खोलै, बोलै बैन अनरथ
आनँद लगनसे । भोर साँझ बहकि बिहंगनसे लालीपर, भाँवरें
भरत बे विचार तन मनसे ॥ लछिरामरूप रामचन्द्र कल्पतरु
छोडि, कल्पना करत झूठे झूठिये वचनसे । रङ्गदार मूरख
महीपन बदन सुक, विन मागमेवै गाउ मेघउ मधनये ॥ २५९ ॥

॥ अथ परजायोक्ति अलङ्कार वर्णन-दोहा ॥

वचननकी रचना अधिक, प्रथम भेद परमानि ।

व्याजहि कारज साधिवो, परजायोक्ति प्रमानि ॥ २६० ॥

॥ प्रथम वचनरचना-यथा क्वचित् ॥

दशो अवतारके गुनानुवाद सुने कान, दानी दीनबन्धु भार
भुवन उड़ायेतैं । लछिराम घनुष स्वयम्बर कहाइे मौलि,
मण्डली महीपनकी वीरता मुड़ायेतैं ॥ सरहज सों हैं तिरछै
हैं क्यों लजोहें नेन, देहें ना ननद विन हीतल जुड़ायेतैं ।
गति हे गंभीर ब्रह्मराशि रघुवंश राम, रघुवीर मैथिलीके कङ्कन
छुड़ायेतैं ॥ २६१ ॥

॥ पुन ॥

परिहार फलि हे फलकि नल नील जूके, मन्द परिजे हे
सान धानर वहालीसों । लछिराम जामवन्त सुघर सुकण्ठ
दल, वृद्धि वहिजे हे भौर लहर करलीसों ॥ अरज सुखेन
वीर लछिमन रावरेसों, उतरु कहीजे राजनीतिकी प्रना-
लीसों । गौमतीकी भांति शिला सुन्दरी बने न सब, राव राम-
चन्द्र चरनाम्बुजकी लालीसों ॥ २६२ ॥

॥ पुन ॥

वालि तने वदन विलोकि विहसों हैं कौन, तापस कटकमें
सुभग जगभारीको । जामवन्त केसरों सुकण्ठ पौन येहें, कछु
मानों लछिराम में प्रथम धनचारीको ॥ अङ्गद विहसि दशक-
न्धरसों बोल्यो वही, वीरगनतीमें वजवायो करतारीको ।
मान्यो मालवाने जान्या विछलि त्रिकूट वीर, धावनि चतुर जो
रजान्यो फुलवारीको ॥ २६३ ॥

॥ अथ दूसरी पर्यायोक्ति वर्णन-सवैया ॥

चातुरी सों मनि-पालने ऊपर, साजती हैं फलफूलके देने ।
पच्छिन पींजरेके लछिराम, बुलावतीं चारे चखाय सलौने ॥
श्रीरघुनन्दनको मचल्यो लखि, ढारतीं मेल मिलाप के टोने ।
और महीपकुमारन कौशिला, बांटीं हीरक हार खिलौने २६४

॥ पुनः ॥

या नख नौलसों गङ्ग कठीं, बठीं तीनहूं लोक तरङ्ग पसारे ॥
फेरि भिलाय हौं मैं करते, बहु बासर सों यह व्योत विचारे ॥
नेम यही द्विजदेवनतैं, लछिराम निषाद हैं नाम हमारे । पावन
पाँय पखारिकै राम, उतारौं तुम्हें तरनीके सहारे ॥ २६५ ॥

अथ निन्दाव्याजस्तुतिअलङ्कार वर्णन-दोहा ॥

व्याजहि निन्दाके जहां, अस्तुति भाव अमन्द ।
व्याजस्तुतिनिन्दा तहां, बरनत कविकुलचन्द ॥ २६६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बदन बिरूप लखि सूरपनखाको माखू, बाजे बजवाये मन
देवनके कसके । लछिराम चौदहौ सहस पलही में मारे, दल
खरदूषन समर सरकसके ॥ बिछुलि कमान रोदे फोरें भाल
भेजे, फेरि कतरें करेजे रेचे आलय अकसके । परवसी दरद
न बूझें रघुवीर बडे, बेदरद बानहैं तिहारे तरकसके ॥ २६७ ॥

॥ पुनः ॥

राजहंसिनीनमैं सुरूप राजहंस रचि, सनमान सङ्ग मानस-
रमें धिरत हैं । परखि परीनपै प्रभा त्यों लछिराम छाय, परम
प्रकाश टूटि तारेलों गिरत है ॥ बरजो न मानै बरजोरी

अङ्कभरि २ असुरनकीरति कुमारी सों भिरत हैं । राव राम-
चन्द्र वीर जालिम तिहारो जस, चौदहों भुवन व्यभिचारीसों
फिरत है ॥ २६८ ॥

॥ अथ स्तुतिव्याजनिन्दा वर्णन-दोहा ॥

अस्तुतिमें झलकै जहां, निन्दाको परभाव ।

अस्तुति निन्दा व्याज तहै, वरनत पण्डित राव ॥ २६९ ॥

॥ यथा क्वचित् ॥

वारन उचारनमें बाहन सों दूनो दौरि, द्रौपदी समेकै
वांकपन विसरत हो । ब्रह्मराशि रघुवशभूपन परमहस, पारस
पदार पग पीछे क्यों धरत हो ॥ चान्पो युग चौदहों भुवन देव
दीनबन्धु, पेजपरिपाटीपे अनाक निकरत हो । लछिराम
सांकरेमें राव रामचन्द्र वीर, कौशलकलश हूँ कनोडे-
क्यों परत हो ॥ २७० ॥

॥ पुन ॥

देव-बन्दि छोरे षटपारन गरव गारि, सिन्धु सेत वांधिवेको
परचत फोरैको । परमकुलीन परमात्मा परमहस, धेर सेवरी
धेर धिरद वियोरैको ॥ शिरताज राज महाराज रामचन्द्र वीर,
धरमधिराज रावेरसो वरजोरै को । शङ्कर शरासन स्वयम्भर में
तोरै अब, लछिराम शङ्कट शरासनहि तोरै को ॥ २७१ ॥

॥ सवेया ॥

नारव्यो न टक्खन की धनु रेखें, विमान की वायुलों वेग
कराहै । गीध जटायुसों जङ्ग रच्यो, फिरि जानि जरापन लाज
धरी है ॥ बालिके फन्दसों फांदि बच्यो, लछिराम कथा को

कहै सिगरी है । वीरको रावन रावरे सो, बनमें जिन राम की
चाम हरी है ॥ २७२ ॥

॥ अथ स्तुति व्याज स्तुति-दोहा ॥

अस्तुतिमिस झलकै जहां, अस्तुति और सुबेस ।

अस्तुति मिस अस्तुति तहां, बरनै सुकवि नरेस ॥ २७३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

रोदेसों बिछलि रथ सारथी समेत बेधै, वदन तुरङ्गन पै
बेड़े लों तरत हैं । लछिराम अजब अतङ्क वार ज्वालाकार,
मालामें असुरके न केहूं अतरत हैं ॥ तापर प्रचण्ड यह
कौतुक सराहै कौन, रामअदलोको जिन्हें कीन्हे छतरत
हैं । भेजा भाल फोरि बान कुञ्जर बरेजा फेरि, कातिल
करेजनके रेजे कतरत हैं ॥ २७४ ॥

॥ निन्दा व्याजनिन्दा-दोहा ॥

निन्दामिस बरनत कहैं, निन्दा अपर महान ।

निन्दा मिस निन्दा तहां, परमानत गुनवान ॥ २७५ ॥

॥ यथा सबैया ॥

श्रीमिथिलाके स्वयम्बर में, धनुभङ्ग समै ते सबै परमानै ।
सुन्दरी देव अदेवनकी भरी, भूरि भयङ्कर ते सनमानै ॥ तापर
कौतुक या बग-यो, लछिराम सुकीरति कौन बखानै । रावन
रावरे बाहन को बल, अङ्गदके पग औरऊ जानै ॥ २७६ ॥

॥ अथ आक्षेपालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

आक्षेपालङ्कारकों, त्रिविधि कहत गुनधीर ।

प्रथम निषेधाभास फिरि, बच्चन फेर गम्भीर ॥ २७७ ॥

राखै जतन दुरावसो, वर निपेधके साथ ।

आक्षेपालङ्कार यौं, धरनत बुध बुधिनाथ ॥ २७८ ॥

॥ प्रथम निषेधामास-यथा सवैया ॥

वानर बालि बली को कुमार हौं, अङ्गद मानिये नाम
हमारो । तीनहु लोकनके शिरमोर, हमें इत भेजिये ब्यौत
विचारो ॥ वीसहु हायनके बलसों, लछिराम जू या न ट्यो
पग टारो । दूतनमें दशकन्धर श्रीरघुनाथ-प्रभाव अभूत
निहारो ॥ २७९ ॥

॥ पुन ॥

जुथप केसरी नील मयन्द, सुखेन लँगूर जहाँ फाँ देव
रीछपती हनुमान सुकण्ठ को, ज्वालिया आनन लछिराम
गो ॥ लक्ष्मन बाननको लछिराम, प्रवाह सुभूपर त्यो कनोडे-
रावन दूतनमें रघुवीरके, धेरको जोहर जानि परेगो ।

॥ द्वितीयवचनफेर-यथा सवैया ॥

चारिहु ओर कहीं किरनै, अथवा फरक्यो फनमाल
फनीको । कोटिन भार अँगार को है, अथवा बढवानल या
अवनीको ॥ राक्षसी हेरि बली हनुमाने, रचै लछिराम सतक
अनीको । भान-उदे प्रले-धासरको, अथवा सुखलङ्क लँगूर
घनीको ॥ २८१ ॥

॥ पुन : ॥

जीवन श्रीमहाराजकुमार, पयानसमे ट्यो ना उम-
चेगो । लक्ष्मने साथ सुने लछिराम, सु या पलमें यही ब्यौत
अरेगो ॥ छोडिबो औष अघानक तो, बली या प्रतवारो लकीर

खचैगो । प्रान विलोकियै पञ्चवटी वन, रावरे सों पहिले
पहुँचैगो ॥ २८२ ॥

॥ अथ विरोधाभास अलङ्कार वर्णन -दोहा ॥

भासै विदित विरोध जहँ, जमकवलित पदसङ्ग ।

वरनि विरोधाभास तहँ, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ २८३ ॥

॥ यथा सवैया ॥

किङ्कर श्रीरघुनाथको हों, कछू किङ्करताको न व्यौत
विचारों । साथी सुकण्ठ हरौलको हों, रनरावन साथी हरौ-
उपछारों ॥ हों सुत केसरीको लछिराम, सुकेसरी लङ्कबली-
नको मारों । मौज मढ़यो महाबीर हों मैं, महाबीर निशाच-
के मद गारों ॥ २८४ ॥

भेज ॥ अथ विभावनाअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जनके विदित होय विन कारनै, कारज को सब साज ।

वरनत प्रथम विभावना, अलङ्कार सिरताज ॥ २८५ ॥

नि

॥ यथा कवित्त ॥

ऋषिनकी बाँसै हेरि करतीं कलामें सम्पा, श्याम घन वरन
सँवारै कौन कलके । बलकल बसन सुरूप त्रिभुवन भयो,
भाल विन कलंगी मसाल झलाझलके ॥ गजरथ पालकी
चमर छत्र हीन तऊ, लछिराम लसत सिंगार विश्वदल के ।
कौशलकुमार ये अतर पान छोडे वन, बदनकी श्वासन
तरङ्ग परिमलके ॥ २८६ ॥

॥ पुनः ॥

भूषण बसनवारे बलकल डारे अङ्ग, रोम रोम अनुरूपे रूप
के सहर हैं । जटाजूट शिखर, परिमित भाल, परम

प्रतापवान जगर मगर हैं ॥ दल दूब आसन सिंहासन सोभा
समान लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मवर हैं । श्यामवन वरन
अकेले आभरन भूमि, परनकुटीमें ये कहाकि कला-
घर हैं ॥ २८७ ॥

॥ द्वितीय विभावना वर्णन-दोहा ॥

हेतु अपूरणते जहा, कारज पूर अशङ्क ।

वरने विषुप विभावना, मानि दूसरो अङ्क ॥ २८८ ॥

॥ यथा कथित ॥

तरकसी छोटी कध छोटे छोटे धनुषान, छोटे कर छोटी
छोटी आँगुरी वगरमें । छोटे छोटे बदन विशाल भाल नैन
लाल, वार गभवारे बालप्रभाकी लहरमें ॥ लछिराम छोटे पग
चलिके कुमार दोऊ, करत अचूक वार आचरज हरमें । इनू
मान अङ्गद भरत्य शत्रुहन हारे, लखन समत्य लवकुशके
समरमें ॥ २८९ ॥

॥ पुनः ॥

खेलत सिकार रघुवशी लवकुश लेने, बाल घेपधारी तऊ
साहसी सजब के । द्वैजके मयङ्क तन परन निशक मन, ल-
छिराम शिखर चढैया जोर जबके ॥ करन किरात फारें गजमु-
कताके हेत, करतौ किरातिनै कुतूहल अजबके । छोटे
धनुषानन सौं धन वन मन्दरमें, गिरत मतङ्ग महामारेसे
गजबके ॥ २९० ॥

॥ पुनः ॥

वार गभवारे बान तरकस राते पीरे, धनुष हरीरे शिशुपन
के कुलेले हैं । लछिराम जामवन्त द्विचिद मयन्द कटे, केसरी

कुमुद नील नल झगरेले हैं ॥ हनुमान अङ्गद विभीषण
सुकण्ठ लटे, शत्रुहन भरथ लखन अलवेले हैं । राजवंशी
रघुवंशी बानर विराट भालु, पलमें खिलौने सम लवकुश
खेले हैं ॥ २९१ ॥

॥ तृतीय विभावना वर्णन-दोहा ॥
विद्यमान प्रतिबाधकहूँ, कारज पूरो अंश ॥
तीजो भेद विभावना, परमानत बुधवंश ॥ २९२ ॥
॥ यथा कवित्त ॥

सङ्ग मुनिवारे हठ करिकै निखङ्ग छोरेँ, मानत न केहूँ
मृगयाके भराभर मैं । अधकटे अरना बराह बाघ लोटे भूमि,
गैडा गरबीले गिरे चोटन कहरमैं ॥ मन्द २ विहँसि अमन्द
लछिराम लोने, लवकुश राते बीरताई की रगर मैं ॥
वारन वराह बाघ बरपै किशतनके, बरजत मारू बान मारत
शिखर मैं ॥ २९३ ॥

॥ पुनः ॥

ज्वाली जङ्ग सारथी शिखर फोरि फहरात, तोरत बदन
बाजी गज गुन गथमैं । लछिराम रेले थहरावन झमेले लङ्क,
छावन अतङ्क बगमेले बीर पथमैं ॥ विहँसि बिडारैं डारैं
भूपर प्रकाशमान, तोरन चमर छत्रवार अनरथमैं । रोष्यौ
रन रङ्ग रामचन्द्र बरजत मारैं, लखन कुमार बान रावनके
रथमैं ॥ २९४ ॥

॥ चतुर्थ विभावना वर्णन-दोहा ॥
कारनके तनसों जहाँ, कारज को अवतार ।
भेद चतुर्थ विभावना, भाषन सुमतिभँडार ॥ २९५ ॥

प्रतापवान जगर मगर हैं ॥ दल दूब आसन सिंहासन सोभा
समान लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मवर हैं । श्यामवन वरन
अकेले आभरन भूमि, परनकुटीमें ये कहकि कल-
घर हैं ॥ २८७ ॥

॥ द्वितीय विभावना घर्षण-दोहा ॥

हेतु अपूरणते जहां, कारज पूर अशङ्क ।

वरनें विदुष विभावना, मानि दूसरो अङ्क ॥ २८८ ॥

॥ यथा कथित ॥

तरकसी छोटी कध छोटे छोटे धनुवान, छोटे कर छोटी
छोटी आँगुरी वगरमें । छोटे छोटे वदन विशाल भाल नैन
लाल, वार गभवारे बालप्रभाकी लहरमें ॥ लछिराम छोटे पन
चलिके कुमार दोऊ करत अचूक वार आचरज हरमें । हनु
मान अङ्गद भरत्य शत्रुहन हारे, लखन समत्य लवकुशके
समरमें ॥ २८९ ॥

॥ पुनः ॥

खेलत सिकार रघुवशी लवकुश लोने, बाल वेपधारी तऊ
साहसी सजब के । द्वैजके मयङ्क तन परन निशक मन, ल-
छिराम शिखर चढैया जोर जबके ॥ करन किरात फारें गजमु-
कताके हेत, करती किरातिने कुतूहल अजबके । छोटे
धनुवानन सों धन वन मन्दरमें, गिरत मतङ्ग महामारेसे
गजबके ॥ २९० ॥

॥ पुन ॥

वार गभवारे वान तरकस राते पीरे, धनुष हरीरे शिशुपन
के कुलेले हैं । लछिराम जामवन्त द्विविद मयन्द कटे, केसरी

लखैया जोर मैथिली विरह जाग्यो, जालिम जोन्हैया तेज
तीषन तरनिसों ॥ ३०० ॥

॥ पुनः ॥

वासन वसन तपै आसन असन औरै, दल फल फूल मूल
सूल हूल हरके । वगरे विहङ्ग प्रतिकूल ठौर ठौर बोलै,
गुंजरत भौर जादू जालिम जहरके ॥ लछिराम लखन विरह
मैथिलीके बस्यो, दारुन दवालों गुणवारिमैं लहरके । सौरभ
समीर तीर करत करेजे रेजे, मालाकार कोकनद पंपासर-
वरके ॥ ३०१ ॥

अथ विशेषोक्ति अलंकार वर्णन-दोहा ॥

हेतसङ्ग सामर्थसों, तऊ न कारज होय ।

विशेषोक्ति भूषण तहां, बरनत ग्रंथन जोय ॥ ३०२ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

वरि गये बालि खरदूषण विरोधबद्ध मेघनाद रावन-करन
घट धालामैं । चौदहों भुवन खल वंशन विधंसि परै भभकि,
उलीची बटपारनके सालामैं ॥ अजब अतङ्क लङ्क शिखर
चढी त्यों घोर, जौहर ज्वलित जंग जैतपत्र आलामैं । लछि
राम-सङ्कट कराल काठ कैसौ, राम जरत न रावरे प्रतापा-
नल ज्वालामैं ॥ ३०३ ॥

॥ पुनः ॥

वान महारावन सुरासुर समत्थ-दल, खलभल पच्यो जा
स्वयम्बर प्रवेशको । लछिराम जाके भुजदण्डन अखण्डन पै
विरह प्रचण्डवरदानि या हमेशको ॥ तोरैको मरोरै बरजोरैको
जुगल गोसे, घनघोर व्रतभो सुमेर मिथिलेसको । बलकरि

॥ यथा सवैया ॥

भूपर मुद्रिका डारिदियो तरुते इन्नुमान विचार हरोते ।
 अह्म विलोकते शङ्क भरी, सुन्यो वैन विनीत, सुधारस घोते ।
 श्रीरघुवीर को दूत हों में लछिराम तैं अम्ब छमा कर गोते ।
 मैथिली लोचन वारिजसों उमड़ेहैं उजागर सामर
 सोते ॥ २९६ ॥

पञ्चम विभावना वर्णन-बोधा ॥

प्रगट अकारन वस्तुसों, कारज वपु व्यवहार ।

पञ्चम भेद विभावना, गति मति उदय उदार ॥ २९७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

वाँह बली अङ्गद सुकण्ठ शिरमौर मृगराजकी दपटमें तिरीछे
 तरजत हैं । लछिराम केसरी कुमुद नील नल मारतण्ड मुख
 तेज जिन्हें कौन बरजत हैं ॥ बानर विराट रीछ कातिछ
 कटक हेरि, लङ्क दल दारुन के घीर लरजत हैं । गुञ्जरत
 कुञ्जर कलोलें जामबन्त प्रले मेघ बरवानी इन्नुमान
 गरजत हैं ॥ २९८ ॥

अथ षष्ठम विभावना वर्णन-बोधा ॥

कारन ते उपजे जहां, कारज परम विरोध ।

छत्रों भेद विभावना, बरनत सुमति प्रबोध ॥ २९९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

परत न चैन रैन बासर सधन वन, कैसी कढ़े ताप धीर
 नासन धरनि सों । लछिराम रोप्यो मारतण्ड मो कुचाल पर,
 कल्प समान पल धीतै या डरनिसों ॥ पन्नग विलासी मले
 मन्दर पवन आवे, परचत वैरी बाहुवानल जरनिसों । लखन

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ सोहैं दाहिनेपै अङ्गदके फूले न समात यों
विलास बांहबलके । लछिराम लङ्गर लँगूर की लपट तैसी,
ख्यालहीमैं झपट पसारैं खलभलके ॥ उपटी परै हैं करक-
लित गदाकी छटा, विकसे अपर राम लखन सबलके । जौहर
जँजीरे लालमुख हनूमान हेरि, सीरे गात पीरे परैं रावनके
दलके ॥ ३१० ॥

॥ पुनः ॥

दिग्गज नगारे देव गरजत आपहीतैं, सगुन शची त्यों
गौरि पूजन करति हैं । लछिराम सातो दीप सुन्दरी सँवारैं
साज, असुरकी वामैं बन-दावालों जरतिहैं ॥ छीर भरे सागर
सरित सरितान मौलि, मन्द मधु मालती समीर ही हरति हैं ।
अवध अमन्द रामचन्द्र अवतारहेत, भाँवरैं दिनेशकी दिग्-
ङ्गना करति हैं ॥ ३११ ॥

॥ पुनः ॥

गुञ्जरत कुञ्जर झमकि मतवारे बाजि, नागर बटासे नट
बागन मुरनके । लछिराम रथके झमेले रङ्गदार माहू, बगर
वितान पौन गौन आतुरनके ॥ जामवन्त जालिम सुकण्ठ
लछिमन वीर, तेजे लहरेजे सब जंगके जुरनके । राव राम-
चन्द्र चतुरगिनी चमूके भार, रेजेहोत कहर करेजे
असुरनके ॥ ३१२ ॥

॥ द्वितीय असङ्गति वर्णन-दोहा ॥

और ठौरही जहँ करत, और ठौरको साज ।

गनत असङ्गति दूसरी, सुकविनके शिरताज ॥ ३१३ ॥

याके सातो दीपके महीप तरु, तनक न छोडयो भूमि
घनुप महेसको ॥ ३०४ ॥

॥ सबैया ॥

घेर घनो घननादको सामुहें, त्यो घटकनके बानकी कोटें ।
बोलत जाके कपे घरनी, लछिराम घरे शिर वीरता मोटें ॥
रावनसो बलवान् घनुर्घर, राखे निशाचर आयुध खोटें । खाली
परे न तरु दलमें, हनुमान हठीके लंगूरकी चोटें ॥ ३०५ ॥

॥ अथ असम्भवालकार वर्णन-दोहा ॥

कौनहु कारज सिद्धिको, करत असम्भव देस ।

अलकार मानें तहां, असम्भाषना बेस ॥ ३०६ ॥

॥ यथा सबैया ॥

केसरी त्यो नल नील सुकण्ठ, पहारहि रूपालमें खोदि
बोहें । अगव ओ हनुमान सुखेन, सही लछिराम घुमा फहरें हैं ॥
घानर भालु कोलाइलमें, जल जीव तरङ्ग सबे दविजे हैं । जाने
को आज महीपति राम, सबे दल वारिधि बांधिके ऐहें ॥ ३०७ ॥

॥ पुन ॥

तोरिके घाननके तरुको, तहीं गेह अरामनिको विदरेगो ।
मारिहै रावनके सुतको, लछिराम न केसहुं शक घरेगो ॥
तेल ओ तूल दुकूलन में, सिखी पत्रग फांस हीसों निकरेगो ।
जाने को आज त्रिकूट प्रभा, हनुमान लंगूरसों छर
करेगो ॥ ३०८ ॥

॥ अथ असङ्गति अलङ्कार वर्णन-दोहा ॥

कारनते जहें भिन्न यल, कारजको सब साज ।

प्रथम असङ्गति भेद यो, वरनत बुध कविराज ॥ ३०९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ सोहैं दाहिनेपै अङ्गदके फूले न समात यों
बिलास बांहबलके । लछिराम लङ्गर लँगूर की लपट तैसी,
ख्यालहीमैं झपट पसारैं खलभलके ॥ उपटी परै हैं करक-
लित गदाकी छटा, विकसे अपर राम लखन सबलके । जौहर
जँजीरे लालमुख हनूमान हेरि, सीरे गात पीरे परैं रावनके
दलके ॥ ३१० ॥

॥ पुनः ॥

दिग्गज नगारे देव गरजत आपहीतैं, सगुन शची त्यों
गौरि पूजन करति हैं । लछिराम सातो दीप सुन्दरी सँवारैं
साज, असुरकी बामैं बन-दावालों जरतिहैं ॥ छीर भरे सागर
सरित सरितान मौलि, मन्द मधु मालती समीर ही हरति हैं ।
अवध अमन्द रामचन्द्र अवतारहेत, भाँवरैं दिनेशकी दिग्-
ङ्गना करति हैं ॥ ३११ ॥

॥ पुनः ॥

गुञ्जरत कुञ्जर झमकि मतवारे बाजि, नागर बटासे नट
बागन मुरनके । लछिराम रथके झमले रङ्गदार मारू, बगर
वितान पौन गौन आतुरनके ॥ जामवन्त जालिम सुकण्ठ
लछिमन वीर, तेजे लहरेजे सब जंगके जुरनके । रावराम-
चन्द्र चतुरगिनी चमूके भार, रेजेहोत कहर करेजे
असुरनके ॥ ३१२ ॥

॥ द्वितीय असङ्गति वर्णन-दोहा ॥

और ठौरही जहँ करत, और ठौरको साज ।

गनत असङ्गति दूसरी, सकविनके शिरताज ॥ ३१३ ॥

॥ यथा कथित ॥

ठकिले मतङ्गमारु गरजे निसान बान, उतरत सेना बांधि
सागर सवेरै हैं । लछिराम लखन महीप रामचन्द्र आगे,
कोलादल बानर विराट भाल मेरै हैं ॥ भूर्ली भाल तिलक
हराको लङ्क घीच करि, हरवर चौहरे-अटान चगी टेरै हैं ।
असुर बधूटी बरवस फौज मालाकार, छुद्र घटिकाके कण्ठमा-
ल करि हेरै है ॥ ३१४ ॥

॥ पुन ॥

घोसाकी धमक अन्धकार भार धूमधाम, मारु बजे बाजे
कोप कातिल कहरसों । जामवन्त जालिम सुकण्ठ केसरी
त्यो सग, हनुमान अगद ललाईकी लहरसों ॥ लछिराम राम
चन्द्र विरद वितान जोर, बग-यो अतङ्क लकषीच भराभरसों ।
हरवर हेरै दशकन्धर कटक चढ्यो, करन किरिट छे त्रिकू-
टके शिखरसों ॥ ३१५ ॥

॥ अथ मृतीयवसंगतिवर्णन-दोहा ॥

आरभित काजहि तजे, और काज मनलाय ।

बरनि असङ्गति भेदको, तीजो घुषकविराय ॥ ३१६ ॥

यथा सवेया ॥

वेद विधान विजैवर हेत, बड़ी विधिसों द्विज देव निहो-
न्यो । औषक बानरको दल आय, हुसासन कुण्डको वारि सों
बो-न्यो ॥ क्रोध भयो लछिराम जहीं, जहीं सामुहें मगल को
घट फो-न्यो । राकन श्रीमप साधन छोड़ि, बली छे गवा हनु-
मान पे दो-न्यो ॥ ३१७ ॥

॥ अथ विषमालंकारवर्णन-दोहा ॥

अनमिल संग समान जहँ, प्रथम विषम यह रीति ।

बरनत कवि कोविद सबै, ग्रन्थनमें करि प्रीति ॥ ३१८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सेनप सुकण्ठ नल केसरी कुमुद सोहैं, हरवल हनुमान व-
जर शरीरको । जामवन्त जालिम सरोहिया लखन बंक, तीखो
वान शत्रुहन भरत गँभीरको ॥ लछिराम अन्धकार भा-
रकोन वारापार, तापर झमेला रघुवंशिनकी भीरको । यु-
गल कुमार सुकुमार लव कुश कहां, परमकठोर घोर दल
रघुवीरको ॥ ३१९ ॥

॥ पुनः ॥

राजवंश-कलश कलपतरु देवनके, कहां वह अल्प
अपावन सकलहै । पारस पुरन्दर धुरन्धर धरम कहां, सवर
कुमारी जीव वात करतल है ॥ परमकुलीन वै कुमार
दशरथ राव, अजब अयोग लछिराम या सकल है । त्रिभुवन
मण्डन महान रामचन्द्र कहां, सूखो सब जूठो सेवरीको
वनफल है ॥ ३२० ॥

॥ द्वितीयविषमवर्णन-दोहा ॥

कारनको रँग औरई, कारज रँग विधि और ।

अलङ्कार दूजो विषम, परमानत सब ठौर ॥ ३२१ ॥

॥ यथा सर्वैया ॥

फोरत भाल मतङ्गनके, बिथुरे मुकताहल त्यों रतनारे ।
यों लछिराम निशाचर वंशके, छार करैं मद रोषमें ढारे ॥

रावणके रथपे झपटै, फनशेप लोके फुफकार हजारे ।
श्यामघटा रघुनाथके हाथसों वान चलै बडवानलवारे ॥ ३२२ ॥

॥ अथ मृतीयविषमवर्णन-दोहा ॥

मेदि अर्थ आभीष्टको, विपरीतै फल होय ।

भेद तीसरे विषमको, वरनें बुध सब कोय ॥ ३२३ ॥

॥ यथा सवेया ॥

आरतसों पुरुपारथ में, परमारथ स्वारथ स्वाद मठी परै ।
त्यो लछिराम गँभीरता मत्र में, मौज महातम कानि कठी परै ॥
श्रीरघुनाथ प्रताप कथान में, ज्वालसी अकून अकू बठी लै ।
माधुरी वार्ते विभीषणकी सुने, रावणके उर ताप चढ़ी परै ३२४
और विषम कर्त्ताको क्रियाको फल होय और अनर्थ होय ।

॥ यथा सवेया ॥

घोर निशाचर बाँद बली, दुहुँ भेयनको भरिके अँकवाच्यो ।
पेज पताल प्रवेशके योँ, लछिराम तिहुपुर सोर षगाच्यो ॥
बीचहि घाय लँगूर घनी, गज ग्राहके चाह सों चार उषाच्यो ।
लैषल्यो रामहि मारिषेको, महिराषने श्रीहनूमान पछाच्यो ३२५

॥ अथ सम अलङ्कार त्रिविध वर्णन-दोहा ॥

यथायोग्य सङ्गम प्रथम, समया धरनत धीर ।

कारनको रँग काजमें, मिले दुतिय गम्भीर ॥ ३२६ ॥

बिनश्रम कारजसिद्धता, आरम्भनमें होय ।

या विधि भूषण त्रिविध सम, वरनें कवि सबकोय ॥ ३२७ ॥

॥ अथ प्रथम यथायोग्यको सङ्ग-यथा कवित्त ॥

जालिम असीले राजवश अवतस अश, परमप्रतापी त्योँ
प्रताप झलाझलको । बहस विरुद्ध क्रुद्ध कातिल झपट घाज,

बैस तरुनापन तिरीछो त्यों युगलको ॥ लछिराम रावण विलो-
कत विहँसि उतै, विकसत रामहेरि वार हलचलको । मन्दर
महान मतवारो मेघनाद तैसो, बजर सँवारो है लखन बाँह
बलको ॥ ३२८ ॥

॥ द्वितीय समकारण, गुणकारजमें, -यथा कवित्त ॥

शोक मैथिलीको हन्यो विहरि अशोक वाग, दूत रघुवीर
भन्यो गुणन गँभीरको । दाह्यो लङ्क प्रलै ज्वालमालासी
प्रतापधर, अछय कुधरै मान्यो बजर शरीरको ॥ परम
विरागी मिल्यो रक्षक विभीषणसों, लछिराम धरणि धनी है
धर्मधीरको ॥ जालिम जलधि कूद्यो हनूमान बलवान, शिरमौर
शाखामृग सुवन समीरको ॥ ३२९ ॥

॥ तृतीय समकारजकी सिद्धि बिनाश्रम आरंभहीमें
यथा सवैया ॥

जा महिमा को सुरेश गणेश फनेश विचारत सो धन आयो ।
जाहि सराहत है गिरिजावर ब्रह्म सनातन वेदन गायो ॥
सङ्गम ते बन जीवनके लछिराम तपोबल भौन भरायो ।
ता रघुनाथके हाथन बैस बिनाश्रम सेवरीसो फलपायो ॥ ३३० ॥

॥ अथ विचित्रालङ्कार वर्णन-दोहा ॥

करै जतन विपरीति कछु, फल विचित्रकी चाह ।

तेहि विचित्रभूषण कहत, बुध कविन्द नरनाह ॥ ३३१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

गरजै निसान वान ढकिले मतंग धारू, हुङ्करत वार संग
खलभल कीबेको । ठनके कमान रोदे झनकै कृपान रचै, रु-
धिर विहद नह योगिनीन पीबेको ॥ कौतुक अनोखो रणरङ्ग

राम रावन में, कहत वने न विपरीति घर छीविको । क्रुद्ध वान
कातिल निशाचर समर-चीच, मरत उमाइ में अमरलोक ली
वेको ॥ ३३२ ॥

॥ अथ अधिक अलंकार वर्णन-बोहा ॥

अधिक होय आधारते, जब आधेय स्वरूप ।

प्रथम अधिक भूषण तर्हा, पर मानत बुध भूप ॥ ३३३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

उन्नत पदार नदी नदन अपारन को, घोल करि विरद
बहाली बगरत है । लछिराम देव नरदेव सन्त घन वन, पावन
परम सीरो आनंद भरत है । विरद बितानमें महीप रामचन्द्र
दीप, दीप कलाधर लो कुतूहल करत है । फैल्यो छीर-सागर
तरङ्गसौ तिहारो यश, छोरमें दिगतनके छलक्यो परत है ॥ ३३४ ॥

॥ द्वितीयअधिकवर्णन-बोहा ॥

जबहि होय आधेयते, अधिक अधार सुरूप ।

अलङ्कार दूजो अधिक, पर मानत कविभूप ॥ ३३५ ॥

॥ यथा सवेया ॥

चौदर्हो लोकनकी रचना, भुवभार समेत वसी उर बीचि ।
जामे नदी नदपुञ्ज पदार, महावन मण्डल ओलि अर्पिचि ॥
जा महिमाकी गंभीरतामें, सुरशम्भुहूके मन आवत सीचि ।
राम सनातन ब्रह्मते राजत, कौशिला अञ्चल छोरके नीचि ३३६

॥ अथ अल्पालङ्कारवर्णन-बोहा ॥

अल्प अल्प आधेयते, लखिय छाम आधार ।

अधिक भेद वरनन करै, जे प्रवीन शृंगार ॥ ३३७ ॥

॥ यथा सर्वैया ॥

श्रीरघुनाथप्रतापकी आँचते, भागतीं देशनके बहिरेहैं ।
सुन्दरी वै लछिराम अदेवकी, मानतीं आनँदको जहिरे हैं ॥
हायल मन्दर कन्दरामें, परीं छाम यौं सङ्क भरी गहिरेहैं ।
आरसीके भुजबन्द रचे, कर कङ्कन मूँदरीके पहिरे हैं ॥ ३३८ ॥

॥ अथ अन्योन्यालंकारवर्णन-दोहा ॥

होय पररूपर दुहूँते, आनँद अङ्ग प्रकास ।

अन्योन्यालङ्कार तहँ, प्रथम कहत सविलास ॥ ३३९ ॥

॥ यथा सर्वैया ॥

वै उनके धनुवान सँवारिकै राखत सामुहें मौज गँभीरके ।
वै लछिराम उमाहनमें कल कौरें निहारत छोरें मनीरके ॥
वै उनके मुखै हेरि भैरें गरे माल घने सुकताहल हीरके ।
भागभरे सबलोग सराहत आनँद लखन श्रीरघुवीरके ३४० ॥

॥ अन्य प्रकार-यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठसों हरष हनूमान हनूमानसों सुकण्ठमें उमाह
उमसति है । जामवन्त वीरसों विभीषन बहाली विभीषनते
सुजायवन्त सीमा हुलसति है ॥ गज रथ बाजी सों विलास
रघुवंशी रघुवंशिनसों बाजी गजप्रभा विलसति है । चतुर-
ङ्गिनी सों राम लखन विराजें राम लखनसों सेना चतुरङ्गिनी
लसति है ॥ ३४१ ॥

॥ अथ विशेषालंकारवर्णन-दोहा ॥

अनाधार आधेय जहँ, प्रथम विशेष प्रमान ।

चतुर चारु बरनन करै, ग्रंथनमें सुखदान ॥ ३४२ ॥

॥ यथा सवेया ॥

वाँहवली हनुमान निशाचरी सेनमें कीनी महाउतपातहैं ।
 रावनके रथमें लछीराम हन्यो गदा सारथी चक्र निपात हैं ॥
 सेनपकेते लपेटि लँगूरमें दीने उढाय फटे फहरातहैं ।
 सागर व्योमके बीच लटे उलटे दल ऊपरतेमढरातहैं ॥ ३४३ ॥

॥ द्वितीय वर्णन-दोहा ॥

लघुभारम्भहि में जहां, अधिक सिद्धि द्वे जाय ।

दूजो कहत विक्षेप तहैं, अलङ्कार सरसाय ॥ ३४४ ॥

॥ यथा सवेया ॥

जाहि विलोकि डरे यमराजऊ दूत विचारे विचार अधीर में ।
 नाम न जानतहैं रघुवीरको यो लछिराम गुमान गँभीर में ॥
 साधन थोरे कहौलौं कहौं मतवारे न डारत हैं पग नीरमें ।
 नीर में आवतही सरयूके फलें फल चान्यो सुरापिन भीर में ॥

॥ तृतीयवर्णन-दोहा ॥

बहु थलमें वरनन करे, सके वस्तु परभाव ।

तहैं तीसरो विक्षेप गनि, वरनत पंडित राव ॥ ३४६ ॥

॥ यथा सवेया ॥

गोकुल गोकुलनाथ धने, ब्रजमें ब्रजराज सनेह सँवारे ।
 द्वारिका मण्डल द्वारिकानाथ, जगे जगन्नाथ समुद्र किनारे ।
 व्योमयली महि सातों पताल, लसे लछिराम प्रताप पसारे ॥
 चौदहों लोक सनाथ करें, रघुनाथ अनाथके नाथ हमारे ३४७

॥ अथ व्याघात अलंकारवर्णन-दोहा ॥

जहां औरते औरहैं, फारज सङ्ग विरुद्ध ।

प्रथम कहत व्याघात तहैं, जे प्रवीन मति शुद्ध ॥ ३४८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शुभग सहोदर सुजान गुनमान पुरो, रहत हजूरै रह्यो प्रेमके
लहरमें । लछिराम रामसों मिलत एक बार टूट्यो नातो कुल
धरम अखण्ड रोष बरमें ॥ दाहिने सुकण्ठ सोहै जामवन्त
जालिमके, लखनै लखाय कमनैती हरबरमें । मेघनाद रावनके
रथ पथ आगे वान, मारत विभीषन विशटलों समरमें ॥ ३४९ ॥

॥ प्रथम व्याघात-यथा सवैया ॥

श्रीरघुवंशिनकी कलंगी, कलपद्रुम दीन हितू वरजोरैं ।
कौशल भूपर भाजन भाग, अशीशत हैं लछिराम करोरैं ।
जासों बली रघुवीर सदा, बटपारन शोकसमुद्रमें बोरैं ।
ताहग कोर कटाक्षनसों, सब सन्तनके भवबन्धन छोरैं ॥ ३५० ॥

॥ पुनः ॥

वेद पुरानमें चारु चरित्र, विचारत हारत हैं विधि हीरे ।
शङ्कर शारदा गौरि गणेश, जपैं लछिराम यों नाम गंभीरे ॥
जाकी झलाझलमें रद रङ्ग, जपैं जग राकस वंश जँजीरे ।
श्रीरघुनाथके वान बली ते, करैं सब सन्तनके मन सीरे ॥ ३५१ ॥

॥ द्वितीय व्याघातवर्णन-दोहा ॥

जहँ कारजकी सिद्धिता, लखि विरुद्धके साथ ।

व्याघातहि गनि दूसरो, अलङ्कार शुभ गाथ ॥ ३५२ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

जामवन्त जालिम जमाति सङ्ग जङ्ग बाज, सुवर सुकण्ठ
विभीषन गुनगथमें । हनुमान् अङ्गद सुकेसरी कुमुद नील
नागर सुखेन गाये विरद अकथ में ॥ शत्रुहन लखन समर
भट भारे कटै, रोषे रघुवंशी रही ताप न भरथ में । सेन

चतुरङ्गिनी सँहारेँ लव कुश त्यों त्यों फूलेना समात रामचन्द्र
फूल रथमें ॥ ३५३ ॥

॥ अथ गुम्फ अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

परम्परा जहँ वरनिये, कारनको शुभ रूप ।

अलङ्कार परमान किय, गुम्फ सुकवि रसरूप ॥ ३५४ ॥

॥ यथा-सवैया ॥

भाषमें सन्तनको सतसङ्ग है, सन्त सिखावत ज्ञान गँभीरको ।
ज्ञानसों वेद विवेक विचार, विवेक विचारसों साधन धीरको ॥
साधनसों लछिराम उदार, उदारतासों दया धर्म क्षीरको ।
सागर पारसरूप समोज, मिले तव सासुहँ श्रीरघुवीरको ३५५

॥ अथ एकावलीअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

अहित मुक्तके सङ्ग जहँ, सुपद जँजीरा जोर ।

अलङ्कार एकावली, यों भनि कविशिरमोर ॥ ३५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

ठकिले मतङ्ग झनकारत जँजीरें जोर, घोंसाकी धमक
तिन सौहँ घहरातहँ । घोंसाकी धमक आगे जामवन्त जालि-
मको, जमकी जमातिलों जमक लहरातहँ ॥ जामवन्त आगे
त्यों सुकण्ठ यों सुकण्ठ आगे लखन सदल लहरातहँ । लखन
सदल आगे धूमधाम राम रामचन्द्र आगे नाहरीनिसान
फहरात है ॥ ३५७ ॥

॥ पुनः ॥

रस-बीर लीला रामचन्द्रपे डुचन्द केसी, दशगुनी कौचन
सवन्द झलाझलपे । लछिराम परमालीतें पचासगुनी

बगर बहाली पैजपाली बांह बलपै ॥ बलकी परतिबांह बल
उतसाहनतै, सौगुनी विलांचन बदन मारू दलपै ॥ लोचन
बदन तैं सरासर सहस गुनी, जङ्ग जोर भ्रूधनु मरोर भाळ
थलपै ॥ ३५८ ॥

॥ अथ मुक्तप्रकेशी अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

एकावलिके बीच जब, प्रश्नोत्तर शुभरङ्ग ।

मुक्तप्रकेशी तहँ कहैं, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ ३५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शोभा सरवरके विशाल हैं मृणाल कैसे, जैसे सुण्ड कलभ
सँवारे विधि धीरके । कैसे सुण्ड कलभ सँवारे विधि धीर
वर, जैसे ये भुजङ्ग भाये मण्डन शरीरके ॥ लछिराम कैसे हैं
भुजङ्ग सुखमासों भरे, जैसे मरकत खम्भ खलक सुधीरके ।
मरकत खम्भ कैसे परम प्रचण्ड जैसे, भुजदण्ड जुगल
जसीले रघुवीरके ॥ ३६० ॥

॥ अथ मालादीपक अलंकार वर्णन-दोहा ॥

दीपक अरु एकावली, को सङ्गम जहँ होय ।

मालादीपक भूषनै, परमानत सब कोय ॥ ३६१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

जोगानल मण्डित गिरीशलों समाधि रचि, रातो दिन
परचै अशोक उपवनमें । लछिराम तापर अतङ्क लङ्क रावन
को, एकसी भयङ्कर कलङ्क त्रिभुवनमें ॥ सङ्गमी सनेह विर-
हाकुल स्वरूप राम, सने स्वेद वही ब्रह्मराशि पुलकनमें ।
वरसैं न कैसे अँसुवानके प्रवाह बस्यो, घनश्याम रामचन्द्र
मैथिली चम्वनमें ॥ ३६२ ॥

॥ सवेया ॥

पावन देव पुरातन ब्रह्म हैं ध्यान धरे मनहोत अशोक है ।
 शारद नारद शेष गणेश गन्यो शिरमौर महेशको थोक है ॥
 वेद पुराणनमें लछिराम यही चरचा कविकल्पना कोक है ।
 श्रीहनुमान हिये रघुनाथ बसैं रघुनाथहीमें सब लोकहैं ३६२ ॥

॥ अथ सारअलङ्कारभिविषवर्णन-बोहा ॥

गुन वरधनके दोषते, के दुहूँन सनमान ।

सार अलकृत करतहैं, कविवर तीनि प्रमान ॥ ३६४ ॥

॥ यथा कविस ॥

पल्लव नवलहूते सुमन सिरीपशुभ, सुमनसिरीपहूते दानी
 मनहरको । लछिराम दानी मनहरते हरप राज, फेन फरकीओ
 छीर सागर लहरको ॥ छीरसर फेनते मलेज परिमल, परिमल
 ते सुभाव सुधो मखमलवरको । वरमखमलहू ते कोमल
 कमल मञ्जु, कोमल कमलते सुभाव रघुवरको ॥ ३६५ ॥

॥ द्वितीय दोषकारी यथा-कविस ॥

बारहो विभाकरते बाड़वा अनल ज्वाली, बाड़वा अनलते
 फनाली शेषवरमें । शेषफन ज्वालासों लखनकर धान, धान
 लखनते कालकूट कातिल गहरमें ॥ लछिराम कालकूटहूते
 ब्रह्मफांस, ब्रह्मफांसते प्रलै प्रकाश वासव-वजरमें । वासव
 वरते कहर कालदण्ड, कालदण्डते कहर राम रावन सम-
 रमें ॥ ३६६ ॥

॥ दोषगुणकारी-यथा सवेया ॥

काठते चत्रत घोर पदार पदार तैं ही खलकी अथलीको ।
 ही खलकी अथलीते विसासी विराजत केवर काम छलीको ॥

कैवरते लछिराम लखे महामृशाल है बलराम बलीको ।
है सबहीते कठोर सुन्यो व्रत श्रीरघुवीर प्रतापबलीको ३६७॥

॥ अथ यथासंख्यअलंकारवर्णन-दोहा ॥

वस्तु जहां बरनन करें, क्रम सरीति शुभसाज ।

यथासंख्य भूषण तहाँ, बरनत बुध कविराज ॥ ३६८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

पन्नगराज फनावलीलें परिपूरो पतारु पुरी क्रमुदै रहै ।

भूपर तुङ्ग तरङ्गलें शारदा त्यों रतनावलीको समुदै रहै ॥

मङ्गल व्योम थली लछिराम प्रभाकर बारहोलें प्रमुदै रहै ।

मैथिली श्रीरघुनन्दनको चिरजीवी प्रताप त्रिलोक उदै रहै ३६९

॥ कवित्त ॥

मङ्गलीक चरन करन अधरन चठी, लालिमा गहर गुन
कोमल बटोरके । लछिराम जंघ भुजदण्डन प्रचण्ड डर,
बिरचे कठोर सान अजब हलोरके । भुजमूल भाल चन्द्रवदन
विलास हास, परम प्रकाश पुञ्ज रस वीर बोरके ॥ भौंह भंग
लोचन तिरीछे जुलफन वारे, बार घुघुरारे कारे लखन
किशोरके ॥ ३७० ॥

॥ अथ पर्यायअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

इक आशय क्रमसों जहां, धरि अनेक इक रीति ।

अलङ्कार पर्याय तहँ, प्रथम कहत करि प्रीति ॥ ३७१ ॥

॥ यथा सवैया ॥

अङ्गद रीछपती नल नील सुखेन सुकेशरी आनँद पागे ।

लखन रामके त्यों लछिराम उमङ्ग भरे मन यों अनुरागे ॥

धानिवे मैथिलीकी कुशलात मुफादिवे भारी जलाइल आमे ।
वानरी सेन सुकण्ठ बली हनुमानहीको मुख हेरन लागे ॥ ३७२ ॥

॥ द्वितीयवर्णन-दोहा ॥

जब अनेकको आसरे, राखत कमसों एक ।

अलङ्कार पर्याय तहैं, दूजो गनि सविवेक ॥ ३७३ ॥

॥ यथा सवैया ॥

वानर जामें विराट महाबली, रीछ भयङ्कर भूरि कुलार्चि ।
सेनप श्रीहनुमन्त सुकण्ठ, मखेन सुकेशरीमें भरी आँचि ॥
लक्ष्मणकी धनुवान प्रभा, लछिराम विजे रणखेलको राचि ।
रामचन्द्र चतुरङ्गिनीते भरी, आझ विभीषणके मनसाचि ॥ ३७४ ॥

॥ अथ परशुसअलंकारवर्णन-दोहा ॥

वीषे तनकाइके जहां, मिले पित्त बहुसाज ।

परशुतभूषण तहैं कहैं, जे प्रवीन कविराज ॥ ३७५ ॥

॥ यथा कविस ॥

बाँहवली वीरताके गरजें निसान घोर, बेरी धन दारुन प्रता-
पानल बलकी । लछिराम रामनीति कीरति तरङ्ग गङ्ग,
पूजसी दिगङ्गन्त दिगन्तनमें छलकी ॥ चिरजीवी चान्यो गुम
चौदहों भुवन पर, पेसी आनि घानि रामचन्द्र करतलकी ।
दण्डक विपिनबारे बगर किरात फोल, कन्द मूल दे दे राशि
लहैं चान्यो फलकी ॥ ३७६ ॥

॥ सवैया ॥

जा महिमाको सवारत शम्भु, विचान्यो जळ रघो रावन रूठो ।
चारिहु षेदनमें घरचा, यही पूरनब्रह्म प्रताप असूठो ॥

औठर दानी गरीबनेवाज, कृपानिधि यों लछिराम न झूठो ।
चाच्यो पदारथ को लह्यो सेवरी, तारघुनाथहि दै फल जूठो ॥

॥ अथ परसंख्याअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

थपै वस्तु थल और में, करि निषेध थल और ।

परसंख्याभूषण तहां, बरनत सुकवि सगौर ॥ ३७८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बन्दनबलितबेस बगरबिहदमौलि, कुंडलित शुण्डरदमद-
के प्रचारमें । बरन गणेश मणिमंडिस रतन झूल, झूमिके चलत
हैं मलिन्द झनकारमें ॥ लछिराम रावरे मतङ्गनपै रामचन्द्र,
बैरही प्रभा जो गजरथके अगारमें । विधि विकरारमें न दिग्गज-
कुमार में न, कज्जलपहारमें न घन बन भार में ॥ ३७९ ॥

॥ पुनः ॥

असुर मतङ्गनपै सोर घनघोर सङ्ग लागत गरद मेले गरबन
भारी में । लछिराम लालितलपटलहरीली लेल, तड़पीली ते-
जमान तड़प तयारीमें ॥ रावरे करन रामचन्द्र जमधर जौन
ज्वाली जङ्ग जौहर अतङ्क अवतारीमें । विज्जु विकरारी फण
पन्नगी हजारी में न बजरकी बारी में नवबर कुमारीमें ॥ ३८० ॥

॥ पुनः ॥

झगर मतङ्गमद करत मलिन्द पान, झूमत मतङ्ग मत-
वोरलें रगरमें । तीतर सुरग बनचरमें विरोध बोध हीन बान
कण्टक पराग फूल गरमें ॥ लछिराम तरल तुरङ्ग
दीप तेज तातें, भरम पराजै बैरीवृन्दके बगरमें । चित्र की
समाजें लाजरहित विराजें राजें, राजनीति ऐसी रामचन्द्रके
नगरमें ॥ ३८१ ॥

॥ पुन ॥

मदमकरन्द सम्पुटित साँझ कञ्ज पाके, बिटप सत्रोट
फल भूपर गिरत हैं । बचन विलास बशीकरण अमी है चन्द्र
मुखनिचकोर व्यभिचारीलों पिरत हैं ॥ लछिराम राव राम-
चंद्र राजनीति ऐसी, ज्वाला हठ जोगिनके अङ्ग अभिरत हैं ।
नगर डगर बन बागन बगर एक, धारही मलदि मतवारेलों
फिरत हैं ॥ ३८२ ॥

॥ अथ विकल्पअलंकार वर्णन-बोहा ॥

के बह के बह करहिगे, जहैं याविधि सुविचार ।

तहैं विकल्प भूपण कहत, जे प्रवीणशृङ्गार ॥ ३८३ ॥

॥ यथा सवेया ॥

नाम हमारो चमूपति रावन, या जग में यज्ञ पावन छेहों ।
टारिहों टेक न काल भिरे, भट सासुहें दूसरे कौन गने हों ॥
जायचहै रहे राजसमाज, नमें लछिराम कछू पछितेहों ।
के रघुनायसे युद्ध करौं, के गिरीशको फेरि दशौं छिर वेहों ॥

॥ अथ द्विविधिसमुच्चय अलंकार वर्णन-बोहा ॥

काहू यल बहु भाव जहैं, उपजत एकै सङ्ग ।

प्रथम समुच्चय तहैं कहत, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ ३८५ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कोरैं धान तरकस फोरैं त्यो कमान रोदे ठनकत जेर
जङ्ग बालीकी लहरमें । फरके प्रचण्ड भुजदण्ड त्यो बहाली
नेन खरके युगलकर मौन भराभरमें ॥ लछिराम रामचन्द्र
रावण चमूको हेरि ह्वरेहै कदम्बदार दौरा हरवरमें । भोहैं

भङ्ग लाल भाल बदन विशाल ओज, अङ्ग अङ्ग फूले न
समात बखतरमें ॥ ३८६ ॥

॥ पुनः ॥

आगमन राम अवतारके बधावरे में, त्रिभुवन छावै अंश
जगर मगरमें । लछिराम शारद महेश मुनि शिरताजें, देव
देवराजें मौजें देविन रगरमें । मङ्गल अवाजें साजें सुंदरी
समाजें राजें, रङ्ग चारु कौशिला के चौकठ कगरमें । दिग्गज
दराजें दीह दुन्दुभी दराजें बाजें, बगर बगर बाजे कौशिला
नगरमें ॥ ३८९ ॥

॥ द्वितीय वर्णन ॥

जहँ अनेक इक सङ्ग है, करै सुऔरै साज ।

भेदस मुञ्चय दूसरो, बरनत कविशिरताज ॥ ३९० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बगर बगर बाजें नगर निसान भारी, बगरे विमानव्योम रवि
रथभोरेंमें । लछिराम जागे भाग नाग नर देवन के, मङ्गल
महेश गावें हरष हलोरेंमें । बरसैं महीप दशरथराज पथ पौरी,
गज रथ मोती कर झमक झकोरेंमें । अञ्चल उदयगिरि अम-
न्द रामचंद्र चारु, कौशल कलपतरु कौशिलाके कोरेंमें ॥ ३९१ ॥

॥ पुनः ॥

दशरथराव रामचन्द्रकी छठीमें चारु, विकसे बसन्तकुसु-
माकर बहारसे । लछिराम सातौं दीप उमगि अशीस देत, हीरा
हेम हिमालै सुमेरु अवतारसे ॥ मौजमें मतङ्ग गजरथके कलोलैं
खुले, मालाकार मण्डित रतन मोतीहारसे । घन बन भारसे
पहारसे डगर डोलैं, बगर बगर बोलैं दिग्गज कुमारसे ॥ ३९२ ॥

॥ पुनः ॥

अधकटे लाखन लरकि मतवारेकटे, कोटिन फरकि रहे लोटत
 गरदमें । घोर घमासान धान घरसे बुहूँनदल, रावण महीप
 रामचन्द्र रोपमदमें ॥ लछिराम झङ्करजमाति जोगिनीन लेले,
 लावे मुण्डमाल रही ताव न बरदमें । पटके पछारे हनुमानके
 लघारे द्वारे झपटै हजारे भरे भूपर दरदमें ॥ ३९३ ॥

॥ सवेया ॥

वारिदलों दक्षरत्य महीप लुटाय रहे रतनावली सजै ।
 रङ्गन राव रचे लछिराम चढ़े गजरत्य बने शिरताजै ॥
 देवधूटी विमाननते घरसे सुमनावली चासव गाँजे ।
 श्रीरघुनन्दनके अवतारमें औधवहार बघावरे वाँजे ॥ ३९४ ॥

॥ पुनः ॥

औध उदै उमडी त्यों बढी, रघुवशिनकी कलंगी बिस धाँसे ।
 गाँधे गुनी धिरदावलीको, उहँ रङ्ग तरङ्ग सबे सुरदीसे ॥
 बुम्बुभी दीह मृदङ्ग धजे, लछिराम सराहिरहे सर्वाँसे ।
 श्रीरघुनाथ लियो अवतार, तिहँपुर हाय पसारि अक्षीसे ३९५

॥ कविस ॥

श्रीबसिष्ठ अङ्गद सुकण्ठ नल हनुमान, द्विविद मयन्द
 जामवन्त जोगलताके । लखन भरत झञ्जुसूदन सुमन्त नील,
 लङ्केश्वर केसरी कुमुव छेमछताके ॥ लछिराम रामचद्र मैथिली
 सभासनते, सदलसुमेर त्यों सुपेनशुभसत्ताके । अवतस राजवंश
 रसनसिंहासनपे, सप्रदों सभासद हैं कौशल चकत्ताके ॥ ३९६ ॥

॥ पुनः ॥

राजें रामगङ्ग निरमली कुण्ड गोप्रतार श्रीसहस्राधार स्व-
गंदार भार गारमें ॥ सप्तहरि क्षीरेश्वर नागेश्वर देव काली
लछिराम कोटेश्वर जगर मगरमें ॥ जन्मभूमि कनकभवन यज्ञ
देवी बुध सज्जन प्रमोदवन आनंद बगरमें ॥ सीताराम लखन
भरत शत्रुहन मणिरतन सिंगार हार कौशल नगरमें ॥ ३९७ ॥

॥ अथ कारकदीपकअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

एकहिमें जहँ बहुक्रिया, उपजै क्रमके संग ।

अलंकार वर्णन करै, कारक दीपक ढंग ॥ ३९८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

फूलि रहै भुजदण्ड प्रचण्ड सुकौचके बन्द सबै करके हैं ।

त्यो लछिराम विशाल प्रभासुख ज्वालिया रंग प्रलयकरके हैं ।

भारी गदा उछलै करमें वा लंगूरके लंगर यो खरके हैं ।

रावणकी चमू हेरतही हनुमानके रोम सबै फरके हैं ॥ ३९९ ॥

॥ अथ समाधिअलंकार वर्णन-दोहा ॥

और हेत मिलिकै जहां, कारज सुगम सहेत ।

तहँ समाधिभूषण कहत, जे कविपरमसचेत ॥ ४०० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ हनुमान अङ्गदादि वीर, ज्वाली जामवन्त
दल कहर कलापसों । लछिराम लखन बनेत वरदानी वीर,
वानजा सहस्रफन सूरज सतापसों ॥ नल नील सागर उजा-
गर त्यो सेतु कर, मण्डित भुवन रामचंद्रके प्रतापसों । लंक
पंक वारन विदारन अदेव भयो औरऊ सुगम श्रीविभीषन
मिलापसों ॥ ४०१ ॥

॥ अथ प्रत्यनीकअलंकारवर्णन-बोहा ॥

प्रबलशत्रुसों द्वारिके, ताहित अहित उपाय ।

प्रत्यनीक भूषण तहां, वर्णत पण्डितराय ॥ ४०२ ॥

॥ यथा कबिस्त ॥

जापद पराग परसत परमानंदमें, नाग नरदेव भाग सम
गरवसों । लछिराम जाकी शक्ति मैथिली प्रतापराशि, अनुष
लखन भयो वीरता गरवसों ॥ ताहुको न डरत अकस राशि
पूरवकी, मथनके बेले रोष सागर सरवसों । विष्णुरूप राव रा
मचद्रदि समुझि राहु, अथला सतावत प्रभाकरे परवसों ॥ ४०३ ॥

॥ सबैया ॥

वीसठ हायनमें ले कृपाण कुतूहली वेप विराट बनायो ।
मेघ भयङ्करसों गरज्यो तृण ओट दे वाणी गंभीर सुनायो ॥
यों मुनि रोष भयो लछिराम कही तू न मानत रावण गायो ।
रामकी हेरि प्रचण्ड चमू छली मैथिलीको डर पावन आयो ॥

॥ अथ काव्यार्थोपनिअलङ्कारवर्णन-बोहा ॥

बह कीनो तो यह कहा, ऐसो जहां विचार ।

याविधि वर्णें सुकविजन, काव्यार्थोअलंकार ॥ ४०५ ॥

॥ यथा कबिस्त ॥

नील नल अगद सुकण्ठ केसरी त्यों कुब्ज, कृसुद सुषेण
हनूमान रणरेलेमें । जामवस्त जालिम जमाति जमराजी संग,
वानर विराट भाळु वीर वगमेलेमें ॥ लछिराम लखन प्रचण्ड
घनुधर तेसो, रावण कदाहै रामसमर कुलेलेमें । बांध्यो जिन
जलधि भयकर घरीमें तिन्हें गाहिषो त्रिकूट कहा समर जमे-
लेमें ॥ ४०६ ॥

॥ अथ काव्यलिंगअलंकारवर्णन-दोहा ॥

जोग समर्थन अर्थ जो, ता सामर्थ करैन ।

काव्यलिंग भूषण तहां, वर्णत सुकवि सचैन ॥ ४०७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शारद महेश गणपति शारदेश गाँव, दानी चारु चौदहों
रतन राशि खत्ताके । सागर लों जाके बाँहबलको न वारापार,
अभय रहत लछिराम छेमछत्ताके ॥ चौदहों भुवन महाराज
रामचन्द्र बीर, रन बन बबर असुर गजमत्ताके । फारिहँ करेजे
केलि-पत्तासे कुदिन तेरे, दामन लगेहँ हम कौशलच-
कत्ताके ॥ ४०८ ॥

॥ पुनः ॥

सागर सुधासी लसै अवधनगरतट, बगरैं बधूटी त्यों विमा-
ननेके रेलमें । लछिराम जामें करैं मञ्जन सुवारेहीसों, ब्रह्मरूप
राम रघुवंशिन झमेलेमें ॥ रामकी दोहाई जम तोको न डरत
वही, परसत पौन रज रेत लहरेलेमें । औरेलों बिलात अघ
मन्दर हलेरे भंग, रामगंग तरल तरंगनके मेलेमें ॥ ४०९ ॥

॥ बरवै ॥

पाप न तोसों डरपै या लछिराम ।

अधम उधारन सबहित सियबर राम ॥ ४१० ॥

॥ अथ अर्थान्तरन्यासअलंकारवर्णन-दोहा ॥

कहि विशेष सामान्य करि, फेरि समर्थ ताहि ।

यों अर्थान्तरन्यासको, सुकविन रूप सराहि ॥ ४११ ॥

॥ यथा सवैया ॥

जामें बस्यो वडवानल जालिम, ज्वालिया त्यों जलजन्तु भन्योहै

दारुन ऊपरमें सुरसा जो, न मनि सैहारतमें हरकोई ॥
 तुग तरंगनकी महिमा, लछिराम लखे न कियो हरको है ।
 सागर कूषो बड़ो हनुमान, कहा रघुनाथके किंकर कोई ४१२
 ॥ बरवे ॥

अंगद पग नहिं टा-यो रावण-बझ ।

कौन घात जन रघुवर सुर अवतश ॥ ४१३ ॥

॥ द्वितीय वर्णन दोहा ॥

घरनि प्रथम सामान्यता, फिरि विशेष सामर्थ ।

गनि अर्थान्तरन्यासको, भेद दूसरो अर्थ ॥ ४१४ ॥

॥ यथा सवैया ॥

वानरबशकुमार मुकेसरी, साथी सुकण्ठको भौति भलीमें ।

भक्त भ-यो अनुराग तरंग, लसे अनुरागिनकी अवलीमें ॥

तापर एक बड़ो गुण या, लछिराम सैवारथो विरञ्चि बलीमें ।

श्रीरघुनाथ हरोलीको अक, लिख्यो हनुमानकी भाळपलीमें ॥

॥ बरवे ॥

राजकुँवर बलमण्डन लखनकुमार ।

तापर अपर अपूरव सियवरप्यार ॥ ४१६ ॥

॥ अथ विकस्वरजलंकारवर्णन दोहा ॥

घरनि विशेष सु प्रथमहीं, फिरि सामान्यप्रमान ।

फिरि विशेष ताको किये, विकस्वर भूषण जान ॥ ४१७ ॥

॥ यथाकविस ॥

मुनि मख राखे अभिलापे रूप गौतमीके क्षम्भुचतु तोरे
 वेस मिथिलेशमनके । लछिराम तापे बडी घात या कहा है
 जाके सेवक सुरेश अलकेश मन फनके ॥ आनंदमें जाकी

दानधारा न रुकत परमाने दीनबन्धु काटैं साँकर सुमनके ।
पारस पुरन्दर धुरन्धर धरम राम, रघुवंश भूषण कलस त्रि
भुवनके ॥ ४१८ ॥

॥ बरवै ॥

लखन बाण अतितीक्ष्ण बड़ी न बात ।

फणसहस्र अवतारी जगविख्यात ॥ ४१९ ॥

॥ अथ प्रौढोक्ति अलंकारवर्णन-दोहा ॥

कथन करै उत्कर्षता, हेत हेतको लाय ।

अलंकार प्रौढोक्ति तहँ, बरणै कवि सरसाय ॥ ४२० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

मण्डित अमृत छत्रमाला पन्नगेश देश बर फन साला
मलयजहै अरति है । अम्बर अमर अमरेश उपहार लै लै
सूरज सुधाकरहि पावन करति है ॥ लछिराम रामचंद्र
कीरति कलपलता जब जब सातौ सिन्धु पार उतरति है ॥
जैतवार जङ्ग रतनाकर तरङ्गमौलि तब तब हीरक-बितान
बितरति है ॥ ४२१ ॥

॥ पुनः ॥

बिलपति कुमुद अदेखी सने सोकसर, सातौ दीप सुहृद
सरोज पखरे रहैं । लछिराम लालित मरीचिन बगरसो हैं, भास-
मान बारहो कलाके भभरे रहैं ॥ तेरहो प्रभाकर प्रताप राम-
रावरेसो, बटपार वैरी वन बन्दर बरे रहैं । दिग्गज सदल महा-
मंगल मसाल हेरि, अगरे दरद दिगवारमें भरे रहैं ॥ ४२२ ॥

॥ पुनः ॥

चारु चन्द्र चन्द्रिका शरदसो प्रकाश करै, राजत शिला-

सों मिल्यो गङ्गकी लहरतैं। मङ्गलीक मलय मदेशकी प्रभासों
पुत्र पावन परम राजहसन सदरतैं ॥ जेतवार चौर शेष
सगमीसों लछिराम, शुभग सुरीन मुकतालइके लरतैं । सीरो
सेत जस रावरे को राव रामचन्द्र, नीर छीर-सर हिमालयके
सिखरतैं ॥ ४२३ ॥

॥ अथ सम्भावनामलंकारवर्णन-बोहा ॥

जो यों हो तो यों कहे, सम्भावना मुरूप ।

कविकुल वरनत हैं सदा, याप्रकार मुअनूप ॥ ४२४ ॥

॥ यथा कविस ॥

जाके घाँदवलको अनेक अमरावतीलों, जीत्यो देवराज
देववशनके थोकोमें । लछिराम जाकी हाँक प्रलयघनघोर
ओर, खलभल पारत दिगन्तनके ओकोमें ॥ धूमधाम रावण
महीप रामचंद्र सोहैं, तिरछोहैं तूही महावीर अवलोकोमें । बाण
सों विदारै जब लाली भेषनाद भाल, ज्वाली जङ्ग लखन स
राहों तव तोकोमें ॥ ४२५ ॥

॥ पुन ॥

जाके बाण परम प्रचण्डकी कथान गावैं, ठौर ठौर असुर
बधूटी करिमतसों । लछिराम तेसे भुजदण्डके अखण्ड ओज,
बेरिनके भाल करैं कालदण्ड छतसों ॥ धूमधाम लङ्कर
लँगूरमें कपीशहूकी, वीसविसे वारतैं अचूक परवतसों । रावण
समर तब रामसम होतो जब लखनसों भाई औ इरोल
हनुमतसों ॥ ४२६ ॥

॥ बरवे ॥

रामच द्रदल-महिमा तव फदिजात ।

जो कहूँ शारद कोटिन मुख जलजात ॥ ४२७ ॥

॥ अथ मिथ्याध्यवसितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

मिथ्याहीमें जहँ करै, मिथ्यासिद्धि प्रधान ।

मिथ्याध्यवसित भूषणहिं, तहँ वर्णत मतिमान ॥ ४२८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

काटिहौं बीसो भुजा रद आपने, मुण्ड मिँले दशौं भालको फोरौं
बाटिहौं ज्वान जटायु बुलायकै भागिहौं बेगि नयौं मुख मोरौं।
जङ्ग जुरौं रिपु दौन भरत्यसों वा क्षण हीं लछिराम निहोरौं ।
रावण तौ मैं त्रिकूटधनी जोपै वारिधिमें बली बालिको बेरौं।

॥ बरवै ॥

भुव अकाश रवि चन्द्रहि करि जलपान ।

लखन सवानहि मिलिहौं रावण प्रान ॥ ४३० ॥

॥ अथ ललितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

कहिय कछुक प्रतिबिम्बसों, तासु बनाय सुधीर ।

अलंकार वरणै तहाँ, ललित सुमति गम्भीर ॥ ४३१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कारज सरै न कीन्हें नगर अतङ्कपथ बगर स्वयम्बर
महीपन लरजतैं । लछिराम राम रघुवीर मैथिलीको साथ
छूटे ना परशुराम रावरी गरजतैं ॥ भङ्ग भयो पलमें शरासन
मदेश अब जुरिहै न केहूँ विधि बलकी दरजतैं । औसर
बितीते अनरथ उपचार केहूँ बिछुन्यो कमान बाण आवत
अरजतैं ॥ ४३२ ॥

॥ सवेया ॥

दूत कष्टो जिन दाह्यो त्रिकूटको, अक्रन्द वीरता गाई अथा है ।
 त्यों लछिराम न मानी कछु, अब होत कहा बहुती परवा है ॥
 केसी करी चतुरङ्गिनी सेन, चढी रघुनाथपै रोप प्रभा है ।
 रावण ता खन मानी न तू, विष घोय अमीफल चाखन चाहे ॥

॥ पुन ॥

रावण तू अपमान कियो, भली भौतिसों राजसभा सब गावे ।
 आतुर जाय मिल्यो रघुनाथसों, लके भयङ्करी ज्योंत बताने ॥
 ओसर चूक्यो न फेर मिले, लछिराम करी अब जो मन भावे ।
 आयहे रामको छोड़ि भला बन्यो, राव विभीषणे कोन बुलावे ॥

॥ अरवे ॥

मूढ तीनि पन धीते विनु रघुनाथ ।

अब तू क्यो शिर पीटत मलि मलि द्राय ॥ ४३५ ॥

॥ अथ महर्षिअलङ्कारधिविषवर्णन-दोहा ॥

मनवाञ्छितफलसिद्धि जई, श्रमविन होय सुखस ।

प्रथम प्रदपण तहै कहै, जे कवि शुभग सुरस ॥ ४३६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पसरे प्रभायें पन्यो पारस मिल्यो सो खिल्यो, मद्गद
 कण्ठ भरे आनंद सदनतैं । बृक्षिषे कुशल वारिलोचन जुगल
 तऊ, परम प्रताप यों करोरिन मदनतैं ॥ लछिराम धनधोर
 दुन्दुभी अवार्जे महा, मङ्गल अवध श्रीगणेशके रदनतैं । सौरभो
 श्रीभरत रामचन्द्रको सरूप तोलों, आगमन जान्यो हनुमा-
 नके वदनतैं ॥ ४३७ ॥

॥ सवैया ॥

हेरिबे हेत विहङ्गके मानस, ब्रह्मसुरूपहिमें अनुरागे ।
भाय भरतथसों भेंट्यो तहीं, पुलके तनु यौं लछिराम सभागे ॥
मंजु मनोरथ फौलि फलयो, परमाने सवै तप पूरण जागे ।
मौज मढ़े उमड़े कहणाखड़े, श्रीरघुनाथ जटायुके आगे ४३८

॥ बरवै ॥

उर अगस्त्य अनुसुइया मनरथ होत ।

सोहैं श्रीरघुनन्दन भानु उदोत ॥ ४३९ ॥

॥ द्वितीयप्रहर्षण वर्णन-दोहा ॥

मनवाञ्छित फलतैं अधिक, फल विनश्रम मिलिजाय ।
समुझि प्रहर्षण दूसरो, हरष न हृदय समाय ॥ ४४० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

अङ्गद सुकण्ठ हनूमान बलवान आगे सङ्गम सदल जाभवन्त
विभीषणको । लछिराम नील नल केसरी कुमुद दायें वाम-
भाग द्विविद सुषेण हरषणको ॥ गरजे निसान कल कौशल
नगर बर बगरे विमान घनघोर करषणको । शत्रुहन सौरच्यो
इयाम घन आवरण तौलों सोहैं रथ रामचन्द्र मैथिली
लषणको ॥ ४४१ ॥

॥ सवैया ॥

भोरहीं प्रेमसों पूजनके भले आसन द्वार कुटीपै रचे हैं ।
ब्रह्मसुरूपहि भेटिवेको छन या अभिलाष दिये विरचे हैं ।
त्यो लछिराम फलो तिगुनो यौं मनोहर आनंदमें उमचे हैं ॥
मैथिली लखन श्रीरघुनाथको हेरतही सरभङ्ग नचे हैं ४४२

॥ वरद्वे ॥

भरद्वाज अनुमानत आनन्दकन्द ।

लखन मैथिली भागे श्रीरघुनन्द ॥ ४४३ ॥

॥ मृत्तीय प्रहर्षण वर्णन-दोहा ॥

मन जाकी चिन्ता करै, मिलै वस्तु सोइ आय ।

तीजो भेद प्रहर्षणहि, परगट कियो लस्राय ॥ ४४४ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

तिलक त्रिकूट श्रीविभीषण विशाल भाल, वालिषषिपम्पा
दे सुकण्ठहि असकाको । लछिराम सूरपनखा त्यों खर-
दूपणके, वदन विदारि घेरे वीरद के डङ्गाको ॥ यातुधान
वंशहि शिष्वसन सदल मारे, मेघनाद कुम्भकर्न रावनसे बड्डा-
को । कौशिला महल बेठी बूझिबे सगुन तौलों, गरजे भरत
राम आये जीति लंकाको ॥ ४४५ ॥

॥ सवेया ॥

जाके लिये बहुबासर में जपेमंत्र महातम वेदन गाये ।

जा महिमाके विचारसमें भरे रूपाल खरे बहुकाल गँवाये ॥

और कर्दाओं कहै लछिराम किती उपचार कला वगराये ॥

जाहित बैठे सुतीक्षण भोरते राम किशोरते सामुहें आये ॥ ४४६ ॥

॥ अथ विषादालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

मनवाञ्छित चितचाहमें, फलप्रभाष विपरीति ।

भूषण वरणि विपाद इमि, कोषिद कवि अपिरीति ॥ ४४७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सन्त सुर चौदहों भुवन राजवंशनपे, रतनसिंहासन प्रका-

श महाजरको । लछिराम रामचन्द्र मैथिली लखन छन कीने

वन गौन औध शोक सरासरको ॥ मंडित सुनीन मण्डलीनमें
बसिष्ठ मन है रह्यो कुलालचक्र हीरो हारि थरको । राजआभि-
षेक औपधीनपै नजर कान वज्र यों वजर बाणकैकयकै
बरको ॥ ४४८ ॥

॥ सवैया ॥

सोरहौ साजि सिंगार सनेहमें बड्क विलोकनि चञ्चलताकी ।
चाहती रामहि अड्क भरयो चढि लखन भौहैं सरोप प्रभाकी ।
त्यों लछिराम सुरूपकी राशिलों सौहैं खडीलसै वानकवाँकी ।
चाह भरी मिलिवेकी रही कटी नासिका कानलै सूर्पनखाकी ॥

॥ बरवै ॥

उतरि सिन्धु किमि ऐहैं राजकुमार ।

तवाहिं सुन्यौ दशकन्धर दल इहि पार ॥ ४५० ॥

॥ अथ उल्लासअलंकारवर्णन-दोहा ॥

औरहिके गुण दोषते, थपि अनतै गुण दोष ।

अलंकार उल्लास तहैं, चौबिधि रचि मति चोख ॥ ४५१ ॥

॥ औरके गुणते औरको गुण-यथा सवैया ॥

जाहित शम्भु सुरेश गणेश महेश महामख साधन फेटे ।

जाहित जोगी जपी तपसी, यती जाल तपैं तनुछार धुरेटे ॥

कौतुक या लछिराम लखो, पुलके तनु यों अनुराग लपेटे ।

राक्षसवंश विभीषणैतैं, भरि अंकमें भाय भरत्थसौंभेटे ॥ ४५२ ॥

॥ औरके दोषते औरको दोष-यथा सवैया ॥

मैथिलीको छलते वनमें हरयो कान सुने खर दूषणै मारे

फेरि बली हनूमान लँगूरते बाग उजारि त्रिकूटहि जारे

कौन कहै रचना लछिराम, परैं दुख औरपै औरके डारे ।
 रामके रोपन रावन दोपन राक्षसै बानर भालु सँदारे ॥ ४५३ ॥
 ॥ घरवै ॥

इन्द्रजीत वच सुनतहि लक्खन ईस ।
 समरझपटि कोधातुर काट्यो शीस ॥ ४५४ ॥

॥ औरके दोषते औरको गुण-यथा सबेया ॥

घालि बलीके सँहारतही सुखसाहिषी भार मुकण लियो है ।
 या विपरीति कहाँलें कहैं लछिराम लखे अकुलात हियो है ॥
 औरके दोपन औरही को गुण गावत वेद पुराण बियो है ।
 रावनक अपमानते राज विभीषदको रघुनाथ दियो है ॥ ४५५ ॥
 ॥ घरवै ॥

त्रिजटा सपन सुनायो रावणनाश ।

पुलके तन मन सियके बलित विलास ॥ ४५६ ॥

॥ औरके गुणते औरको दोष-यथा सबेया ॥

भैंहैं चढी बढी भालपै लालिमा ओज धिराजत सूरजअशको ।
 त्यों चतुर्गङ्गिनीमें लछिराम चमूपति चातुरी चारु प्रशसकी ॥
 यों फरके भुजदण्ड अखण्ड धरीमें करें धननाद विध्वंसको ।
 लक्ष्मणको धनुबाण दधानल दारुण दीह निशाचर धशको ४५७
 ॥ घरवै ॥

चिकट बानरी सेना रामसिंघार ।

कालनिशाचर कुलमें उतरति पार ॥ ४५८ ॥

॥ अथ अघज्ञाअलंकारवणन-दोहा ॥

गुणन औरके गुणनते, प्रथम अघज्ञा साज ।

निमि न औरको औरही, दोष लगे शिरताज ॥ ४५९ ॥

॥ प्रथम औरके गुण औरको न लगैं-यथा दोहा ॥

बरसत सुर नर नाग शिर, आनँदशीतलभार ।

रामचंद्र करतौ भुवन, सुखन असुर परिवार ॥ ४६० ॥

॥ द्वितीय औरको दोष औरको न लगैं-यथा दोहा ॥

संग सहोदर एक थल, लखत देव द्विजघात ।

बसन विभीषणके हिये, रावणको उतपात ॥ ४६१ ॥

॥ अथ अनुज्ञालंकारवर्णन-दोहा ॥

दोषहिको गुण मानिकै, चाहक तन मन होय ।

कहत अनुज्ञा भूषणहि, पंडित कवि सब कोय ॥ ४६२ ॥

॥ यथा सवैया ॥

रथपै चढि या चतुरंगिनी लै, जुरिहैं रण रंग समानत हैं ।

रघुनाथसों बोलिहों रावणहों, जे कला धनुकी सब जानत हैं ॥

कटि हैं सुत नाती सँघाती सबै, लछिराम न टेक द्वैठानतहैं ।

हरिवो वन मैथिलीको छनमें हम, आनँद यों परमानत हैं ४६३ ॥

॥ बरवै ॥

कुम्भकरण हँसि बोलयो सुनु रघुवीर ।

कटिवो भलो समरको सनमुख वीर ॥ ४६४ ॥

॥ अथ लेसालंकारवर्णन-दोहा ॥

गुणमें दोष विलोकिये, दोषहिमें गुणधीर ।

अलङ्कार लेसो द्विधा, वर्णत कवि गम्भीर ॥ ४६५ ॥

॥ दोषमें गुणवर्णन-यथा सवैया ॥

काजहै राजकुमारनको मृगया वन खेलिवो ख्याल तरङ्गमें ।

हेम-कुरंग निहारतही रघुवीर चले भले वीरता रङ्गमें ॥

धानसों वाको वधयो वनमें लछिराम इते मच्यो कौतुक सर्गमें ।
रावण आपनेही रथपे इच्यो मैथिलीको छलहीके प्रसङ्गमें ४६६

॥ बरबे ॥

निजसुतहित कैकेयी, वन दिय राम ।

अपयश त्रिभुवन फैल्यो, नगरनिकाम ॥ ४६७ ॥

॥ दोषमें गुण-यथा कवित्त । ॥

अङ्गद सुपेण जामवन्त हनुमान आगे, करत अभङ्ग वार
सङ्गर सुमनते । लछिराम लच्छिम्न दाहिने मरम खोलें, रा-
कस भयङ्करी प्रभाव परखनते ॥ रीछ विकराल कपिकुञ्जर
करालनसों, वरने करन मत्र घाती दुसमनते । रामचन्द्रसोंई
रण पण्डित विभीषण भो, सदल सकुलदक्षकन्धर दमनते ४६८

॥ पुनः ॥

भूमि-भार हरण भरण आभरण भूरि जाग्योभाग नाग नर
देव सन्त जनमें । लछिराम देव द्विजराज हिय भै-करन गरजे
निसान दक्षमौलिके वधनमें ॥ रामचन्द्र विरद वितान तान
सातों दीप सबलसँहारे यातुधान रन वनमें । कौशल कराल
कैकेयीको वरदान हार पारस पदार चारु चौदहोंभुवनमें ४६९ ॥

॥ सबेसा ॥

काननमें इच्यो मैथिलीको भय दीनो विशाल त्रिकूट वसायके
लखनराम सों युद्ध जुच्यो लछिराम लड़ाको लकीर सचायके
फैल्यो चरित्र दहों विशि यों विधिहू रहे आंगुरी दाँत दवायके ।
रावणसङ्ग चमूकुलमें पहुँच्यो सुरलोक निसान बजायके ४७०

॥ बरवै ॥

सुरपति—सुत सिय पग परछत करि चोच ।

बायस तनु धरि परस्यो यापर लोच ॥ ४७१ ॥

॥ अथ मुद्रालङ्कारवर्णन—दोहा ॥

सोच्यारथ सूचनासों, अरथ करत लै धीर ।

कछु अन्य सन्निधि सङ्गमी, मुद्रा गुण गम्भीर ॥४७२॥

॥ यथा कवित्त ॥

जाके भुजदण्डन अखण्ड अतुलित बल, खल भल स-
मर भयङ्कर पसारसे । लछिराम जाके करतलमें चपलताई,
वादिन बताई बेग सहस सहारेसे ॥ रावण प्रहस्तमें प्रमाण
रावरेसो करौं, जालिम जुँरंगे इन्द्रजीत मतवारसे । जाके मान
रेखैं संक नाखत विचारे ताके आवैं चले बाण ये बजर
विकारसे ॥ ४७३ ॥

॥ सवैया ॥

मान मल्लें असुरावलीके लछिराम यों जालिय जङ्ग जसाले ।
सङ्गम श्रीरघुवीर निषङ्गते पैज प्रताप प्रभा बरसाले ॥
बेझे करेजनके किरचैं दशकन्धर यानके प्राण बसाले ।
रोदे कमान छै भालके भेजन पान करैं किनवान बसाले ४७४

॥ पुनः ॥

साँकरेमें सुर सन्तनके वगराये प्रताप अनन्त प्रभानके ।
वारमें तेरे कँपै धरती लछिराम हरै हलकम्प जहानके ॥
मैथिली वार विलम्ब रती अब औसर वार छली मदपानके ।
भालथली बटपारकी चूरकै, गौरैं गखूर गदा हनुमानके ४७५ ॥

॥ धरचे ॥

घन गरजन दल रावन कुलिश कठोर ।

प्रलयपवनदवदरपन लखन किशोर ॥ ४७६ ॥

॥ अथ रत्नावलीअलकारवर्णन दोहा ॥

कमसों वर्णन कीजिये, प्रकृति अर्थ शुभसाज ।

भूषण भनि रत्नावली, जे प्रभाव शिरताज ॥ ४७७ ॥

॥ यथा सवेया ॥

त्यौं गुरु मङ्गल सुरज सोम सुरेश महेश गणेशे विचान्यो ।

पारस कामदुहा कलपद्रुम दानिया वारिदहूको निहान्यो ॥

सागर सातों सभाग सुमेरु त्यौं गग प्रयाग प्रकाश प्रचान्यो ।

श्रीरघुवीर कृपानिधिको गुण ले सवहीको विरञ्चि सँवान्यो ॥

॥ धरचे ॥

पारसमणि कलपद्रुम धजर गँभीर

रच्यो ब्रह्म हरवर वै हनुमत वीर ॥ ४७९ ॥

॥ अथ सद्गुणाळकारवर्णन-दोहा ॥

तजे आपनो गुण जहाँ, धारण करि गुण सग ।

अळकार सद्गुण तहाँ, वर्णत रसिक प्रसंग ॥ ४८० ॥

॥ यथाकथित ॥

कोकनद करमें कमान धान रतनारे, तरकसे कन्ध हेरि

हीन धरकतके । मंगली माधुरी हैंसनि लछिराम सोई कोर्धे

करे छोरे पट फेले फरकतके ॥ श्याम घन बरण महीप

रामचन्द्र चारु, परी परछाईं भेन रंग स्वरकतके।जौहर हरीरे

पीरेमणिके जँभीरे गरे हीरे लाल मोती होत हार मरकतके ४८१

॥ बरवै ॥

सरयु-तीर श्रीरघुवर करत विहार ।

वार पार यमुना करि जगमग धार ॥ ४८२ ॥

॥ अथ अपूर्वअलंकार द्विधावर्णन-दोहा ॥

प्रथम संग गुण ग्रहण करि, फिरि बातनि निजरंग ।

पूर्वरूप पहिलो कहत, जे प्रवीण सब रंग ॥ ४८३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

परसतही मैं बन्यो हार गज गौहरको, गंग महवर लै प्रकाश
करवसों । लछिराम तापर अमन्द आचरज परै प्रतिबिम्ब
लोचन त्रिवेणी हरवर सों ॥ छावत प्रभायों पहिरावत लखन
गरे राम रघुवीर भरे आनँद गहरसों । मंगलीक रंग सुकता
हलको एतो होत बिकसत सेतु रामगंगकी लहरसों ॥ ४८४ ॥

॥ बरवै ॥

भरत गरे लर मानिक मरकत होत ।

परसत फिरि करकञ्जन अरुण उदोत ॥ ४८५ ॥

॥ द्वितीयवर्णन-दोहा ॥

हेत रचन गुण मिटनको, मिटै न गुण रँगधीर ।

पूर्वरूप दूजो कहत, जे कवीन्द्र गम्भीर ॥ ४८६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

अङ्गराग आभरण भूषण सुभाय अङ्ग, जगमगें जोति
जोगराशिलों बसनमैं । घूँघटके घेरसों न खोलति बदन मन्द,
स्वासन समीर होत सुरभि रसनमैं ॥ शिषिनकी वामैं
लछिराम चरचित चौहैं अदरसहूलों आदरसलों जसनमैं ।
परनकुटीमैं डरि बैठति अकेली कटै झाँझरीसों कौधैं घन वन
सरसनमैं ॥ ४८७ ॥

॥ वरधे ॥

सन्तसमाजन सहजहु इनुमत धीर ।

बदनज्वालसो जालिम वनर शरीर ॥ ४८८ ॥

॥ अथ अतद्गुणअलकार वर्णन-बोहा ॥

संगतिको गुण कैसहु, ग्रहण करै न सुभाव ।

भूषण तहाँ अतद्गुणे, वरणत पण्डितराव ॥ ४८९ ॥

॥ यथा कविस ॥

शाखासे कलपलतिकाके भुजदण्ड भारी, करके रहत भरे
आनंद महान है । लछिराम आंगुरी नखनते त्रिलोकवीच,
वरसत वरवस नौ रतन दान है ॥ उमचे सुमन या चरित्र
अदभुत हेरि, रङ्ग सतसग गाये वेदन प्रमान है । करुणा
कलित करकमलप्रसग तक पन्नगी स्वभावको न छोड़ति
कृपानेहै ॥ ४९० ॥

॥ वरधे ॥

लक राक्षसिन बीचै सियको वास ।

ब्रह्मरूपिणी मतिको तदपि प्रकास ॥ ४९१ ॥

॥ अथ अनुगुणअलकार वर्णन-बोहा ॥

पूरव गुण सतसङ्गते, चोखो गहवर हेरि ।

अलङ्कार अनुगुण कहैं, सुकविसिरोमणि टेरि ॥ ४९२ ॥

॥ यथा सबेमा ॥

लक्ष्मन लालके दायनकी परमा उभरोखी उदे लहरे है ।

त्यो लछिराम छटापट पीतकी अङ्गन चम्पई चारु करे है ॥

शासक मन्द में हीरक-हारकी सेत भीरी अनोखी अरे है ।

दायनमें गजरारे लिये मणि माणिक लालिमा चोखी परेहै ४९३

॥ बरवै ॥

मरकतमणिकी माला पहिरत राम ।

और श्यामता झलकति तन घनश्याम ॥ ४९४ ॥

॥ अथ मिलितअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहँ सादृश्य विलोकतहि, लखि न परै कछु भेद ।

अलङ्कार वर्णन करै, मिलित सुबुधि, बिनखेद ॥ ४९५ ॥

यथा सर्वैया ॥

गोल कपोलनपै जुलफै लसै, कुण्डल कानन बैस बहाली ।

पाग सुही सरपेंच मणीनके, चारु चुनीनकी त्यो परमाली ॥

आनन यो लछिराम प्रकाशमें, बैसबिलास छटां रुखवाली ।

जानिपरै न सुनीशनहूको, भरत्थके ओठन पानकी लाली ॥

॥ बरवै ॥

करत शत्रुहन दानहि सुवर्णहार ।

मिलत चम्पई रंगमें बुधन विचार ॥ ४९७ ॥

॥ अथ सामान्य अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहँ पदार्थ सादृश्यमें, अनुमानत नहिं भेद ।

अलङ्कार सामान्य तहँ, परमानत बिन खेद ॥ ४९८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पम्पासरवर भोर पूजनसमैके हेत हरवर आये भरे शील
त्यो चखनके । लछिराम रामचन्द्र चारु अनुशासनतैं चहके
चहूँवां चञ्चरीक हरखनके । अरुण अमन्द कल कोमल
प्रकाशमान सौरभित सुन्दर प्रकाश परखनके । तोरत सजल
पहिंचाने न परत कौन कमल सुरङ्ग कौन कर हैं ल-
खनके ॥ ४९९ ॥

॥ बरवै ॥

गङ्गाधार मुकताहल धरसत राम ।

परखिजात नहिं केहुं जग अभिराम ॥ ५०० ॥

॥ अथ उन्मीलितअलंकारवर्णन-बोहा ॥

मिलित विषैमें जहैं फुरै, भेद कछूक प्रमान ।

उन्मीलित भूषण तहाँ, वरणत कलानिधान ॥ ५०१ ॥

॥ यथा क्वचित् ॥

पावन परम गङ्गाधारा सो सुरूप राजै परम प्रकाशमान
श्वेत स्वच्छपटतैं । मोगरा चमेली कुन्द मालतीके माल
गरे मङ्गलीक दूने अश रक्त दपटतैं ॥ कौतुकमें कल्पे
कुमारी मुनिवृन्दनकी हारीं हेरि हेरि लता ओटन कपटतैं ।
कढ़े मैथिलीके चाननीमें पहिंचानैं द्वार परनकुटीके परिम-
लकी लपटतैं ॥ ५०२ ॥

॥ बरवै ॥

साधन धन वन सोहैं गरज समीर ।

वृन्तनसों पहिंचानत गज रघुवीर ॥ ५०३ ॥

॥ अथ विशेषकअलंकारवर्णन-बोहा ॥

वैशेषक सामान्यसों, जहैं विशेष पहिंचान ।

तहैं विशेष धनन करत, जेप्रवीण मतिमान ॥ ५०४ ॥

॥ यथा सवेया ॥

झूमैं जैजीरनमें जकरे करैं सामुहैं दिग्गजहूको दिवाने ।

पूरे प्रवाहबहे मदके लछिराम धरानदलों सरसाने ॥

यारे महाचिकरारे विराट विधारे न देवनहू धनुमाने ।

।मके सावनी राने पय गरजे ते मतङ्ग परैं पहिंचाने ॥ ५०५ ॥

॥ बरवै ॥

रामसङ्ग जब विहरत आनँद चार ।

छत्र हाथ पहिंचानत भरत कुमार ॥ ५०६ ॥

॥ अथ गूढोत्तरअलंकारवर्णन-दोहा ॥

साभिप्राय सुभाव जहँ, उत्तर दै परवीन ॥

गूढोत्तरवर्णन करै, जे कवित्त रसलीन ॥ ५०७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बोल्यो बालिनन्दनसों विहँसि गँभीर बैन, रावण महीप
भन्यो गरब अवासेमें । कैसे विरहानलज्वलित जुग तापसी
वै अङ्गद उतर दीने सुमति प्रकाशमें ॥ लछिराम आयो दूत
सङ्गी जिन अङ्गनतें परचे अँगारे विकराल रोष रासेमें । ताके
तनतापनतैं शिखर त्रिकूट सब, रावरो नगर बन्यो बगर
तमासे में ॥ ५०८ ॥

॥ पुनः ॥

अङ्गदै विलोकि बोल्यो रावण विहँसि कैसे बीर तापसीवै
कत बीरता प्रमानकी । जङ्ग मृगयाके बेझे बानर सुभट सङ्ग
लछिराम चतुरङ्गिनी त्यों यातुधानकी ॥ उत्तर गँभीर बालि
तरपन सागरमें आगर अमन्द ओज सीमा सुखदानकी ।
प्रलयभानु बजर गुमान जैतवार जाने रेखैं परबेखैं वन लख-
नके बानकी ॥ ५०९ ॥

॥ बरवै ॥

जङ्ग रङ्ग कत करिहैं विरही राम ।

सङ्गर तिमि दशकन्धर जिमि हरि वाम ॥ ५१० ॥

अथ चित्रोत्तरमलंकारवर्णन-बोधा ॥

प्रश्नहि में उत्तर जहां, प्रथम भेद मतिसङ्ग ।

एक प्रश्न षडु उत्तरको, चित्रोत्तर विधि रङ्ग ॥ ५११ ॥

॥ यथा सवेया ॥

वालिके नन्दनसों दशकन्ध लग्यो कछु बूझन भाव गँभीर है ।

सागर कैसे तरें तपसी लिये सङ्गमें बानर भालुकी भीर है ॥

होरिके तीखे त्रिकूटको ओज किती लछिराम रचै तदवीर है ।

जो न जुरैगो निशाचरी सेनसों जालिम जूथपको महावीर है ॥

॥ बरवै ॥

मेघनाद रनमण्डन वासवधीर ।

तासु गरव-हरको जग बजरशरीर ॥ ५१२ ॥

॥ द्वितीयवर्णन ॥ यथा सवेया ॥

तोन्यो शरासन शङ्करको किन, कौन लियो घनु त्यों भृगुनाथसों

कौन षड्यो मृगराजसों बालिको, कौनसुकण्ठहि कीनोसनाथसों

राजसिरीको विभीषन भाल वै को लछिराम जित्यो दशमाथसों

उत्तर एकई बार दियो रचना सिगरी रघुनाथके हाथसो ५१३

॥ बरवै ॥

को मस्त्र-रक्षक कीनो मुनि तियरूप ।

माल मैथिली केदिगर राम अनूप ॥ ५१५ ॥

॥ अथ सूक्ष्मालंकारवर्णन-बोधा ॥

पर आशय आतुर जहां, मन अपने अनुमानि ।

शुभसव्यंग चेष्टा करन, सूक्ष्म भूषण ठानि ॥ ५१६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शिखर त्रिकूट कोटिकलश निहारतमें, हार दीने अंगद
सरोवर सजलके । लछिराम सहस्र वदन अवतारीके निसाने
रसबीरके नसामै मंत्र कलके ॥ फरकाले बाँहबल वदन
विशाल भाल भौंहे चढी लालीमें प्रताप झलाझलके । हनु-
मानसोहैं तिरछैहैं लछिमनबीर, वानन बरेजे कई रेजेके
कमलके ॥ ५१७ ॥

॥ पुनः ॥

दाहे लङ्क रावण गरब चकचूर करि, अक्षयकुमारहि
पछारे पैज प्रनके । लछिराम कुशल प्रबोधि मैथिली त्यों तोरि
बाग सोधे राकस अभंग रण रंगके ॥ धनुष बलित श्री विभी-
षण करन दीने चारुचित्रपट हनुमान श्याम घनके । पल्लव
जवासे बगराय दै कछूक तिन जुगल प्रवीण त्यों सम्हारे मौज
मनके ॥ ५१८ ॥

॥ सवैया ॥

लखन पाती लिख्यो गुनिकै कह्यो दूतहि रावनको यह दीजो ।
माँझ सभामें जो हारि मिल्यो लखतै भुज बसिऊं भाल पसीजो ।
धावन हाथही फेन्यो सफन्दमें याविधिसों लछिराम सुनीजो ।
राखियो बन्द खुलै न कहूं खुले नाम कथा न प्रमाण गनीजो ॥

॥ बरवै ॥

मायावी शूर्पनखै लखि रघुनाथ ।

लखनहि चितये नासाश्रुति धरि हाथ ॥ ५२० ॥

॥ अथ पिहितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

दुरी क्रिया परकी समुझि, प्रगटै जतन स्वभाव ।

भूषण पिहित प्रमान किय, परमिति पण्डितरावा ॥ ५२१ ॥

॥ यथा कबिस ॥

मण्डित मनीन मण्डलित कलझावलीपे, नोरंग निसानेकी
वनक परखनको । सङ्कलितभाल भृकुटीनकी मरोरि मञ्जु,
घनघोर बगर वनेती हरखनको ॥ रामचन्द्र पीछे त्यो तिरिछि
नेन कोरनकी, पूतरी पटैती भाव भास्यो ना सखनको । झिखर
सुबेलते अखारो लङ्क रावनको, सानमें विभीषण लखावत
लखनको ॥ ५२२ ॥

॥ पुनः ॥

सेनप सुपेण राव सुघर सुकण्ठ सोहैं जामवन्त जालिम
जितैया खलकनके । इनुमान अङ्गद विभीषण विराटवीर,
केसरी कुमुद नल नील बलकनके ॥ लछिराम शत्रुहन भरत
समर हारे, दल रघुवशी बङ्गराते पलकनके । लखने लखा-
वत चखन रामचन्द्र येई लव कुश वारे गभवारे
अलकनके ॥ ५२३ ॥

॥ अरवे ॥

हेरत सुघर सुकण्ठहि रघुकुलचन्द ।

हृग मरोरि लवकुशपर आनैवकन्द ॥ ५२४ ॥

॥ अथ व्याजोक्तिअलकारवर्णन-बोहा ॥

निज आकारदिको दुरे, कहे ओर परमानि ।

अलकार न्याजोक्तिको, याविधि कविन बखानि ॥ ५२५ ॥

॥ यथा सवेया ॥

ब्राह्मण हों सदा पूजत शकरे वादे भयकर को नमें जानो ।

वेदविधानन होम हुताग्ने ब्रह्मके शासनहीं शुभठानो ॥

क्षत्रिनके धनसों लछिराम सुमैथिली भूख तरङ्गहि भानो ।
बन्धन भीख न दीजै हमें व्रत है कई वासरको परमानो ॥ ५२६ ॥

॥ बरवै ॥

मशकरूप धरि हनुमत सुरसहि हेरि ।

विनयव्याजवर वातन ऐहौं फेरि ॥ ५२७ ॥

॥ अथ गूढोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

व्याजहिं पर उपदेश करि, परम चातुरी सङ्ग ।

अलंकार गूढोक्ति तहँ, वरुणत कवि नवरङ्ग ॥ ५२८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

खिले फूल हौ भोर घने वन बाग यौं स्वामिनीको परखावनेहै ।

लखि याविधि गौरिके पूजनको लछिराम हियो हरषावनेहै ॥

पहिलेही मराल मयूर चकोर मलिन्दनको मडुरावनेहै ।

हंसि बोलि अली भली मैथिलीकी फिरि कालिह इतै संग

आवनेहै ॥ ५२९ ॥

॥ बरवै ॥

बिहंसि कह्यो रघुनन्दन पावन बाग ।

एहै फेरि सुमनहित गुरु अनुराग ॥ ५३० ॥

॥ अथ विब्रोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

व्यंगसहित अश्लेष जहँ, रचना कवि शुभरंग ।

अलङ्कार विब्रोक्ति तहँ, वरुणत प्रेसतरङ्ग ॥ ५३१ ॥

॥ यथा सवैया ॥

लसैं लाली भरे अरविन्द खिले भ्रमरावली सङ्गम साजतिहैं ।

लता चम्पई खञ्जन कीर कपोत सुकोकिल मन्द अवाजतिहैं ॥

लछिराम या अंश विदेह रची परसीली समस्ते लाजतिहैं ।

प्रभा पावन सौरम सङ्ग सनी बनी बागमें बागविराजतिहैं ५३२

॥ कथित ॥

मधवान मन्दर पछायो मेघनाद मौलि ख्याली कुम्भ-
करण धिराट रनवनमें । अपर कुमार कालदण्डक कतलबाज,
चारु चतुराग्नी प्रभात प्रलेषनमें ॥ तापर त्रिकूट भन्पो
सागर तरे को पार, लछिराम योग अश राम लछिमनमें ।
रावरेसों रावण सँवायो राजहंस बाज, वजर शरीर महावीर
त्रिभुवनमें ॥ ५३३ ॥

॥ अथ युक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

मरम छिपावै करि किया, सग सुमति व्यापार ।

अलङ्कार तहँ युक्तिवर, वरनत रस अवतार ॥ ५३४ ॥

॥ यथा सधेया ॥

रामकुमारको हेयो सुरूप सभागमें तोरत फूल कली है ।
त्यो लछिराम सरोजसे लोचन कोरन वारि प्रभा मचली है ॥
चातुरीसों लतिकानकी ओट सँवायो सनी अलिकी अवली है ।
वामते यों अनुराग भरी सिय सुन्दरी घूघट घालिचली है ५३५

॥ वरवे ॥

सहमि सकोचनि हेरत सियमुख राम ।

आगे लखन तिरीछे वाग अराम ॥ ५३६ ॥

॥ अथ लोकोक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

कहनावति जहँ लोकमय, लोक वचनपरमानि ।

अलङ्कार लोकोक्ति तहँ, वरनत कवि मुखदानि ॥ ५३७ ॥

॥ यथा सधेया ॥

जा रघुनायकी हेरि प्रभा शची शारदा पारवती अभिलोपे ।

जापर शेष गणेश महेश निहारत वारत सिद्धिन लखें ॥

तापतिकी पतिनी लछिराम सुता मिथिलेशकी ताजगसाखें ।
रावण छोरि अनार अँगूर कहा फूल फूल धतूरको चाखें ५३८

॥ पुनः ॥

जा महिमाको न गायसके चतुरानन शारद सौक सहूर पै ।
कोटिनको दिये राजसिरी अरु कोटिनको दिये धामन धूरपै ॥
तीनिहूँ लोकनके शिरताज विराजै प्रभा लछिराम त्यों घूरपै ।
रावण राजसिंहासनै छोड़ि करै कोऊ बैठक बेल बबूरपै ५३९

॥ बरवै ॥

छोड़ि मानसर मञ्जुल लघु-सर जात ।

राजहंस तजि मोती काँकर खात ॥ ५४० ॥

॥ अथ छेकोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

होत जबहिं लोकोक्तिमें, अर्थान्तरकी खानि ।

अलङ्कार छेकोक्ति तहँ, कविपण्डित परमानि ॥ ५४१ ॥

यथा सवैया ॥

अङ्गद तैं बड़े बापको पूत है तापस पीछे क्यों जन्म गँवावै ।

रावन जाने प्रभावन तैं कछू वासरमें लछिराम लखावै ॥

मैं विरतान्त कहा अपनो कहाँ या उपखान तिहूँ पुर गावै ॥

वैद वही जो हरै सब रोगन पालै प्रजा सोई राव कहावै ५४२

॥ पुनः ॥

तापसै भेत्यो विभीषन जाय क्यों रावन या अनुमान अरै है ।

बोल्यो प्रहस्त प्रभावनतैं रघुनाथको जानत जानिपरै है ॥

या जगमें उपखान प्रसिद्धि सही लछिरामकथा बगरै है ।

चोरको चोर सुजानै सुजान जतीको जती पहिचानि परै है ॥

॥ वरवे ॥

इन्द्रजीत रनकर्कश लखन सवान ।

भटको भट पहिचानत यह उपखान ॥ ५४४ ॥

॥ अथ वक्रोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

अर्थ फेरकी कल्पना, श्लेष काकूर्ते ठानि ।

अलङ्कार वक्रोक्ति तहै, वरनत कवि गुणस्त्वानि ॥ ५४५ ॥

॥ यथा सवेया ॥

झूमत सागर पार खड़े मदमाते मलिद फिरें मड़राये ।

त्यो लछिराम भशुण्डन शुण्डको ऊचो करें भैं आनंद भाये

पूरे प्रले-घनसे गरजे लछिराम अतङ्क समा सरसाये ।

रावन कीजिये वारनको बली धारन श्रीरघुवीरके आये ५४६

॥ अथ काव्यफरि-यथा सवेया ॥

षान्यो त्रिकूटको वासरमें इनुमान बली रघुवीर कलासे ।

दोरे निशाचर मारिवेको न परे कहूँ फन्द फलाक हवासे ॥

छारके बोल्यो कुमार समीरको यो लछिराम छके हँ हलासे ।

आयेंहँ फेरि कछू दिनमें करिहँ फिरि णेसे लँगूर तमासे ५४७

॥ स्वभावोक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जातिस्वभाव स्वरूप गुण, दत्ताकार परमानि ।

स्वभावोक्ति भूपन भलो, वराने प्रत्यक्ष प्रमानि ॥ ५४८ ॥

॥ यथा सवेया ॥

कौशिला जन्म समे रघुनाथके मङ्गल राशि महाफल पावे ।

भाल पिशाल कछू पुलके घस गानन आभान भोन अमोवा ॥

नासिका मोरानि त्यो लछिराम कछू अथागवलीको फरकाये ।

माधुरे रोदनके भगि छोदन यथच्छेत्तगी छाहँ छपाये ॥ ५४९ ॥

॥ पुनः ॥

ब्रह्मकी राशि प्रभा उपटी परै गोल कपोल कछू फरकोये ।
साँवरो गात सोहात सबै मनि जोति की कौंधै जगामग जोये ॥
मोरनि भौहैं मरोरनि भालकी आनँदबीज सबै डर बोये ।
कौशिल भूपर श्रीरघुनंदन कौशिला सूपकासेजपै सोये ॥५६०॥

॥ पुनः ॥

गारै किती रतनावली थार किती मधुरे स्वर मङ्गल गावैं ।
कौशिला आननचन्द निहारि चकोरनीलों उर आनँद छावैं ।
साँवरे अङ्गनपै सिगरी लछिराम लरैं मुकता बरसावैं ।
मङ्गल गाय झुलाय सबै हरे रामलला मुख चूमनधावैं ॥५६१॥

॥ पुनः ॥

भाल थली गभवारी लटैं कहुलागर सिंहनखी शुभ साजैं ।
पीरे झँगा कर कङ्कन हीरक राते खिलौननकी छवि छाजैं ॥
त्यो मचलैं मणि आँगन में लछिराम सुने बरहीन अवाजैं ।
कौशिला हाथनसों बिछलैं भली रामलला पग पैजनीबाजैं ॥५६२॥

॥ कवित्त ॥

बार गभवारे कन्ध कलित कपोलनपै, कटुला बलित ब-
घनहा कण्ठ भायेहैं । पीरी पीरी काछनी सुरङ्ग उकसीली पाग
इत उत हेरनि चपलगति ठाये हैं ॥ जैतवार खेलि रघुवंशिन
सों रणरङ्ग लछिराम छोरैं पट भुव फरकाये हैं । राते पीरे तरकस
धनुष हेरीरेवान रथ रघुनाथ सौहैं लव कुश आये हैं ॥५६३॥

॥ पुनः ॥

ऊपर परे हैं भालु बानर असुर कटे फरकत भूपर मतङ्ग
मतवारे हैं । मडरात बाजी विनबीरके बगर बाज ठौर ठौर ब-

द्विषले रुधिर पनारेहैं ॥ लछिराम अजवतमासे पलहीमें मचे
हेरिवेको फेरि मन स्वरकें हमारेहैं । वनफल चाखि मैथिलीसों
लव कुश भापें अम्ब चलि देखै तँखिलौने खेलि मारेहैं ॥ ५५४ ॥

॥ वरवे ॥

तरकस राते पीरे लघु धनुवान ।

खेलत मृगया लव कुश शिशुप नसान ॥ ५५५ ॥

अथ भाषिक अलङ्कारवर्णन-बोहा ॥

वरनत भूत भविष्य जहैं, अरु प्रत्यक्ष प्रमान ।

अलङ्कार भाषिक तहाँ, ग्रथनमत अनुमान ॥ ५५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

विहरत जैसे रहे शिखर लतान बीच वैसई चरन चिह्न बे-
सविलसत हैं । लछिराम ठौर ठौर गङ्गके तरङ्गन में मञ्जन
किये त्यों हेरि द्विय हुलसत हैं ॥ सौरभित भूपर सुमन परना-
सन के परम प्रकाश परिमल में बसत हैं । मैथिली लखन राम-
चन्द्रको घरमराज आजलों चरित्र चित्रकूटमें लसत हैं ॥ ५५७ ॥

॥ वरवे ॥

अवधराजसिंहासन जिमि सिय राम ।

कनकभवन में विहरत तिमि अभिराम ॥ ५५८ ॥

॥ अथ उदात्तअलङ्कारवर्णन-बोहा ॥

अनुपलक्षित चरित जस, अधिकारी के संग ।

वरनत शुभग उदात्त कवि, अलङ्कार नव रग ॥ ५५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कनक भवन रगरावटी-शिखर फैसे भानुरथ संगमी वि
भान सुरवालाको । लछिराम हीरक मुकुत कलसावली पे,

झूमि झूमि झेलत चकोर चन्द्रसाला को ॥ रतन सिंहासन
महीप रामचन्द्रसोहैं जब जब सौर घोर घन घतवाला को ।
मैले मुद मोटैं कोट कौशल कँगूरन ते तब तब चूमत मुरैले
विज्जुमाला को ॥ ५६० ॥

॥ पुनः ॥

बगर बगर नौरतन झरनासे झरैं पङ्कित प्रवाह महा मद
की नहर सों । लछिराम गाढे गढपतिनके गढदेस गरद मि-
लावैं गाजिगरब गहर सों ॥ राम रघुवीर गजरथके सतंग
पावैं पदवी गजेन्द्र अमरेशके सहरसों । उन्नतभशुण्डै
शुण्डादण्ड भरि भरि बारि छोडत फुहारे व्योम गंगकी
लहर सों ॥ ५६१ ॥

॥ पुनः ॥

मारतण्ड मण्डलसो परमप्रताप जाको मण्डन भुवन
भुजदण्डबल साजै हैं । लछिराम नारद महेश अलकेश द्वार
शारदेश सहसवन लखिलाजै हैं ॥ डगर डगर फिरैं सुमन
सरस फूले नगर बगरमें वधावरे सुवाजै हैं । कोटि पाकशासन
सों परम प्रकाशमान राव रामचन्द्र ते सिंहासन विशजै हैं ॥ ५६२

॥ पुनः ॥

कोकिल चकोर मोर गुञ्जरत भौर माते राजहंस चाखैं
मुकताहलहिलक सों । फूलफलदलसों विटपलतिकावैलसैं-
सौरतितमन्दमन्द मारुतझिलकसों ॥ लछिराम जायें रचैं रास
धेधिलीके साथ राव रामचन्द्रजीकी चारुता चिलक सों ।
तीर सरयूके औध भूपर प्रमोदवन क्योनहो सिंगार त्रिभुव-
नकी तिलकसों ॥ ५६३ ॥

द्विचले रुधिर पनारेहैं ॥ लछिराम अजवतमासे पलहीमें मचे
 हेरिवेको फेरि मन खरकें हमारेहैं । वनफल चाखि मैथिलीसों
 लव कुश भापें अम्ब चलि देखे तौखिलौने खेलि मारेहैं ॥५५४॥

॥ घरवे ॥

तरकस राते पीरे लघु धनुवान ।

खेलत मृगया लव कुश शिशुप नसान ॥ ५५५ ॥

अथ भाविक अलङ्कारवर्णन-बोधा ॥

वरनत भूत भविष्य जहैं, अरु प्रत्यक्ष प्रमान ।

अलङ्कार भाविक तहाँ, अथनमत अनुमान ॥ ५५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बिहरत जैसे रहे शिखर लतान बीच वैसई धरन चिह्न वे-
 सखिलसत हैं । लछिराम ठौर ठौर गङ्गके तरङ्गन में मञ्जन
 किये त्यों हेरि द्विय हुलसत हैं ॥ सौरभित भूपर सुमन परना-
 सन के परम प्रकाश परिमल में बसत हैं । मैथिली लखन राम-
 चन्द्रको धरमराज आजलों चरित्र चित्रकूटमें लसत हैं ५५७ ॥

॥ घरवे ॥

अवधराजसिंहासन जिमि सिय राम ।

कनकभवन में बिहरत तिमि अभिराम ॥ ५५८ ॥

॥ अथ उदात्तअलङ्कारवर्णन-बोधा ॥

अनुपलक्षित चरित जस, अधिकारी के संग ।

वरनत शुभग उदात्त कवि, अलङ्कार नव रग ॥ ५५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कनक भवन रंगरावटी-शिखर फैंसैं भानुरथ संगमी बि
 भान सुरवालाको । लछिराम हीरक मुकुट कलसावली पे,

॥ यथा कवित्त ॥

परमपुरुष परमानन्द परमहंस ताडुका सुबाहु सुकताहलै
विद्यायो है । खुवंशभूषण प्रकाशमान त्रिभुवन बेर सेवरीके
सावि विरद बगाच्यो है ॥ लछिराम बन्धनछोरैया साँगेरमें
वन बाँधि बन्ध सागरमें कटक उताच्यो है । अन्धकार भारवंश
परमसुख तारिवेको नाम रामचन्द्र विधि रावरो सँवाच्यो है ५७०

॥ पुनः ॥

वानर विराट वंश सुवर सुकण्ठ हित वालिके बधनको प्र-
भाव परमानै है। कीने सुरसाके मान खण्डन अखण्ड भुज परम
प्रचण्ड वीर व्योम अनुमानै है ॥ लछिराम सूधो साधु रामको
परमदूत वाटिका उजारे दशकन्ध पहिचानै है। छार कीने लङ्क
हि लँगूरते पछारे अछे केसरीकिशोर नाम याते जग
जाने है ॥ ५७१ ॥

॥ बरवै ॥

नाम लखन बर याते जगत जहान ।

लखत न दूजो रन भट आप समान ॥ ५७२ ॥

॥ अथ प्रतिषेधालंकारवर्णन-दोहा ॥

अर्थ फेर साधन करै, दरशित मुख्य अभाव ।

अलङ्कार प्रतिषेध को, यों वर्णत बुधराव ॥ ५७३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शङ्कर कमानहीं न ताडुका सुबाहुबल कनक कुरङ्ग यान
बगर विचारेको । वालिको न संहरन वेधन है ताल माल
छि । बगरको सेतन सहारेको ॥ खोलिये मरमन भरम
हमा । न खरदूपन खिलौना करि डारेको । वान बरपन

॥ वरवे ॥

अवधनगरकी सुखमा भुष अवतश ।

ढगर बगर जहँ विहरत दशरथवश ॥ ५६४ ॥

॥ अथ अत्युक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहाँ दान वश वीरता, अकथित अद्भुत भाव ।

अलङ्कार अत्युक्ति को, या विधि प्रगट प्रभाव ॥ ५६५ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

साज्यो दल सबल महीप रामचन्द्र धूम घौंसाकी धमक
त्यो मतङ्ग बकिलत हैं । लछिराम लाली चढ़ी धनुषर वीर-
नके फहरे निसान मारू वान अगिलत हैं ॥ दिग्गज कमठ
कोल वृषभ दवारे अङ्ग भारके भरमवारे पारे से हिलत हैं ।
हारे लफवारे शीशवदन हजारे फोले शेषफन फेनके पनारे
उगिलत हैं ॥ ५६६ ॥

॥ पुन ॥

राव रामचन्द्र चतुरङ्गिनी तिहारी जब करत पयान मूँदि
भानुको उदोत है । गरजे मतङ्ग दीह दुन्दभी धुकार सुनि फू-
ल्यो न समात रघुवशिनको गोत है ॥ लछिराम रजत मुरङ्गखुर
धारनके पङ्कनवलित सातो सागरको सोत है । फूटत पदार
टूटें वनविकरारे तव अन्धकार भारमई त्रिभुवन होत है ५६७

॥ वरवे ॥

गज रथ मणि मुक्तादल रघुवर दान ।

राव अमर लखि रङ्गन करत न सान ॥ ५६८ ॥

॥ अथ निरुक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

नाम योगते औरई, अर्थ कल्पना भाव ।

तहँ निरुक्ति भूषण कहत, जे प्रवीन धुधराव ॥ ५६९ ॥

॥ भरवै ॥

लखन वान जब चलिहैं सोर बगारि ।

कल न परैगी कलपित ज्वाल निहारि ॥ ५७९ ॥

॥ अथ हेतु अलंकार वर्णन-दोहा ॥

हेतु होत क्रम सहित जहँ, कारन कारज साथ ।

प्रथमरूप बरनन करत, या विधि जे गुणनाथ ॥ ५८० ॥

॥ यथा सवैया ॥

श्रीभवतार शिरोमणि यों विरुदावली वेद पुरान सुनी मैं ।

सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथारही फैलि गुनी मैं ॥

कौल जवाहिरी सन्तनको कब लालकी चौकीकी मोलचुनी मैं ।

राम जो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीबनेवाज दुनीमें ५८१

॥ कवित्त ॥

जामवन्त जालिम सुकण्ठ शिरमौर आगे क्रुद्धवान केसरी

सुखेन मुखलालीमें । कुमुद कटाक्ष नल नील अंग अंगद के

फहरे निसान आसमानलों प्रभालीमें ॥ घोरत विभीषन

हलाहल बताय भेदै लछिराम ख्यालभरे चाल मतवालीमें ।

रावन मतंग मान रावरेपै आवैं चढ़े केसरीकिशोर रामलखन

बहालीमें ॥ ५८२ ॥

॥ पुनः ॥

दानी दीनबन्धु बरदानी शम्भु शारदेश पारस पहार हार

जगर मगरको । ब्रह्मराशि मैथिलीश विज्जु घनश्यामसंग लछि-

राम चान्यों फल झर त्यों रगर को ॥ अधम उधारिवेकी आनि

बानि बाहँबल बोहित विशाल भवसागर बगरको । विरद गँभीर

भानुवंश राम रघुवीर सांकरे सहायक है कौशलनगरको ५८३

राम नागर सँभारो आज रने विकरार कुम्भकरन करा-
रेको ॥ ५७४ ॥

॥ पुन ॥

गोलको बजायषो न लायषो परारो धन देवन सतायषो
न मारत घमण्डहो । गीषको न समर मुनिनकी न मण्डली
हो सुन्दरीसो खेलिषो न बजर अखण्डहो ॥ लछिराम बीसो
मुजदण्ड विष दण्डनको तोरिबेके हेत यो उदण्ड काल-
दण्डहो । रावन प्रचण्ड रामचद्रको न दूत आज असुर
कुमुदपे प्रलेको मारतण्डहो ॥ ५७५ ॥

॥ बरवेः ॥

लखन हमें नहिँ मानो रावन राज ।

असुर वश गम ऊपर नव मृगराज ॥ ५७६ ॥

॥ अथ विधिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

सिद्धि अर्थको साजिये, अर्थ फेरि सुखसाज ।

अलङ्कार विधि बरनि कहि, या प्रकार शिरताज ॥ ५७७ ॥

॥ यथा कश्चित् ॥

वानर न जाने तें हमारे भुज वीसऊपे परमप्रचण्डबल अङ्ग
वाज फरके । रावन सुभट राम लखने सराहो किमि ब्रह्म-
जोति राजित सहायक अमरके ॥ कवि लछिराम धूम धाम
की धमकहो में कादर ले कादर भगेया हरवरके । मण्डित
अखण्डित विरदवेरिषुन्दै हेरि विहँसत सोहैं सङ्ग पण्डित
समरके ॥ ५७८ ॥

॥ बरवै ॥

लखन वान जब चलिहैं सोर बगारि ।

कल न परैगी कलपित ज्वाल निहारि ॥ ६७९ ॥

॥ अथ हेतु अलंकार वर्णन-दोहा ॥

हेतु होत क्रम सहित जहँ, कारन कारज साथ ।

प्रथमरूप बरनन करत, या विधि जे गुणनाथ ॥ ६८० ॥

॥ यथा सवैया ॥

श्रीभवतार शिरोमणि यों विरुदावली वेद पुरान सुनी मैं ।
सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथारही फैलि गुनी मैं ॥
कौल जवाहिरी सन्तनको कब लालकी चौकीकी मोलचुनी मैं ।
राम जो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीबनेवाज दुनीमें ६८१

॥ कवित्त ॥

जामवन्त जालिम सुकण्ठ शिरमौर आगे क्रुद्धवान केसरी
सुखेन मुखलाठीमें । कुसुद कटाक्ष नल नील अंग अंगद के
फहरे निसान आसमानलों प्रभालीमें ॥ घोरत विभीषन
हलाहल बताय भेदै लछिराम ख्यालभरे चाल मतवालीमें ।
रावन मतंग मान रावरेपै आवैं चढ़े केसरीकिशोर रामलखन
बहालीमें ॥ ६८२ ॥

॥ पुन ॥

दानी दीनबन्धु बरदानी शम्भु शारदेश पारस पहार हार
जगर मगरको । ब्रह्मराशि मैथिलीश विज्जु घनश्यामसंग लछि-
राम चान्यों फल झर त्यों रगर को ॥ अधम उधारिवेकी आनि
बानि बाहँबल वोहित विशाल भवसागर बगरको । विरद गँभीर
भानुवंश राम रघुवीर सांकरे सहायक है कौशलनगरको ६८३

॥ वरवे ॥

भेषनाद अवलोको लछिमन बाज ।

झपटे तुमहिं लवा करि सगर साज ॥ ५८४ ॥

॥ द्वितीयोद्देशवर्णन-दोहा ॥

वस्तु एकही अङ्ग जई, हेतु सकारज सङ्ग ।

हेतु अलङ्कृत दूसरो, भेद बरनि शुभरङ्ग ॥ ५८५ ॥

॥ यथा कविस ॥

भानवशभूषण कलशराजहंसन के परम प्रकाशमान राम
जलधरके । वरसत वारहों महीने दानधारा बेस हीरालाल
मोती गज रथ गिरिवरके ॥ लछिराम हेरत न लागे देर काहू
समै गरलपटाय दीन मण्डल निधरके । पारस पुरन्दर धुर-
न्धर धरमवन्त चाच्यो फल फलत कलपतरवरके ॥ ५८६ ॥

॥ पुन ॥

कौशल कलस चारु चौदहों भुवनपति आरत कलपतरु
पेसो कत पाऊ में । मैथिली लखन हनुमान अङ्गवादि सोहैं
लछिराम दूजो क्यो सभासद गनाऊ में ॥ असहन पीरके
गँभीर ग्रह दोषनमें वारन उचारन विरद गोहराऊ में । दानी
दीनबन्धु रावरेसों कौन रामचन्द्र जाके दरवार दौरि दरद
सुनाऊ में ॥ ५८७ ॥

॥ पुनः ॥

जन्म भूमि रतन सिंहासन कनक भौन मन्दिर महन्त महीपा
उन घनीकेह । सीता राम लखन भरत शत्रुहन जस लछि-
राम रामायन वानर अनीके हैं ॥ राम गङ्गतीर परमानंद
प्रमोदयन जामें तरु येलि अमरावती घनीके ह । दरशन

सन्त श्रीअवध अनुरागिनते अब हम जानी कै हमारे भाग
नीके हैं ॥ ५८८ ॥

॥ पुनः ॥

नाग नर देव देवराज आभरन ऐसो पारस पहार दरबार
कत जाँचों में । लछिराम लखन भरत शत्रुहन सोहैं बिरद-
बितान मैथिलीके रङ्गराचों में ॥ दानी दिनबन्धु बरदानि या
गिरीश गौरि चौदहों भुवनपै लकीर यह खाँचों में । शिरताज
राज महाराज रामचन्द्रवीर कौशलकलस है कलपतरु
साँचों में ॥ ५८९ ॥

॥ बरवै ॥

लखत नैन रघुनाथहि होत सनाथ ।

रङ्क राव बनि बिहरत शुभगुनगाथ ॥ ५९० ॥

॥ अथ शब्दालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

शुभस्वर चित्र विचित्रकी, रचनाबरनन वेश ।

इमि शब्दालङ्कार फिरि, बरनत चित्रप्रवेश ॥ ५९१ ॥

गत शब्दालङ्कारमें, छेकादिक अनुप्रास ।

पर प्राचीन नवीन मत, या विधि कियो प्रकास ॥ ५९२ ॥

आवृत्ति जहँ अक्षरनकी, आदि अन्त सह मेल ।

अनुप्रास द्वै विधि रचे, छेकावृत्ता फेळ ॥ ५९३ ॥

॥ अथ छेकावृत्ति अनुप्रासवर्णन-दोहा ॥

बार अनेकन कीजिये, आवृत्ति द्वै द्वै बर्न ।

गुनि छेकानुप्रास तहँ, आदि अन्त यकठर्न ॥ ५९४ ॥

॥ आदि वर्ण आवृत्तिछेकानुप्रासवर्णन ॥ यथा कवित्त ॥

चौर चारु भूधर भरत क्षितिपाल छत्र शत्रुहन सासुहें

शरासन सुवेलेको । सुमन सुकण्ठ इन्मान हाथ मनिमञ्जु
 व्यजन विभीषन विलास वगरेलेको ॥ रङ्गराज मैथिली महीप
 रामचन्द्र राजे शासन सुमन्त लछिराम लहरेलेको । परम
 प्रकाशन विलासन बलित सज्यो शुभग सिंहासन अवध
 अलषेलेको ॥ ५९५ ॥

॥ वरवे ॥

मणि मुकताहल वरसत धारिद वेस्र ।

शुभग सिंहासन सिय सँग रामनेरेश ॥ ५९६ ॥

॥ अन्तवर्णावृत्ति छेकानुमासवर्णन-यथाकवित्त ॥

बदन सदन गुनगन परमाने ज्ञाने सरसनि हैसनि सैवारो
 अवतारो में । लछिराम धूम धाम लोचन सकोचन सुभौहनके
 सोहिन धनुष रुख टारो में ॥ मैथिली अमन्द रामचन्द्र यो
 सिंहासन विलासन बगर औधनगर निहारो में । सौज श्रीमनोज
 कर भूपर अमङ्गलीक मङ्गलीक मोजपर जलधर
 वारो में ॥ ५९७ ॥

॥ अथ वृत्त्यानुमासवर्णन-दोहा ॥

कहुँ सरि वरन अनेककी, कतहुँ अनेकन धार ।

कहुँ आवृत्ति एकईकी, वरने दोष प्रकार ॥ ५९८ ॥

॥ अथ वृत्त्यानुमास आवृत्ति अनेककी अनेकवार आवृत्ति ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पारस पुरन्दर परमहंस परवीन, धरम घुरन्धर घनी त्यो
 धीर कल में । लछिराम ललित लहेजे लाज लाहनमें, धिरव
 विशाल वगरेले धौदबलमें ॥ अवध अमर अमरावती अमन्द
 मोज, कामदकला हे कमनीय करतलमें । मगलीक

मैथिलीलों मोहिनी न मण्डलमें राव रामचन्द्रसों न राजा
रसातलमें ॥ ५९९ ॥

॥ अथ आदिवर्ण एककी अनेकबार आवृत्ति-यथा सवैया ॥
मानस मानमहेश मराल मिल्यो महावीर मनोरथ राजहै ।
मंगल मूरति मैथिली राम महातम मौलि मुनीन समाजहै ॥
मोहनमंत्र-मई मुसकानि मनोहर माधुरी मौज सलाज है ।
मोद मढ्यो मणि मन्दिर मौलि महीपति मण्डलको महाराज है

॥ अथ अन्तवर्ण अनेककी अनेकबार आवृत्ति यथा कवित्त ॥

खेले खर दूषन सिकार बगरेले जंग, झेले कुम्भकरन
कुलेले अनरथके । लछिराम लेकर कमान अगररेले छेले मान
मेघनाद महिरावन समथके ॥ मेले बान रावन सुहेलेके भुजन
फेले, रेले रंग रुधिर प्रकाश लङ्कपथके । कौनको पछेले तैं
न समर झमेले बीच, बाँकुरे बघेले अलबेले दशरथके ॥ ६०१ ॥

॥ अथ वृत्तिभेदवर्णन-दोहा ॥

अक्षर माधूरज मिले, उपनागरिका साज ।

परुषा ओज प्रसादस्यो, सरल कोमलाराज ॥ ६०२ ॥

॥ अथ उपनागरिका-यथा कवित्त ॥

भानुवंश भूषनके भारी भुजदण्डनैपे औरै आव छावै
जमा जौहर जँजीरकी । चाखै चरबीनको चमकि चपलासी
राखै चाह अलबेली गजराजनके भीरकी ॥ कवि लछिराम
ज्वालमालासी ज्वलित वार काने पार जाति गद्दी गजब गँभीर
की । रुधिर तरंग छोही म्यानते विछोही जोही रणरंग
जालिम सरोही रघुबीरकी ॥ ६०३ ॥

॥ पुनः ॥

कौशलकुमारके सिकारमें अजब धूम, वारवार फलत
 अतङ्क भटभीर को । लछिराम सैजिबै सहमि घन वन बीच,
 मन्दर दरीन दुर्गै परिहरि घोर को ॥ अरना वराह बाघ चीते
 अधफारे परे, हरिन हजारे भरे गरद गैभीरको । मेजा भाल
 रेजालों गिरत गज भूमै जब चलत मजेजदार नेजा
 रघुवीर को ॥ ६०४ ॥

॥ पुन ॥

बाजि अलबेले राम रघुवंश भूपनके, कहर कुलेलेमें समीरे
 अभिरत हैं । लछिराम जौहरी इसारे के असर पर बेस बिजुरी
 लों दल बादरे तिरत हैं ॥ शिखर मरोर लफ कोर कलंगीकी
 तैसी मण्डलित मोरमें कबूतरे धिरत है । फरकाले फेन मुख
 मण्डित मजेजदार छेला घने घागन सुरेलासे फिरत हैं ॥ ६०५ ॥

॥ पुन ॥

लखन सुदादिने भरत घाम भागसोहैं शत्रुहन सामुहें सिगार
 गुनगय के । कवि लछिराम राम श्याम घन रङ्गपर वारों-
 भोज आगर अनङ्ग समरथ के ॥ बोलत नकीव नौल विरद
 झमेले दलबेले घालरघिलों प्रकाश राजपथके । सङ्ग लह-
 रैले रघुवशिनके मेले सौझ विहरत औध अलबेले
 दशरथ के ॥ ६०६ ॥

॥ पुन ॥

फतरे करेजेके हरीनके कहर वचें विवरन मन्दर वराह घस
 दवके । लछिराम रग में कुरगन कतलवाज बीजुरीलों धेधक

अदान में गरब के ॥ करत कुतूहलै किरातिनै कलान हेरि
 वारैं कामकैवर सिकार में सजब के । राव रामचन्द्रके लह-
 खारे बानन ते गज मतवारे गिरैं मारे से गजब के ॥ ६०७ ॥

॥ पुनः ॥

करत कुरंगन की चौकड़ी चपल मन्द रंगदार वाजी वीर
 कौशल कुँवर को । लछिराम संग त्यो वकैती बरछैतनकी,
 आनंदअपार में सिकार भराभरको ॥ अरना बराह बाघ
 फारे अधफारे परे, फरकै महेश हेरि लोहूकी लहर को ।
 कतारै करेजा आँतरीनके लरेजा फोरि मनमथनेजालों बरेजा
 रघुवर को ॥ ६०८ ॥

॥ पुनः ॥

सहज सिकारमें सवार होत वाजीपर, सङ्गमें लखन रघुवं-
 शिन झमेला के । वारैं भीर भामिनी हरान गज गौहरके
 कन्द मूल फूल फल दल वागमेला को ॥ लछिराम गैडा मृग
 रायमृग मारेपर, विहँसै किरात गाय गुन लहरेला को । हह-
 लत भूतन अचल रजरेला जब चौनला चलत रामचन्द्र
 अलबेला को ॥ ६०९ ॥

॥ पुनः ॥

वारन बराह बाघ चीते चकचौंधे गिरैं अधफारे गैडनपै
 झमक झमेले की । कवि लछिराम धूम धामकी धमक धरा,
 अजब अतङ्क भारी भटनके मेले की ॥ घन बन मन्दर शि-
 खर चकचूर होत, धूरि तैं अंधेरी औरैं वासरके बेले की ।

धीधिन बगर फुफकारसी फनाली जब दगत धुनाली रामचन्द्र
अलबेले की ॥ ६१० ॥

॥ अथ परुषावृत्ति वर्णन-यथा कवित्त ॥

घनकत घण्टा घोर ठकिले मतंग मारू घौसे की घमकसों
घरातल त्यों घस कैं । गब्बर गनीमनके गढेस पारवसे क
ठिन करेजे घटपारनके कस कैं ॥ पट्टन असुर घीर बन
विछलाने डरें गजबके मारे गिरें कन्दराहू घस कैं । राव
रामचन्द्र चतुरङ्गिनी चमूके चले डमाडोल मन्दर घराह
डाढ़ मसकैं ॥ ६११ ॥

॥ पुनः ॥

घौसे की घमक मारू ठकिले मतंग तैं, कडाकड कमठ
कठोर पीठ फूटे ना । लछिराम घसक मसक यों भयकर
में अंग ते वृषभ की छय लों छिति छूटेना ॥ हल चल होइमें
सहसफन घूर ह्वेके, धवराय आपने हलाहलहि घूटे ना । राव
रामचन्द्र राधरेके दलभार कहू टकराय दिग्गज घराह-रव
दूटे ना ॥ ६१२ ॥

॥ पुनः ॥

चद्धत उमाह रामचन्द्रके शिकार धीध कुद्ध वे तुरङ्ग
जऊ वागें वरजत हैं । लछिराम रोदेपे कमानके चद्धत धान
घन बन मन्दर अतङ्क तरजत हैं ॥ मृगनपे घृग सुगराजनपे
मृगराज सूकरपे सूकर छतीले छरजत हैं । अघफटे गेंडनपे
अघफटे गजराज गरव लपेटे आँतफटे रजरत हैं ॥ ६१३ ॥

॥ पुनः ॥

करत कलोल क्रुद्ध कोटिन करौल सङ्ग बोलत नकीव
वानी विरद गँभीर की । उत ते लखन रिपुसूदन भरत वीर
खोपरी विदारैं मृगराजनके भीर की ॥ छलवली चपल तु-
रङ्ग लछिराम तैसो, लहरैं विगारैं मृगमण्डलके धीर की ।
कुण्डलित कोरैं लहरेठी रङ्गदार फिरैं, फेंटी आँतवारन
बरेठी रघुवीर की ॥ ६१४ ॥

॥ पुनः ॥

मण्डलित छत्र नीचे कुण्डलित मोरवारी अजब अटेरन
सिंगार भट भीर के । मृग मृगराज पै परत परबाज सम
बड़पन राखैं रोष सागर गँभीर के ॥ लक्कासे लगामते
छलकि लछिराम हरैं मन्दर शिखर मौजैं सुमन समीर के ।
ललकैं छटासे पटे बाजके पटासे फिरैं, नटके बटासे बाजि
राम रघुवीर के ॥ ६१५ ॥

॥ अमृतध्वनि ॥

सेना जब चतुरङ्गिनी महाराज रघुवीर ।
असुरसमर हित सजतवर सँगरत धनु धर वीर ॥
सँगरत धनुधर वीर विरद गम्भीरध्वलकत ।
गरजगजनि गँभीरज्जलधि जजीरच्छलकत ॥
दुदृत विपिन सुकुदृत अरिगढ़ जुदृत जेना ।
फुदृत गिरिवर छुदृत खलमद लुदृत सेना ॥ ६१६ ॥

॥ पुन ॥

सजत चारु चतुरङ्गिनी रामचन्द्र भूपाल ।
 खल भल फैलत असुरपुर छुटतगढ़ विकराल ॥
 छुटतगढ़ विकरालदश दिगपालहलकत ।
 फुटत खलदल भालगज मतवालछलकत ॥
 सगस्तुवन समीर लखन गम्भीरगञ्जत ।
 वञ्जत नवल निसानस्तुभट कृपानस्तञ्जत ॥ ६१७ ॥

॥ अथ कोमलावृत्तिवर्णन । यथा क्वचित् ॥

देव दशरथ रामचन्द्रकी छठीके दिन, कविनपे कनि
 मौज हलके हजारे से । लछिराम लालित रतन हीर होदे झूल
 भरके भञ्जुण्डरद मौलि विकरारेसे ॥ मननात भौर झन-
 कारे लोह लङ्गरके वरन गणेश भालवन्दन सँवारेसे । गर
 गजरारे वे गयन्द गजरप धारे, गुञ्जरत गैल विन्ध्य परवत
 वारेसे ॥ ६१८ ॥

॥ पुनः ॥

तन मन वारि त्रिमुवनको सिंगार मानि, लोचन मळिन्द
 मैथिलीके हेरि फरेके । शारद सुरेश अलकेझ अमरेझ भाल,
 भूपन तिलक जा परागसे निभरके ॥ लछिराम राव रामचन्द्र
 के चरन चारु, मङ्गलीक मौजमान आनंद समर के । सौरभ
 तरङ्ग सङ्ग जुगल जसाले राजे, रङ्गदार धारिज महान
 मानसर के ॥ ६१९ ॥

॥ पुनः ॥

सातौ सिन्धु सातों पुरी सातों रसातल स्वर्ग, सातों सुनि
सातों द्वीप सातों स्वर गाजे हैं । लछिराम दीनबन्धु अधम उ-
धारन त्यों, साँकरे उबारनके विरद विराजे हैं ॥ बङ्गा गढ़ लंका
बलि रावन गरब गारि, आरत सुकण्ठ विभीषन से निवाजे
हैं । राव रामचन्द्र अवतारके अतङ्कहीमें, चान्पों युग डंका
रघुवंशहीके बाजे हैं ॥ ६२० ॥

॥ पुनः ॥

मिलित महावर महीन मेंहदीके बुन्द बेषित नखनपर
जोतिनभलीके हैं । कवि लछिराम आँगुरीन पै अजब ओज,
सङ्ग सौज मौजमान चम्पक कलीके हैं। भानुवंश भूषण महीप
रामचन्द्र चख' सीरे होत हेरि मनमोहन थलीके हैं ।
पल्लव बधूक कोकनद मद गारे ठारे, जुगल जसीले पद
जनकललीके हैं ६२१

॥ पुनः ॥

सङ्ग शुभ तरल तरङ्ग गङ्ग रङ्ग पीवें, सन्त सुर सुजस
सुधाके सरवत सो । लछिराम जालिम जसीले भुजदण्ड हेरि,
असुर बिलात घनवन डरपत सो ॥ वारों अमरेश शवरे पै
राव रामचन्द्र, समता सँवारों कौन मैन तरपत सो ॥ मालाकार
मन्दर महान देव मण्डलमें, मङ्गलीक मौलि तू सुमेरु
परवत सो ॥ ६२२ ॥

॥ पुनः ॥

दशरथ देव देवि कौशिला मुकेकई त्यों सुमुखि सुमित्रा
 शारदाके समतानकी । लछिराम जामवन्त अङ्गद मुखेन
 आदि लङ्केश्वर सूरजसों विनय विधानकी ॥ चाहीं करछोई
 गाय जस अवतश औष अरमान मनमें अभय वरदान की ।
 श्रीगुरु सुमन्त त्यों भरत शत्रुहन मौलि, रामचन्द्र मेथिली
 लखन इतुमान की ॥ ६२३ ॥

॥ पुनः ॥

मुनि मख राखि रूप गौतमी सैवारि तोरे, शम्भुधनु व्याही
 सिय सूरज अखारों में । बालि खर दूपन विधंस हेत रावणके,
 रामेश्वर थापि सेत सागर प्रचारों में ॥ लछिराम तैहीं महा-
 राज रामचन्द्र धीर, त्रिसुवन मौलि छत्रपाल अवतारों में ।
 दानी देव मन्दर पुरन्दर महीको ऐसो, धरम धुरन्वर न दूसरो
 निहारों में ॥ ६२४ ॥

॥ पुनः ॥

सम्बत समुनि वेद अक विष्टु माघौ मास, सित गुरु श्रा
 वशी में पुरन प्रभासी को । वन्दीजन वंश राजहंस मानसिंह
 द्वार, विरद गवैया मन सब सविलासी को ॥ राजा राव राने मर
 दाने सममाने और, धरित अपार ब्रह्म पावन प्रकासी को ।
 रामचन्द्र भूपन अवध अभिराम रण्यो, लछिराम राव राम-
 चन्द्र जसराशी को ॥ ६२५ ॥

॥ दोहा ॥

सतकवि सन्त गुनीनसों, विनय करत लछिराम ।
 बिगरो बरन सुधारि हैं, चरित समुझि सियराम ॥ ६२६ ॥
 रामचन्द्र भूषण पढ़ें, जो सप्रेम करि गौर ।
 अलङ्कार समुझें द्रवें, रामचन्द्र शिरमौर ॥ ६२७ ॥
 सुकवि रीझि हैं करि कृपा, तो कविता लछिराम ।
 नतरु व्याजसों में रथ्यो, श्री सियवर को नाम ॥ ६२८ ॥

इति श्रीरामचन्द्रभूषण काव्ये लछिरामकविविरचिते
 अर्थ शब्दालङ्कार व्याख्या सम्पूर्णम् शुभम् ।



क्रय्यपुस्तकें—(भाषा-काव्य)

रामरसायन रामायन-रसिकविहारीकृत	...	४-०
रसिकमिया सटीक		१-४
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास मणीत	..	२-०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध (भिसारीवासकृत) मनहरण छन्दोमें		
कठिम (अर्द्धकार) वर्णम		१-४
नगदिनोद [पद्याकरकृत नायकाभेद]		०-६
रसराज [मतिरामकृत नायकाभेद]		०-६
कस्मिन्पीपरिणय-महाराज श्रीरघुरामसिंहगु देव मणीत		१-८
वृत्तिशास्त्रविद्यास-मिसमें सभ देशांतरकी यात्रा और वंदिके मुलको		
पुढ़ने मंडन और बीने खंडन किया है दोहा कवित्तोमें		
(सुमावित)		०-१२
रसतरंग ज्ञानमकिमार्गी अमबरैगीछे पद्य कृष्णगढ़ महाराजमणीत	०-८
भाषणशास्त्रिका कविपूदमीकृत	०-२
बुद्धिमधेश पहलामाग (छीकिककामोमें सिद्धा)	..	०-४
बुद्धिमधेश दूसरामाग	..	०-४
साम्प्रतसमयानुसार मानवीकर्त्तव्यकर्मवर्ध		०-३
पावसमंगरी		-१
मौक्षपचीसी (इककमहार)	...	०-१
मेमांकुरभीकृष्णगायन	..	०-८
साधारणगोबानधिधि	..	०-१
रामछीछा सर्वसमह (रामछीछा करनेवाछोको परमोपयोगी)	..	०-८
श्रीपुरुष रागमनोहर (श्रीपुरुषके गाने योग्य भजन)	..	०-४
रसवाटिका—(अर्द्धकारवर्णन)	..	०-१२

संपूर्ण पुस्तकेंका " यडासूचीपद्य " मळग हे देगाछीमिये
 खेमराज श्रीकृष्णदास,
 " श्रीवेङ्कटेश्वर " (स्ट्रीट) पन्नाबज सेतवाडी-मुम्बई

